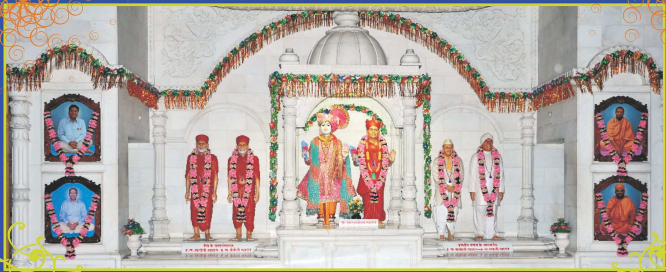

वर्ष 32 अंक : 3 22.5.2009 शुक्रवार (मई –जून) शुल्क– प्रति अंक : 20.00, वार्षिक : 100.00

भगवत् कृपा

साकार प्रगट ब्रह्म को जो पहचाने, वो परम को पाये

प.पू. गुरुजी का प्राकट्योत्सव यानि –'योगी परिवार' का स्नेहमिलन!

निजात्मानं अक्षररुपं देहत्रयविलक्षणम् । विभाव्य तेन कर्तव्या भक्तिः कृष्णस्य सर्वदा ॥ शिक्षापत्री,११६

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली द्विमासिक सत्संग पत्रिका

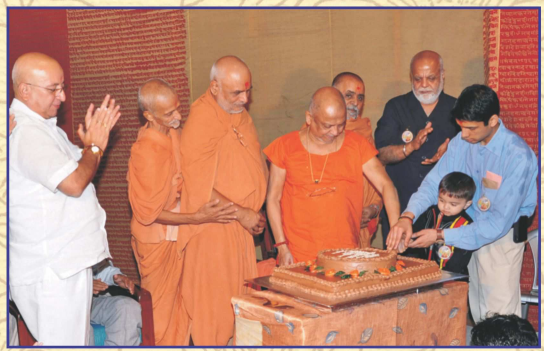

स्वामिनारायण
स्वर्णस्वर भाग -5

उत्सवों की परंपरा लाई प्रार्थना के अवसर!

जीव को किसी भी प्रकार अधोमार्ग के सम्मुख करना ही मन-इंद्रियों एवं अतःकरण का सहज स्वभाव है। हम सभी विचार करें कि यदि पाँच-दस मिनिट भी खाली बैठे होंगे, तो सॅकन्ड्स से पहले अमेरिका तक पहुँच जाएँगे या तो उलझन, बेचैनी, उद्वेग और अभाव-अवगुण के विचार हम पर हावी हो जाएँगे। भगवान स्वामिनारायण जीव की ऐसी दशा से भलीभाँति परिचित थे। सो, उन्होंने उत्सवों की एक परंपरा लगातार रख दी; ताकि मन प्रत्यक्ष स्वरूप की मूर्ति-स्मृति में ही निरंतर चिपका रहे। उसे विषय के गटर का स्वाद पाने का समय – मौका ही न मिले। स्वामिनारायण संप्रदाय से-गुणातीत समाज से जुड़े प्रत्येक मुक्त के लिए वर्ष का कोई भी माह ऐसा नहीं होगा जिसमें कोई त्यौहार न हो या किसी विभूति का प्रागट्य दिन या प्रार्थना करने का कोई अवसर न हो।

और... उत्सवों की ऐसी श्रृखंला में अब **21 मई – गुरुहरि योगीजी महाराज की प्राकट्य तिथि** के साथ **प.पू. गुरुजी का भागवती दीक्षा दिन, 28 मई – ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी महाराज का स्वधामगमन दिन, 1 जून – ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी महाराज का दृष्टा दिन, 12 जून – ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज का प्राकट्य दिन** और **7 जुलाई** को **गुरुपूर्णिमा** का पवित्र पर्व नज़दीक आ रहा है। यूँ, 'प्रगट प्रभु' से जुड़े हुए मुक्तों की प्रत्येक क्षण प्रभुधारक संतों की स्मृतियों से भरसक ही होती है।

और... प्रार्थना के अवसरों पर ऐसी विभूतियों के जीवन के प्रसंग ही हमारी अनमोल पूँजी है, जो आध्यात्मिक मार्ग पर अग्रसर होने के लिए हमें पल-पल प्रेरणा देते हैं; जैसे कि **गुरुहरि योगीजी महाराज** कहते –

'शास्त्रीजी महाराज मुझे 'जोगी'... कह कर आवाज देते, इतना सुनते ही मैं कैफ़ में आ जाता... लिखता होता तो पेन छोड़ देता और भोजन कर रहा होता, तो ग्रास छोड़ देता...'

अपने इस दृष्टांत से गुरुहरि योगीजी महाराज ने **'गुरु' के माहात्म्य का और उनको राजी कर लेने उनका वचन झेल लेने की तत्परता** का मानो पूरा निचोड़ बता दिया।

इसी प्रकार – प.पू. साहेब व युवकों ने विद्यानगर में बन रहे 'छात्रालय' का नाम रखने हेतु, एक बार गुरुहरि योगीजी महाराज को 'ज्ञानयज्ञ छात्रालय' नाम रखने का प्रस्ताव रखा। तुरंत ही गुरुहरि योगीजी महाराज ने कहा –

'शास्त्रीजी महाराज ने अक्षरपुरुषोत्तम की उपासना के लिए बिगुल बजाया था। सो, हमें उनकी सर्वोपरि सेवा करने उसी रास्ते पर चल कर 'श्री अक्षरपुरुषोत्तम छात्रालय' नाम रखना है।'

यूँ, **बापा हमेशा अपने नाम या मूर्ति को तवज्जो देने का चाव नहीं रखते, बल्कि मूल विभूतियों को ही आगे रखते-रखवाते।**

और... हम सभी ने देखा है कि इसी शैली का अनुसरण करते हुए ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज व पप्पाजी महाराज भी हर कार्य के पीछे गुरुहरि शास्त्रीजी महाराज-योगीजी महाराज और उनके नाम का ही यशोगान करते... करोड़ों धन्यवाद! प.पू. काकाजी – प.पू. पप्पाजी के अजोड़ **'स्वामीसेवकभाव'** को।

प.पू. काकाजी का पृथ्वी पर अवतरण ही मानो 'स्वरूपनिष्ठा' और 'निर्दोषबुद्धि' के गुणातीत ज्ञान को फैलाने के लिए था और... वह ज्ञान उन्होंने खुद

के जीवन से हमारे समक्ष आदर्श रूप रखा। वे **कहते –** *'योगीबापा को हम जैसा कहें वैसा वे करते रहेंगे, उसकी बजाय वे जो कहें वैसा हम करेंगे, तो हम भगवान के मार्ग पर प्रगति करेंगे और जीव ब्रह्मरूप होगा।'*

अपने वर्तन से उन्होंने यह बात समझाई और 'गुरु' के युगकार्य के लिए 'गुणातीत समाज' के सर्जन में याहोम हुए। गुरुहरि योगीजी महाराज से अतिशय प्रीति के वश संबंध वाले मुक्तों के प्रति निर्दोषबुद्धि युक्त वर्तन रखा। संबंध वालों के दोष, स्वभाव, प्रकृति देखे बिना, बस योगीजी महाराज के स्वरूप की पहचान करा देने के लिए, केवल निरपेक्ष स्नेह बरसाया। **उनका हृदय समुद्रसमान था, जिसमें सभी का सब कुछ, चाहे कैसा भी हो, वह समा जाता।** तभी तो हम सब आज उनके संबंध और भजन से उजले हैं।

सच, महाराज व गुणातीत स्वरूपों ने खूब कृपा करके हमें अद्भुत दिव्य समाज में रख दिया है। अब तो सब मुक्तों के गुण गाते रह कर ब्रह्मानंद करते हुए 'भजन' करना है। चारों ओर सानुकूल माहौल है। तो, किसी के दोष, स्वभाव, प्रकृति देखे बिना या अभाव-अवगुण, पक्षपात में पड़े बिना केवल संबंध वाली दृष्टि पाने प्रार्थना करें, क्योंकि गुरुजयंती – गुरुपूर्णिमा यानि – 'संकल्प' करने का दिन!

हमसे और कुछ न भी हो पाए, परंतु श्रीजी महाराज, मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी, अ.म.मु. भगतजी महाराज, अ.म.मु. जागास्वामी, अ.म.मु. अदाश्री, गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज, गुरुहरि योगीजी महाराज, ब्रह्मस्वरूप काकाजी, ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी, प.पू. स्वामिजी, प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी, प.पू. साहेबजी, प.पू. गुरुजी, प.पू. दिनकरभाई, प.पू. भरतभाई, प.पू. वशीभाई जैसी विभूतियों के समक्ष मन-बुद्धि को टोटल तिलांजली देकर *'उनके पास मैं कुछ नहीं'* यानि – 'ज़ीरो' बन कर रहने की भावना रखें। दृढ़ स्वरूपनिष्ठा व स्वरूपलक्षी सुहृद्भाव रख कर गुरुवचन से जीवन जीने कृतनिश्चयी बनें। 'साधुता' पाने की ओर एकमात्र हमारी निगाह हो। और... गुणातीत परंपरा के इन वारिसदारों के जीवन से, गुरुभक्ति अदा करने के प्रेरक प्रसंगों को पकड़ कर जीने की पूरे वर्ष कोशिश करते रहें, वही हमने सच्ची **'गुरुपूर्णिमा'** मनाई कही जाएगी।

वर्षों पहले प.पू. गुरुजी, प.पू. काकाजी की ओर 'भगवान' की दृष्टि व अपनी ओर 'साधु' की दृष्टि रखते हुए जब 'श्री अक्षरपुरुषोत्तम सत्संग पत्रिका' लिखते थे, तब के **12 जून** और **गुरुपूर्णिमा** निमित्त हुई कथावार्ता से संपादित निम्न लेखों का मनन करें। इन लेखों को पढ़ने से सहज ही ख्याल आएगा कि प.पू. गुरुजी ने गुणातीत पुरुषों के अभिप्राय, सिद्धांतों को कितनी गहराई से पकड़ा होगा। **और तभी तो... 'काकाजी' को-उनकी जीवनशैली को प.पू. गुरुजी एक भी पल भूलते नहीं...** सो, उनके द्वारा समझाई महिमा-रहस्यों को लेकर, प्रगट स्वरूप के बल से यदि इस रास्ते चलने लग पड़ेंगे, तो वे हमें जरूर उपायभूत होंगे। आइए, साधना मार्ग में आते अवरोधों को जानें व उनमें से आसानी से निकल जाने के उपायों पर अमल करें...

प.पू. स्वामीबापा कहते –

किसी का अभाव न ले, वह ***'एकांतिक'*** *और संबंध वालों का यदि हमें अभाव आया हो, तो वह निकाल दे – वह* ***'परम एकांतिक'।***

ऐसे परम एकांतिक पुरुष को पहचानने के निम्न छः लक्षण हैं –

1. वचनामृत सारंगपुर 7, मध्य 51 और अंत्य. 11 के मुताबिक उनके सान्निध्य में **'नैमिषारण्य क्षेत्र'** का सहज ही अनुभव होगा।
2. उनके पास केवल महिमा की-दिव्यभाव की अखंड ज्ञानगोष्ठि होती होगी।
3. उनके पल-पल के प्रसंगों में उनकी स्थिरता, समता, सरलता, विनम्रता और निरपेक्षता जैसे दिव्य गुणों का दर्शन होगा।
4. किसी भी प्रकार की पात्रता की अपेक्षा रखे बिना– ***'मेरी बात सुने वो पात्र'*** – ऐसी गुरु गुणातीत की रीति और नीति के मुताबिक, चाहे कैसे भी जीव को ग्रहण करके उसकी कक्षा पर आकर, आध्यात्मिक विकासक्रम में उसकी वे निरंतर प्रगति करवाते जाएं।
5. अपने से जुड़े मुक्तों का अंतर पकड़ कर, उसे उसके दोषों, त्रुटियों, क्षतियों का दर्शन करवा कर, उसे अपनी दिव्य चेतना में खींच कर–प्रवेश करवा कर, उसकी क्षतियों, दोषों, त्रुटियों को भी न देखते हुए, उसके लिए खुद प्रायश्चित करे और अत्यंत धीरज रख कर, जब तक वह 'स्थिति' पर न पहुँचे, तब तक बल दिया ही करे और अंत में जीव को ब्रह्मरुप करके परब्रह्म में जोड़ दे।

   और

6. महाराज ही उनका एकमात्र जीवन हो... महाराज में अखंड रह कर, एक महाराज को ही रखवाने का उनका स्वधर्म और पुरुषार्थ हो... अल्प संबंध वालों में खो जाना और दासभाव से सभी में ओतप्रोत होकर प्रेम से अपने में बुन लेना और... आत्यंतिक कल्याण करना ही उनकी जीवन प्रणालिका हो... 'सर्वत्र दिव्य एकता' ही उनका जीवनमंत्र हो।

ऐसी विरल विभूतियों को पहचानना बहुत ही कठिन है। लेकिन, इसके लिए ही सत्यशोधक की यदि सच में प्यास होगी, तो उसे प.पू. काकाजी और प.पू. पप्पाजी में इन लक्षणों का दर्शन होगा और उस तत्त्व का जरूर अनुभव होगा।

धर्मकुल के ऐसे वारिसदार और हमारे **गुणातीत समाज के बेताज बादशाह प.पू. काकाजी का प्राकट्य दिन आ रहा है...** उनके ही शब्दों में – ***'ब्राह्मीशक्ति खुल्ली रखी है।'***
तो, उनके दिव्य नियमों का अनुसरण करते हुए जीवन जीकर सभी सुखी हों...

– जून, 1973

स्वामिनारायण संप्रदाय गुरुमुखी संप्रदाय है। अनादि काल से ही शास्त्रों में गुरुमहिमा प्रतिपादित की गई है। सो, **गुरुपूर्णिमा** कोई नई ही प्रेरणा दे जाती है। गुरुपूर्णिमा के दिन सभी भक्त गुरुभक्ति अदा करने का प्रयत्न और संकल्प करते हैं। इस गुरुपूर्णिमा पर आध्यात्मिक सुहृद्‌भाव दृढ़ करने के लिए सभी को गुरुचरणों में संकल्प करना चाहिए।

'सुहृद्‌भाव' – यह तो गुरु गुणातीत का अनुपम गुण है। 40 वर्ष से गुरुहरि योगीजी महाराज ने सुहृद्‌भाव और निर्दोषबुद्धि की ही बातें अखंड करी हैं। ज्ञान के विकास के साथ-साथ दादाखाचर ने जैसे धन, धाम, कुटुंब–परिवार का समर्पण करके भगवान और भगवान के भक्तों में ओत-प्रोत होने का प्रयत्न किया, उसी प्रकार आज भी हज़ारों हरिभक्त भगवान और भगवान के भक्त के लिए जीवन जीने वाले हो गए हैं और... जितनी कहो उतनी भगवान व भगवान के भक्तों की सेवा करने को भी तत्पर हुए हैं; परंतु... **आध्यात्मिक**

सुहृद्भाव न होने के कारण भीतर में सुख, शांति और आनंद नहीं टिकता एवं बुरे प्रारब्ध नहीं पिघलते।

आध्यात्मिक सुहृद्भाव यानि– आंतरिक रूप से आपस में ओत-प्रोत होना, एक-दूजे के दर्शन से आनंदित होना–'स्व' की अस्मिता का निरंतर अभाव रहना।

❋ सात्त्विक अहं के पोषण के कारण आपसी क्रियाएँ चुभें

या

❋ 'स्व' के पोषण के कारण अनजाने में भावना में फर्क पड़ जाएं

या

❋ अज्ञान अवस्था के कारण अति बड़े पुरुषों की नापातोली में पड़ जाएं

या

❋ 'मैं' ही सही और 'दूसरा' गलत–ऐसी भावना दृढ़ होती जाएं

या

❋ निजी समझ के आनंद में ही झूलते रहने के कारण संबंध वाले अन्य सभी मुक्तों के प्रति दासत्वभाव न प्रकटे

या

❋ खुद को जँचते मुक्तों की सेवा करने में जो आनंद आए, ऐसा अन्य मुक्तों की सेवा में न रहे

या

❋ अपनी अच्छाई दिखाने या संभाले रखने के कारण पक्षापक्षी की बात में आ जाएं या बोला करें

या

❋ हमारे स्थान-आश्रम-केन्द्र अथवा घर में आपसी सुसंवादिता और मेलमिलाप युक्त माहौल न हो

या

❋ 'मैं सहन करता रहता हूँ'–इस बात का भीतर में ख्याल बना रहता हो।

ये सभी बातें किसी न किसी प्रकार से आध्यात्मिक सुहृद्भाव में त्रुटियाँ ही हैं।

दादाखाचर, निष्कुळानंदस्वामी, मुक्तानंदस्वामी, व्यापकानंदस्वामी, प्रेमानंदस्वामी इत्यादि समर्पण और भक्ति से युक्त जबरदस्त मुक्त थे। उनके जीवन को निहारते हुए इतना तो जरुर कह सकेंगे कि **सुहृद्भाव की दृढ़ता के बिना सुख, शांति और सच्चा आनंद नहीं मिलता और मूल प्रकृति का परिवर्तन नहीं होता।**

तो अब, ज्ञान के विकासक्रम के साथ-साथ हम भी 'आध्यात्मिक सुहृद्भाव' की दृढ़ता करने के लिए यदि संकल्प नहीं करेंगे, तो परम एकांतिक पुरुषों की प्रसन्नता नहीं मिलेगी और आख़िरी जन्म नहीं होगा–यह भी एक हक़ीक़त है।

सो, गुरुपूर्णिमा के इस उत्सव पर गुरुचरणों में रह कर आध्यात्मिक सुहृद्भाव दृढ़ करने की सुरुचि सभी रखें और आशीर्वाद प्राप्त करें।

– जुलाई, 1972

✡✡✡

The Swaminarayan Path and the Gunatit Guru

God has made each one of us unique. Every Sadhak in this world who has decided to follow the path of spiritual upliftment does so in his or her own unique way employing the very same uniqueness that the Lord has seen fit to grant him with. In fact, it is only when a sadhak recognises his own strengths and then utilises them in the pursuit of God that he is successful in his efforts.

It is then logical that each Sadhak has to be guided differently and according to his own makeup. The **Gunatit Guru** understands this and thats why his equation with different seekers is different. It does not mean one is higher or lower than anyone else. It is simply a different approach.

Taking this further, we know that just as there are many different Sadhaks, there are many different types of Gunatit Gurus. **P.P. Kakaji** has explained this in great detail in his book **'The Real Essence of Tantra'**. He says that while there are many Gurus and many paths to God Realization, Samadhi, Krishna Consciousness etc, the Path of **SWAMINARAYAN** is unique.

All the paths and Sadhanas mentioned in the sciptures of the various different cultures of this world are valid and if properly understood will lead one to final attainment. There is however one common thread running through all of these methods and that is that the Sadhak has to be a worthy Sadhak. He should have the strength and discipline to follow the methods outlined by the Guru and in fact the Guru encourages and emphasises self effort as the most critical aspect of Sadhana.

This is fine for a Sadhak who is truly ready but on the other hand is impractical for the vast majority of people. In today's age and the massive attack of outside influences on a Sadhak's life, it becomes almost impossible to follow and maintain the strict mental and physical displines required for progress. Patanjali's yoga sutras are as valid today as they were thousands of years ago. What is missing is the abundance of people who are capable and willing to follow them. It is with this in mind that Swaminarayan Bhagwan established the hierarchy of Gunatit Gurus.

A Gunatit Guru who is so completely dissloved in the Lord that not an iota of self existence remains. He stands beyond all methods and all Sadhanas. The laws of Karma no longer apply to him. Most importantly, He alone becomes the journey and the destination for the Sadhak thereby making the task easy for Sadhaks of all levels from all backgrounds. The self effort which is so highly emphasized in all the other paths, in this case, becomes limited only to following the instructions of the master. Progress in the spiritual path follows simply as a stream of grace from the Master. It is a beautiful and easy concept once understood properly. P.P. Kakaji in his book has termed this as Swaroop Yog and Swaroop Ashtanga.

He has explained it all in one line —

'For the masses of mankind, the simplest and safest path of spiritual progress lies in the acceptance of the real Gunatit Guru as the Lord who has manifested Himself in human form. It must also be realized that it is the will of the Lord which works in the universe.'
This is what the path of Bhakti and Surrender has been simplified to. So simple in fact that one of the key problems for the Gunatit Guru now lies in convincing the followers that such a simple method is truly perfect!

It is futile to go into the qualities of a real master at this time. It is my firm belief that we are unable and incapable of judging a real Master and so best to skip the exercise entirely. Let it be the onus of the Master to convince us of his Realization. This is not a matter of ego but simply a statement of fact. The real measure of a Gunatit Guru finally lies in the attainment of the disciple only. Nothing else.

In this modern world, specially among the younger people, it is taboo to accept anything without questioning. This is not a bad but a very good thing as once a Gunatit Guru has cleared his doubts, he will embark on the path with far greater zeal than one who is simply following blindly.

Once a Sadhak has accepted a Gunatit Guru as his Master, he should have the courage to surrender to him completely and trust in him fully. Slowly he will begin to see all of the Master's actions as truly divine and his own progress will be reflected in the delight of the Master.

A small note here about the much mentioned Kundalini Shakti inherent in the human being. All spiritual practices are focused towards arousing this massive storehouse of energy and leading it thru the various chakras till a vision of reality is attained. There are also many incidents where this energy has caused Sadhaks innumerable problems as they have been unable to channel it correctly. Here again, the Kundalini Shakti is aroused by the grace of the Gunatit Guru and is channelled soley by him so that there are no chances of any harm coming to Sadhak. The shakti is so powerful that at times it has disturbed and distracted a Sadhak to the point that he has been unable to continue with his Sadhana. Thru the practice of Swaroop Yoga, we bypass the dangers associated with this process.

So then what really has **P.P. Kakaji** explained in his book **'The Real Essence of Tantra'?** It is the method of Sadhana most suitable for the masses of mankind. In this path, the Gunatit Guru is the chief instrument for final emancipation. It is thru his grace that spiritual progress is achieved in a safe and simple way. His grace is realized by striving for a oneness of thought and indentity with him. It begins by trusting that all His actions are inherently divine whether we understand his motivations or not. All the components of ashtanga yoga described in detail in Kakaji's book are ancillary and auxiliary to his instruction. Kundalini Shakti is aroused and controlled by Him in the Sadhak. The Sadhak can easily measure his progress by the experience of Love and Delight on the part of the Master. Meditation and Japa, normally difficult for Sadhaks, become effortless and spontaneous. The use of the Mantra given by the Master bears fruits instanly as the Gunatit Sadhu, the

living embodiment of the Mantra, is himself present in human form. Sadhana becomes easy without mental conflict.

A Sadhak should keep constant vigil in his day to day life that his process of identification with the Master is not disturbed. This is the true extent of his self effort. That is why you hear Gunatit Gurus often say in the Sabhas–

'The journey ends Here!' If a Sadhak truly believes it, the journey will truly have ended for him. In most other paths of Sadhana, a Sadhaks spiritual journey begins only after meeting his Gurudev but here the long journey which the Sadhak has taken comes to an end. Emancipation is at hand!

According to **P.P. Kakaji**,

'The faith, the surrendering, the aspiration and childlike receptivity of the Sadhak fulfilled under the guidance and full trust of the Master completes this dynamic creative evolutionary process of attaining Brahmic consciousness permanantly for Jivatma.'

For the common masses, the easy and simple path is to accept such Masters grace and obey commands with complete trust and total surrender in a childlike manner, believing Him as supremely Divine in all His actions and movements for enjoying this Divine Lila and freedom in this life. This is the extraordinary feature of Lord Swaminarayan and enables the masses to feel, experience and realise the Supreme Being here in this life and enjoy as free souls.

– P. Malkani Uncle

आओ, 'योगी परिवार' के स्नेहमिलन की स्मृतियों को संजोएं...

फाल्गुन शुक्ला - 1 के मुताबिक प.पू. गुरुजी की प्राकट्य तिथि अबकी बार **25 फरवरी** के मंगलकारी दिन आई... स्थानीय मुक्तों ने मिल कर मनाई और आगामी मंगल दिनों के स्वागत की तैयारियाँ होने लगीं... यूँ, फरवरी के अंतिम सप्ताह से लेकर मार्च के अंतिम सप्ताह तक – लगभग पूरे एक महीने दिल्ली, पंजाब, हरियाणा, यू.पी., राजस्थान, मुंबई, अमदावाद के मुक्तों की चित्तपट्टी पर प.पू. गुरुजी छाए रहे...

दरअसल, संतों, युवकों, गृहस्थों, बड़े-बूढ़ों, युवा पीढ़ी, छोटे बच्चों – सभी के जीवन में उनके ही लेवल पर आकर प.पू. गुरुजी ऐसे रसबस हुए हैं कि इन दिनों हर एक मुक्त को एक अलग ही उत्साह होता है। वैसे भी – छोटे से छोटे बच्चे के जन्मदिन का, बड़ों के जन्मदिन का या उनके किसी विशेष दिन का, उनकी पसंद-नापसंद का ख्याल रखते हुए प.पू. गुरुजी ने जो अपनापन दिया है, वह बेमिसाल है... प.पू. गुरुजी के इसी अथक परिश्रम के फलस्वरूप हरेक के दिल में एक एहसास –

'हम गुरुजी के हैं और गुरुजी हमारे हैं'

धीरे – धीरे दृढ़ हो चुका है। साथ ही, ऐसे प.पू. गुरुजी के प्रति भक्ति अदा करने, उन्हें जीवन के केन्द्र में रखते हुए जीने की हर एक में भावना भी उभरी है।

और... इसी भावना के वश अबकी बार **7 और 8 मार्च** – ये दो दिन **ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज के स्वधामगमन दिन** के उपलक्ष्य में, सत्संग के

युवा-मुक्तों ने **पू. अक्षरस्वामिजी द्वारा सुझाई** अकल्पनीय **'भक्तिरूपी भेंट'** प.पू. गुरुजी को उनके प्रागट्य दिन निमित्त अर्पण करनी चाही। वह भेंट थी–**ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज की पुष्प समाधि पर 48 घंटे की अखंड परिक्रमा!** इसे प.पू. गुरुजी ने सभा में **'अंतःकरण से परे का'** विचार बता कर, **पू. अक्षरस्वामिजी** को प्रसन्नता रूप अपनी प्रसादी का हार भी पहनाया।

प.पू. गुरुजी के प्रति अतिशय लगाव के वश बच्चों, युवाओं, बूढ़ों–सभी ने परिक्रमा करने में अपना योगदान दिया। यहाँ तक कि मुंबई, अमदावाद, पंजाब, हरियाणा, यू.पी. से भी मुक्त विशेष रूप से परिक्रमा करने आ गए। 6 मार्च की मध्यरात्रि 12:00 बजे से लेकर 8 मार्च की मध्यरात्रि 12:00 बजे तक अखंड परिक्रमा जारी रही। यह अखंड परिक्रमा करने का **हेतु** यही था–

प.पू. गुरुजी एवं प.पू. दीदी निरोगी रहें और वे हमें अधिक से अधिक ऐसे ही दर्शन, सेवा एवं समागम का सुख देते रहें।

इन दोनों दिन ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज की पुष्पसमाधि पर परिक्रमा करने वालों का मेला जैसा लगा था। सभी ने इन दोनों दिन अंतर में एक अलग-सा ही आनंद महसूस किया। **ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी महाराज की मूर्तिप्रतिष्ठा के समय हुए 'यज्ञ' में आहुति दिए जाने के बाद आत्मीयता की जो सुगंध–पवित्रता सभी ने महसूस करी थी, वैसा ही एक अलग-सा माहौल अब की बार भी मंदिर में बना था।** सभी को मानो बल देने प.पू. गुरुजी व प.पू. दीदी सुबह-सायं और रात्रि को समाधिस्थान पर आकर बैठते एवं परिक्रमा भी करते। तब वहाँ परिक्रमा, दंडवत् और धुन करते मुक्तों को एक अनोखी 'मूर्ति' मिलती, जो हर एक के जीवन की स्मृतियों में शामिल हो गई!

अंखड परिक्रमा के एक दिन बाद ही **10 और 11 मार्च को होली एवं धुलेन्डी** का अवसर अनादि महामुक्त भगतजी महाराज की जयंती और प.पू. साहेबजी के प्रागट्योत्सव के रूप में मनाया। और... तत्पश्चात्, एक दिन बाद आया **13 मार्च**–प.पू. गुरुजी का प्रागट्य दिन! मंदिर के बगल में ही सालों से जो जमीन यूँ ही बेकार-सी पड़ी थी और जहाँ खूब गंदगी थी, वह जमीन डी.डी.ए. द्वारा मंदिर के सुपुर्द करने पर प.पू. गुरुजी की आज्ञा से प.भ. दालिया साहेब, प.भ. आशिष, प.भ. अनिलजी, प.भ. ओ.पी. पालजी, प.भ. लवलीजी तथा इटेड़ा-ढूँढाहेड़ा के मुक्तों ने दिन-रात एक करके इस **जमीन का** मानो **'कायाकल्प'** कर दिया और इसे पार्क का रूप दे दिया! इस जगह के मिलने के संदर्भ में, खूब ही अल्प समय में आत्मीयता से जुड़ी **सौ. सविता भंडारीजी** भी एक भक्ति-भावना से खूब सहायरूप बनीं।

इस पार्क को प.पू. काकाजी महाराज की स्मृति रूप में **'तीन फरवरी पार्क'** नाम दिया गया और... मानो इसके रूप में प.पू. गुरुजी की गुरुभक्ति और दृढ़ विश्वास रंग लाया... वर्षों पहले **प.पू. काकाजी महाराज द्वारा दिए आशीर्वाद** फलीभूत होते दिखाई दिए। करीब 35-40 वर्ष पहले मंदिर की जमीन के लिए प.पू. गुरुजी जब डी.डी.ए. के लगातार चक्कर काटते थे, तब प.पू. काकाजी महाराज ने आशीर्वाद दिए थे–

'राजा! तुझे यहाँ जमीन तो जितनी चाहिए होगी, उतनी मिल जाएगी...।'

ये आशीर्वाद तो थे ही, लेकिन **सन् 2007 में** ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी महाराज की मूर्तिप्रतिष्ठा के उत्सव के बाद **यह जमीन की प्राप्ति होना भी एक गहरा मर्म लिए हुए था।** दरअसल, प.पू. गुरुजी

ने काकाजी, पप्पाजी व स्वामिजी जैसे स्वरूपों में कोई भेददृष्टि नहीं रखी। भले ही प.पू. गुरुजी को पहले से ही खूब लगाव तो प.पू. काकाजी से था और फॉलो भी उन्हें ही किया; लेकिन साथ ही साथ प.पू. पप्पाजी और प.पू. स्वामिजी को भी इन्होंने हमेशा इसी भाव से निहारा है। सो, **प.पू. पप्पाजी के स्वधामगमन के पश्चात् सर्वप्रथम प.पू. गुरुजी ने दिल्ली मंदिर में प.पू. पप्पाजी की मूर्तिप्रतिष्ठा करी।** इसी को देखते हुए, **प.पू. काकाजी महाराज ने अपने 'राजा' पर खूब राजी होकर मानो यह तोहफा दिया!**

सो, सायं 6:30 बजे **प.पू. वशीभाई एवं पू. अश्विनभाई के वरद् हस्तों पूजन करवा कर 'तीन फरवरी पार्क' का उद्घाटन किया गया।** पूजन की यह विधि भी आशीर्वाद रूप बन गई! वर्षों पहले जिस 'रोली' (कंकु) से गुरुहरि योगीजी महाराज का पूजन किया गया था, संयोगवश वह रोली इस शुभ मौके पर मुंबई के **प.भ. हेमंतभाई मर्चंट** को मिली और उन्होंने अपने सुपुत्र **पू. मनन** द्वारा इसे खास दिल्ली भिजवाई। सो, उसी 'रोली' से पूजनविधि सम्पन्न की गई। तत्पश्चात् मंदिर के परिसर में स्थानीय मुक्तों ने इकट्ठे होकर प.पू. गुरुजी का प्राकट्य दिन मनाया और इस दिन के बाद से ही मार्च के अंतिम शनिवार - रविवार को मनाए जाने वाले 'योगी परिवार के स्नेहमिलन' की तैयारियाँ जोर-शोर से शुरु हो गईं! और... वह दिन भी देखते ही देखते आ पहुँचा जब गुणातीत कुनबे के मुक्तों ने, **28** और **29 मार्च '09** को एकत्रित होकर, **'योगी परिवार आनंदोत्सव' मनाया।**

25-26-27 मार्च से ही गुणातीत समाज की नींव की ईंटों समान प.पू. हरिभाई साहेब, प.पू. वशीभाई एवं पवई के मुक्त; प.पू. ज्योति बहन एवं गुणातीत ज्योत की बहनें, पू. इलेशभाई एवं पू. सुरुभाई, हरिधाम से पू. सुमन बहन, पू. सर्वेश्वर बहन के साथ कुछ साधक व गृहस्थ बहनें; पू. कौशिकभाई (एरु) के संग सांकरदा से पू. कोठारीस्वामिजी एवं पू. गुरुजी, विद्यानगर से पू. विज्ञानस्वामिजी एवं पू. आचार्यस्वामी; मुंबई मंडल, पंजाब, हरियाणा, यू.पी., एम.पी., राजस्थान एवं अमदावाद – राजकोट वगैरह स्थानों से अनेक मुक्त, दिल्ली – ताड़देव मंदिर के परिसर में अपनेपन की खुशबू फैलाते आ गए थे... पर, दिल में एक मलाल भी रहा कि पिछले कई वर्षों की भाँति अबकी बार, प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी एवं प.पू. साहेबजी के दर्शन, सेवा एवं आशीवर्चनों से हम वंचित रहे। **प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी** हार्ट **की** तकलीफ के कारण नहीं आ पाए थे। 28 मार्च की सुबह ही मुंबई के लीलावती अस्पताल में उनकी **एन्ज्योग्राफी** हुई थी। लंदन में 'अनुपम मिशन' से जुड़े मुक्तों द्वारा **प.पू. साहेबजी का 70वाँ प्राकट्योत्सव–'गुरुभक्ति दर्शन महोत्सव'** मनाया जाने के कारण प.पू. साहेबजी भी नहीं आ पाए थे।

खैर, अपनेपन की खुशबू ने **28 मार्च, शनिवार** की सायं मंदिर के पीछे के परिसर में घर-घर की सभा के रूप में आकार लिया। इसमें पू. इलेशभाई ने गुजराती भजन– *'योगी आवो ते रंग मने शीद लगाडयो...'* गाकर प.पू. गुरुजी को तो बापा की स्मृति कराई ही, साथ ही साथ उपस्थित सभी मुक्तों को मानो बापा के मूर्तस्वरूप से भर दिया। सभा में अमदावाद के प.भ. समीरभाई दवे, राजकोट के प.भ. वल्लभभाई फल्दु, प.भ. दीपक अग्रवाल (मुंबई) एवं पू. कौशिकभाई (एरु) ने प्रासंगिक उद्बोधन किया और... प.पू. हरिभाई साहेब के आशिष प्राप्त होते ही खूब जोर से बारिश शुरु हो गई। सो, बारिश से बचने के लिए सभी मंदिर में ऊपर ठाकुरजी के हॉल में पहुँचे और **'ग्लोबल वॉर्मिंग' के निमित्त 'सेव धी**

अर्थ' मूवमॅन्ट को देखते हुए, सारी अनावश्यक लाईट्स बंद करके आधा घंटा धुन करी। इसी दौरान प.पू. स्वामिजी की एन्ज्योग्राफी की रिपोर्ट लेकर प.पू. निर्मलस्वामिजी भी देर सायं की फ्लाईट द्वारा मुंबई से आ गए।

पिछले दो-तीन वर्ष से उत्सव के दिन 'केक-कटिंग' के लिए समय ही नहीं बच पाता था, सो धुन के बाद प.पू. गुरुजी के प्राकट्योत्सव निमित्त 'केक-कटिंग' का प्रोग्राम हुआ। कई मुक्तों का भी इसी सप्ताह में जन्मदिन था, सो उनका जन्मदिन भी साथ में मनाया और... सभाविसर्जन के बाद प्रसाद लेकर सभी अपने-अपने ठहरने के स्थान पर गए।

दूसरे दिन **29 मार्च, रविवार** की सुबह प.पू. गुरुजी, प.पू. हरिभाई साहेब, प.पू. वशीभाई और प.पू. अध्यात्मानंदस्वामिजी के सान्निध्य में ठाकुरजी के हॉल में पू. यज्ञप्रियस्वामी ने महापूजा संपन्न की। इसी दौरान प.पू. गुरुजी को अपनी तबियत थोड़ी नासाज़ लगी, सो वे बीच में से ही उठ कर थोड़ा विश्राम करने नीचे चले गए। लेकिन, प.पू. हरिभाई साहेब, प.पू. निर्मलस्वामिजी और प.पू. अध्यात्मानंदस्वामिजी ने मुक्तों का मार्गदर्शन किया–आशिषवर्षा की। सभा के बाद सभी ने दोपहर का प्रसाद लिया और सभी स्वयंसेवक सायं के मुख्य उत्सव की तैयारियों में लग पड़े। उत्तर के मुक्तों के प्राणाधार प.पू. गुरुजी की तबियत नासाज़ जान कर सभी के भीतर के तंत्र तो थोड़े ढीले ही थे, फिर भी अपने प्राणपुरुष के प्रति भक्ति अदा करने की भावना से कोई पीछे नहीं हटा।

सायं करीब पौने छः बजे प.पू. गुरुजी ने प.पू. अध्यात्मानंदस्वामिजी के साथ पंडाल में जैसे ही प्रवेश किया कि **'पधारो, म्हारा वालीड़ा...'** स्वागत भजन के साथ सत्संग के लड़के उन्हें स्टेज की ओर ले गए और... साथ ही साथ इंद्रदेव भी उत्सव में शामिल होने आ पहुँचे। स्वाभाविक है कि जोर से बारिश शुरु होते ही कई दिनों से इस उत्सव की कल्पना करते सेवकों के दिल रो पड़े। बस, फिर तो प्रार्थना करते हुए पू. राकेशभाई ने धुन करवानी शुरु की और धीरे-धीरे बारिश कम होने लगी। मानो, सभी सेवकों की प्रार्थना पहुँची! इससे भी अधिक, प.पू. गुरुजी ने बताया कि **प.पू. हरिभाई साहेब** ने मुझे स्टेज पर कह दिया था–

चिंता नहीं करना, बारिश तो बंद हो जाएगी; क्योंकि इंद्रदेव को प्रार्थना नहीं, ऑर्डर किया है!

और... ऐसे सत्पुरुषों का ऑर्डर तो देवों को भी शिरोधार्य करना ही पड़े। यूँ तीन बार तेज बारिश हुई, लेकिन सभी मेहमान कहो या स्थानीय समाज, पंडाल से इधर-उधर नहीं हुआ!!

शायद यह बरसात भी प.पू. गुरुजी के प्रति मुक्तों के अतिशय लगाव का एक दर्शन करवाने ही आई थी। पहली बार जैसे ही तेज बारिश शुरु हुई, तभी स्वयंसेवक दो लंबे तिरपाल लेकर भाइयों और बहनों के समूह को बारिश से बचाने के लिए पहुँच गए। ऐसे हबड़-तबड़ के माहौल में ऐसा सुझाव तो प्रभु ही दे सकते हैं; साथ ही, भक्तिभरे दिल के बिना यह संभव भी नहीं है।

परंतु, यदि गहराई से निहारेंगे तो यह भक्तिभरा दिल भी प.पू. गुरुजी द्वारा ही हमें दी गई देन है। दिल्ली समाज के हर एक मुक्त ने प.पू. गुरुजी को पल-पल, स्वरूपों एवं संबंध वाले मुक्तों की माहात्म्ययुक्त जो सेवा करते देखा है, उसका तो यह शायद आधा प्रतिशत क्या, रत्तीभर भी नहीं है। हाँ, उत्सव में सहज ही बना यह प्रसंग प.पू. गुरुजी का परिचय जरूर बना, जब **'गुणातीत ज्योत'** से आए **पू. मनी बहन** सहज बोल उठे–

'उत्सव में प.पू. गुरुजी के कार्य, सेवकों की गुरुभक्ति और प्रीति का दर्शन हुआ है। उनके द्वारा तैयार हुए समाज का ख्याल पड़ता है...'

बरसात के कारण उत्सव के कार्यक्रम में बदलाव किया गया। सबसे पहले तो पिछले दो-तीन वर्षों से प.पू. भरतभाई की इच्छा को साकार रूप देते हुए, हिन्दी में प्रकाशित **'मंत्रशक्ति'** पुस्तक का **प.पू. हरिभाई साहेब** के वरद् हस्तों उद्‌घाटन हुआ। 'मंत्रशक्ति' मूलतः अंग्रेजी भाषा में ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज द्वारा लिखित *'ध रियल इसॅन्स ऑफ तान्त्र'* के 'मंत्रशक्ति' प्रकरण का हिन्दी अनुवाद है, जो कि दिन-रात देखे बिना, प.पू. गुरुजी एवं प.पू. दीदी ने खूब ही सरल भाषा में हमारे लिए किया है। यूँ भी, यह पुस्तक सभी के लिए अमूल्य पूँजी है; क्योंकि **प.पू. दीदी** के शब्दों में–

प.पू. काकाजी द्वारा 'मंत्रशक्ति' के बारे में जो कुछ भी लिखा गया है, वह डंके की चोट पर मानो ऑथेंटिक है इतना ही नहीं, वो 'वर्डीक्ट' है! इससे बढ़ कर अन्य कुछ कोई कह ही नहीं सकता। इसके अलावा हम कुछ और लिखने की चेष्टा भी करें, तो वह हमारा अज्ञान या मोह ही है।

तत्पश्चात् प.पू. गुरुजी द्वारा वर्षों पहले दिए मार्गदर्शन की सी.डी. जो कि गत वर्ष **'मार्गदर्शिका भाग-1'** के रूप में पहली बार प्रस्तुत की गई थी, उसी का **भाग–2** अबकी बार **प.पू. वशीभाई** के वरद् हस्तों से प्रस्तुत करवाया गया और साथ ही उन्होंने सभी को प.पू. गुरुजी का माहात्म्यदर्शन करवाया। इसके बाद भजन संग्रह **'स्वर्णस्वर–5'** का अनावरण हमारे आत्मीय **प.भ. काशीरामभाई राणा साहेब** के वरद् हस्तों हुआ और उन्होंने भी प.पू. गुरुजी के साथ के अपने संबंध का सभी को परिचय दिया।

और... फिर **पू. राकेशभाई एवं पू. ईलेशभाई** ने मिल कर प्राकट्योत्सव निमित्त नया भजन प्रस्तुत किया। भजन के बाद कई वक्ताओं जैसे–सुरत की गुणातीत ज्योत के **पू. पियुषभाई**, पंजाब सरकार के विधायक एवं हमारे आत्मीय **श्री बरार साहेब**, **लब्धप्रतिष्ठ साहित्यकार श्री दिनकरभाई जोशी एवं मॉरिशियस से** आए **श्री सुरेशजी** ने अपने अनुभवों का दर्शन कराया। अनुभव दर्शन की श्रृंखला के बीच में सत्संग के युवकों ने ***'ब्रह्मसंबंध मिला, दिव्य कुनबा मिला... काकाजी का कुंवर आया...'*** भजन पर न केवल भक्तिनृत्य प्रस्तुत किया; बल्कि, प.पू. गुरुजी की विशेषताओं का संक्षिप्त परिचय भी दिया।

भक्तिनृत्य के बाद अल्प परिचय में ही अपनेपन से जुड़े बनारस के **श्री विश्वनाथ पांडेजी**, **पू. विज्ञानस्वामिजी**, **सांकरदा मंदिर के पू. निष्कामस्वामिजी** (पू. गुरुजी) ने महात्म्यदर्शन कराया। तत्पश्चात्, दिल्ली के मुक्तों की ओर से उपस्थित स्वरूपों एवं महानुभावों का हार एवं पुष्पों द्वारा स्वागत किया गया और... अपनी-अपनी भावनाएँ व्यक्त करते हुए **अलग-अलग केन्द्रों एवं प्रांतों से आए मुक्तों ने प.पू. गुरुजी को हार अर्पण किए। पवई के मुक्तों की ओर से श्रीफल युक्त एक कलश की भेंट प.पू. गुरुजी को दी गई।** इसी दौरान, दिल्ली सरकार के विधायक **माननीय श्री हरिशंकर गुप्ताजी**, पूर्व विधायक **श्री मांगेराम गर्गजी** एवं निगम पार्षद **श्री देवराजजी** भी उत्सव में परिवार के एक सदस्य की भाँति आए और प.पू. गुरुजी के प्रति अपनी भावनाएँ व्यक्त कीं।

सभा के अंत में अमदावाद के श्री शिवानंद आश्रम के अध्यक्ष योगाचार्य ब्रह्मविद् **परम पूज्य अध्यात्मानंदस्वामिजी** ने सुंदर मार्गदर्शन देते हुए सभी को प.पू. गुरुजी की महिमा समझाई।

जैसे कि शुरुआत में ही इस बात का जिक्र हुआ था कि प.पू. गुरुजी की तबियत कुछ ठीक नहीं थी। उत्सव के पूरे कार्यक्रम में प.पू. गुरुजी को काफी थकान सी लग रही थी; ऐसा प.पू. गुरुजी ने स्वयं उत्सव के बाद बताया और... दो दिन बाद जब डॉक्टर से जाँच करवाई, तो पता चला कि 'शुगर लो' हो जाने के कारण प.पू. गुरुजी को ऐसा महसूस हुआ था।

किन्तु, ऐसी अवस्था में भी प.पू. गुरुजी को भीतर में यही था कि आज तो मुझे बात करनी ही चाहिए। सो, भले ही **धीमी आवाज में, पर प.पू. गुरुजी ने सभी पर आशिषवर्षा** न केवल **बरसाई,** बल्कि उत्सव में आए एक मुक्त पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए समझाया–

हमें हमारे देह के संबंधियों से बढ़ कर भगवान के भक्त और सत्संग होना चाहिए।

प.पू. गुरुजी से **नए ही जुड़े** पंजाब - मोगा के **प.भ. विकासजी की पत्नी सौ. मोनिकाजी** के इकलौते भाई की आज ही सगाई थी, लेकिन वहाँ जाना रद्द करके वो उत्सव में आईं कि ***मैं तो अपने गुरुजी का जन्मदिन मनाने के लिए जाऊँगी।*** सौ. मोनिकाजी की भक्ति - भावना को दिल से धन्यवाद! ऐसे प्रसंगों से एक ओर प.पू. गुरुजी द्वारा बार - बार दोहराई प.पू. पप्पाजी की एक बात याद आ जाती है– ***'सत्संग में निष्ठा होनी, कैमरे के क्लिक होने जैसी है। मतलब, जिसे निष्ठा होनी होती है, वह बिना कहे–समझाए करे फट हो जाती है, वर्ना तो सालों - साल तक सत्संग में आते - जाते हों, तब भी...'***

दूसरी ओर–प.पू. गुरुजी के रूप में प.पू. काकाजी ने हमें क्या बख़्शिश दी है, वह भी ख्याल पड़ता है। जैसे कि **प.पू. हरिभाई साहेब** बोले– ***गुरुजी के पास सब लिविंग लगता है...***

और

कारण यही है कि **ब्रह्मस्वरुप काकाजी महाराज के सिद्धांत पर चलते हुए,** प.पू. गुरुजी की इच्छा यही रही है कि **उत्सवों को** हम सिर्फ जाहो–जलाली, चमक–दमक के साथ नहीं, बल्कि **अपने कुटुंब के स्नेहमिलन के रूप में ही मनाएँ।** तभी तो इस भावना को समझे हुए हमारे आत्मीयबंधु **प.भ. काशीरामभाई राणा साहेब** उत्सव के थोड़े ही दिन बाद प.पू. दीदी को फोन पर बोले–

'उत्सव भले सिम्पल था, पर शानदार था।'

शानदार क्यों? क्योंकि उसमें अपनेपन की भावना निहित थी।

और... ऐसी अपनेपन की भावनाओं को दिल में संजो कर सभी ने उत्सव के बाद प्रसाद लेकर धन्यता अनुभव की।

*(**25 फरवरी** - प.पू. गुरुजी की 72वीं प्राकट्य तिथि, **7 मार्च** एवं **8 मार्च** प.पू. काकाजी महाराज के स्वधामगमन दिन तथा **11 मार्च** -धुलेन्डी पर हुई सभाओं में व्यक्त किए गए मुक्तों के उद्गारों एवं स्वरूपों के आशीर्वादों का इस अंक द्वारा मनन करें...)*

25 फरवरी, 2009 प.पू. गुरुजी की प्राकट्य तिथि की सभा

प.भ. जयप्रकाश मल्होत्राजी (दिल्ली)

...यहाँ हम जितने भी बैठे हैं, सभी पूर्व के मुक्त हैं; वर्ना इस मंदिर के गेट के अंदर आ नहीं सकते। मुझे यहाँ बारह वर्ष हुए और प.पू. गुरुजी की सामर्थी व निश्चिंतता का एहसास उसी दिन हो गया था जब हिमालय की गोद में–रानीखेत में मुझे प्रथम बार गुरुजी के दर्शन हुए। दुनियावी तौर पर तो कहते हैं 'लव एट फर्स्ट साइट' बट इट वॉज़ 'कृपा एट फर्स्ट साइट', इट वॉज़ 'ग्रेस एट फर्स्ट साइट' और... वो पावर–वो ग्रेस आज भी चालू है।

...नक्षु से लेकर हिंमतकाका तक सभी के लिए गुरुजी अवॅलेबल हैं–एक्सॅसेबल हैं। जितना प्यार और जितना समय वे हमें दे रहे हैं, हम उसका वन परसेन्ट भी नहीं करते। जैसे गुरुजी ने कहा तकरीबन दो सौ

पच्चीस वर्ष हमें हो गए! उन्होंने इस धरती पर इसलिए प्राकट्य लिया कि जो कमियाँ हम में रह गई थीं, वो हम सुधार लें; उनके अभिप्राय में जुड़ जाएँ। उनका अभिप्राय क्या है? बार-बार हम सुनते हैं –
'किसी का देखो मत, सबको निर्दोष मानो। अगर सबको निर्दोष मान लेंगे, तो हमारे दोष टल जाएँगे।'
सामने आया हुआ हरिभक्त – मुक्त, जो मुझ से कुछ कह रहा है – बात कह रहा है, वो वह नहीं कह रहा; उसकी तो कोई ताकत ही नहीं है। **'जो वो कह रहा है – जो उसने कहा, वो गुरुजी ही बोल रहे हैं'** – यह अगर हमने मान लिया, तो यही हमारी भक्ति है... यही गुरुजी का अभिप्राय है।

...गुरुजी हमारे लिए अवॅलेबल हैं-एक्सेसेबल हैं, सुबह छः बजे से लेकर रात को बारह बजे तक! उसकी हम महिमा समझें, उसकी हम वॅल्यू समझें। उनको हमने क्या माना? दिल्ली में हम लोगों के लिए – हमें इकट्ठा करने में, **'गुणातीत परिवार'** बनाने में गुरुजी को चालीस साल से ज्यादा हो गए! चालीस साल में जमीन की कीमत – जो पाँच हजार रुपये का प्लॉट था, आज वो एक करोड़ का हो गया। सोना जो दो सौ रुपये तोले था, वो आज सोलह हज़ार रुपये तोला हो गया। बच्चों के स्कूल की फीसें – जो हम दस पैसे में स्कूल जाते थे, वो आज तीन हजार-चार हजार रुपये पर मन्थ हो गई है। पर, हमारे गुरुजी की महिमा क्या? आओ, जय स्वामिनारायण! बस 'जय स्वामिनारायण' करो और उनका टाइम वेस्ट करना शुरू कर देते हैं। गुरुजी हमारे घर में ये प्रॉब्लम है, गुरुजी हमारे ऑफिस में ये प्रॉब्लम है, गुरुजी हमारी दुकान नहीं चलती, बिज़नेस नहीं चलता – यही डिस्कस करते रहते हैं। वे तो अवॅलेबल हैं, एक 'जय स्वामिनारायण' करो – यही कीमत रह गई है! इतने सस्ते पर हम उनकी वॅल्यू मानते हैं। बहुत समय हमने गँवा दिया, अब और न गँवाएं।

वो कहते हैं न? – जब जागे तभी सवेरा! आज गुरुजी का प्रागट्य दिन – बहुत ही शुभ दिन हम मना रहे हैं। तो, आज के दिन संकल्प करें कि गुरुजी की हेल्थ अच्छी रहे – दीदी की हेल्थ अच्छी रहे। दीदी का भी यही हाल; सुबह छः बजे – पता नहीं, दीदी जागी हैं या नहीं जागी हैं; पर यही होता है सुबह-सुबह दीदी से बात कर लें, नहीं तो दीदी बिज़ी हो जाएँगी। बाद में भी बिज़ी तो हमारे लिए ही हैं। छः बजे, सवा छः बजे, साढ़े छः बजे से रात तक चलता रहता है। भई! हमें आराम की जरूरत है, उनको आराम की जरूरत नहीं है क्या? उन्होंने खाना खाया है, नहीं खाया है; दवाई ली है, नहीं ली है। गुरुजी की कोई डिश ऐसी नहीं होती, जिससे पहले दवाई न हो। मॉर्निंग में-आफ्टर नून में-इवनिंग में या रात को सोते समय देख लो; गोलियाँ या फक्की तो होती ही है। हाथ में कम से कम पांच छः गोली होती हैं, जो गुरुजी एक साथ लेते हैं। तो, हम कब जागेंगे उनकी सेहत का ध्यान रखने के लिए? सभी हरिभक्त जो मंदिर के प्रांगण में आते हैं, वे काकाजी की परिक्रमा करते हैं। अपनी-अपनी सेहत के अनुसार, अपनी-अपनी भावना के अनुसार, अपनी-अपनी इच्छा के अनुसार। किसी के ऊपर कोई कम्पलसन नहीं है, हम सब अपनी इच्छा से करते हैं। वहाँ खड़े होकर हम मांगते हैं और वह **समाधि एक ऐसा स्थान है – जहाँ सबकी इच्छा पूरी होती है।** अपने लिए तो हमेशा हम मांगते ही हैं। हमने-कुछ लोगों ने-थोड़े दिन पहले सोचा ही है कि चलो, काकाजी के स्वधामगमन का बड़ा अच्छा दिन आ रहा है; सो काकाजी की समाधि पर अखंड परिक्रमा करें और हम सब एक संकल्प करके जाएँ। हमारे संकल्प काकाजी पूरे करने वाले ही हैं – आज तक सभी किए हैं। तो, आज हम ये संकल्प करके यहाँ से जाएँ कि **सात तारीख को हम अखंड परिक्रमा करते हुए प्रार्थना करेंगे कि गुरुजी और दीदी की सेहत अच्छी रहे। बस, हमें और कुछ नहीं चाहिए।** गुरुजी – दीदी ये दवाइयाँ खाना छोड़ दें।

वो अवॅलेबल तो हैं ही, पर हम उनकी महिमा समझें। मतलब! यहाँ पढ़े-लिखे लोग – ग्रॅज्युएट, पोस्ट ग्रॅज्युएट लोग आते हैं। सब कहते हैं – आहा! गुरुजी की मूर्ति वेरी लविंग है। मतबल, हम तो उसमें खोए ही रहते हैं; ऐसे खोए रहते हैं कि सामने से कोई आता-जाता है, पर उसका हमें पता नहीं चलता। पर, हम इस बात की महिमा नहीं समझते कि ऐसे-ऐसे प्रसंग बनाकर वे हमें समझा रहे हैं कि भई जागो, जागो, जागो! सवेरा हो चुका है, सूर्य निकल आया है – काकाजी का सूर्य निकल आया है। उसको पहचान लो, चादर तान कर मत सोओ।

...हम गुरुजी को खोएं नहीं, दीदी को खोएं नहीं। ये हमारी अमूल्य निधि हैं। गुरुजी अनमोल हैं, उनकी कोई कीमत हो नहीं सकती, हम दे नहीं सकते। **हम अपने इस शरीर के चमड़े की जूतियाँ बनाकर भी गुरुजी को पहनाएं, तो भी उनका मूल्य चुका नहीं सकते।** अगर आप लोग मेरी बात को सही मानते हो, तो यहाँ से गुरुजी और दीदी की सेहत के लिए ऐसा संकल्प करके जाएँ... काकाजी प्रगट हैं ही, वे हमारी जरूर सुनेंगे। आज तक सुनी है, हमारी छोटी-छोटी बातें सब मानी हैं उन्होंने; यह भी मान लेंगे। पर, हम यह मांग कर तो देखें कि गुरुजी और दीदी की सेहत अच्छी रहे, बस! आज के दिन मेरी आप लोगों से हाथ जोड़कर यही विनती है।

प.भ. लांबाजी (दिल्ली)

...प.पू. गुरुजी को उनके प्रागट्य की शुभ कामनाएँ। मुझे और यहाँ उपस्थित सभी लोगों को उनका आशीर्वाद मिल रहा है। लेकिन जो वंचित हैं, उन्हें भी उनका आशीर्वाद और उनकी छत्रछाया मिलती रहे। सो, परमपिता परमेश्वर से मैं तहे दिल से प्रार्थना करता हूँ कि गुरुजी को अच्छी सेहत एवं दीर्घायु प्रदान करें।

मेरा गुरुजी से पिछले कुछ ही समय से संबंध हुआ है। मुझे एक ऐसी शक्ति नजर आई कि जब मैं इस रोड से गुजरता हूँ, तो मेरी कार की ब्रेक अपने आप लग जाती है; कार आगे जा ही नहीं पाती, जब तक मैं गुरुजी के दर्शन न कर लूं।

...अभी मल्होत्राजी ने एक बात कही कि हम गुरुजी का टाइम लेते हैं, उन्हें अपनी तकलीफें बताते हैं। पर, यहाँ मैं आपको थोड़ी-सी बात स्पष्ट कर रहा हूँ, जो मेरे अपने पर बीती है। हो सकता है कि मैंने गुरुजी को अपना कष्ट बता भी दिया हो। लेकिन, जहाँ तक मुझे ख्याल है–**मैंने कष्ट नहीं बताया। मैंने सिर्फ गुरुजी की तरफ देखा, उन्होंने मुझे मुस्कराहट दी और मेरे कष्ट का सॉल्यूशन मिल गया!** यह एक सच्चे संत का ऐसा करिश्मा है, जो किसी व्यक्ति के हृदय में उतरता है।

...ऐसे संतों की आजकल के समय में इस धरती के ऊपर बहुत ही ज्यादा जरूरत आ चुकी है। क्योंकि आप कहीं भी घूम आओ, आजकल सच्चा संत नहीं मिल पाता। **मैंने अपने जीवन के पचपन–छप्पन वर्ष संतों को ढूंढने में लगाए।** एकाध मिले भी, जिनका मैं अनुयायी भी बना; पर, पिछले तीन साल से-जब से मैं गुरुजी की शरण में आया हूँ, तब से मुझे इनके जैसा सच्चा संत नहीं मिला।

पीछे कुछ समय से मैं परेशान भी रहा... **मुझे जब भी कोई परेशानी होती है, तो मैं चुपचाप गुरुजी के सामने आकर बैठता हूँ। वे अपनी एक नज़र मुझ पर डालते हैं और मेरी परेशानियाँ खतम हो जाती हैं।** उस समय मेरी सोच ही बदल जाती है कि मैं क्या करने जा रहा हूँ।
मैं अपने जीवन की एक घटना आपको बताता हूँ–

किसी व्यक्ति ने मुझे कुछ कह दिया। तो, मैं इतनी तैश और गुस्से में आ गया कि इसने मेरे साथ ऐसा व्यवहार क्यों किया? तब मैंने एकदम गुरुजी को याद किया कि गुरुजी मैं यह करने जा रहा हूँ, मेरी रक्षा करो, मुझे एड्वाईज़ करो। मुझे ऐसा लगा कि किसी ने मेरे सिर पर हाथ रख दिया कि बच्चे! कोई बात नहीं, तू शांत हो जा। मैं शांत हो गया और कुछ कह ही नहीं पाया और उसमें ही मुझे गुरु का रूप नजर आने लगा!

ऐसे संतों की आजकल बहुत जरूरत है। गुरुजी ने पिछले एक साल में मेरी इतनी रक्षा करी, जिसका मैं बयान नहीं कर सकता। **दीदी ने मेरी पत्नी को इतना सहारा दिया, जिसका मैं बयान नहीं कर सकता।** मैं अभी कुछ ही समय से आया हूँ। आप लोग तो बहुत समय से इनके आशीर्वाद और इनकी छत्रछाया में चल रहे हैं। पर, मुझे ऐसा लग रहा है भले मैंने पिछले ढाई-तीन वर्ष ही इनके साथ निकाले, पर मैं ३०-३५ वर्षों से इनके आशीर्वाद प्राप्त कर रहा हूँ। पहले जो पोषण हो रहा था, वो भी मुझे गुरुजी ने दिया था।

गुरुजी के लिए यही प्रार्थना कर रहा हूँ कि परमात्मा श्री स्वामिनारायण इनको स्वस्थ रखें, ये दीर्घायु हों। इसमें भी मैं अपना और अपने साथियों का मतलब ही ढूंढ रहा हूँ, क्योंकि उनका आशीर्वाद हमारे पर बना रहे। भक्तों के लिए वे अपना इतना समय देते हैं। कभी भी कोई हो–किसी बच्चे को भी बात करनी हो, तो चार बजे आ जाओ-तीन बजे आ जाओ-दो बजे आ जाओ। इन्होंने किसी को कभी मना नहीं किया; आराम से उनकी बातें भी सुनीं। उनको अपना आशीर्वाद भी दिया। मैं आख़िर में आप सबकी तरफ से और अपनी तरफ से परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ कि गुरुजी की छत्रछाया हम पर हमेशा बनाए रखें।

प.भ. पवन खण्डेलवालजी (दिल्ली)

आज मल्होत्रा साहब ने इतनी गूढ़ बातें करी, इतनी अंदर से बातें करी कि दिल पसीज गया... महाराज को करोड़ो-करोड़ों बार धन्यवाद देते हैं कि उन्होंने हमें गुरुजी की गोद में बिठाया। मुझे भी जुड़े हुए आज दस-बारह साल हो गए। हम जब पहले का कम्पेरिजन अब से करते हैं, तो हम देखते हैं कि हम पहले क्या थे? जैसे कि जीवन जी तो रहे थे, मगर रास्ता मालूम नहीं था कि कैसे जीना है? क्या करना है? लाइफ का ध्येय क्या है? बस चले जा रहे थे, चले जा रहे थे। 1992 में मेरे फाधर एक्सपायर हुए। मुझे फाधर से काफी लगाव भी था। उनके जाने के बाद मुझे लगा कि मैं बिल्कुल अकेला पड़ गया। लेकिन, मन में ये भी था कि हमें रास्ता दिखाने वाला कोई चाहिए, जिसके सान्निध्य में मैं आगे बढ़ सकूं। तो, महाराज ने ये मेरी प्रार्थना सुन ली और मेरा गुरुजी से संबंध करवाया। हालांकि **मैं चाहता भी था कि मुझे कोई ऐसे संत मिलें, जिनसे मेरा लगाव एकदम से बढ़ जाए-एकदम से टची हो। और... देखिए, गुरुजी के रूप में मुझे ऐसे संत मिल गए।**

जैसे कि हम सबका ये इक्सपीरियन्स है–मंदिर में एन्टर करते हैं, तो एक अलग ही वाइब्रेशन्स चालू हो जाती हैं। हम एन्ट्री करते हैं, तो बाहर की सारी बातें दिमाग़ से निकल जाती हैं। गुरुजी से मिलना है, हरिभक्तों से मिलना है, बातें करनी हैं– यही दिमाग़ में घूमता रहता है।

गुरुजी ने ऐसा जो समाज तैयार किया है, हमारी जो प्रोग्रेस हुई है, वो कहीं सुनने को–देखने को मिलेगी ही नहीं। आज हम बाहर देखते हैं कि हम किन्हीं दो आदमियों पर भरोसा नहीं कर सकते। लेकिन ये जो समाज तैयार हो रहा है, उनमें से एक-एक पर हम भरोसा कर सकते हैं।

दूसरा, आज हम कोई काम करते हैं, उसमें हमारा पसर्नल इन्ट्रेस्ट होता है। हम बिज़नेस करते हैं– 'पैसा कमाएंगे, रुपया कमाएंगे, तो परिवार चलेगा व कुछ सेवा होगी वगैरह, वगैरह।' ...लेकिन, जब

बहनों का देखते हैं कि वो तो सिर्फ 'सेवा' में लगी हुई हैं। उनका इन्ट्रेस्ट क्या है? सिर्फ गुरुजी को या हरिभक्तों को राजी करना–एक परसेन्ट भी किसी को तकलीफ नहीं होनी चाहिए। बहनें गुरुजी और दीदी को राजी करने के लिए तन-मन से लगी ही रहती हैं; न सुबह का पता, न शाम का पता, न दिन का पता न रात का। पता नहीं, हम क्यों उनसे सीख ले नहीं पाते कि हम भी उसी राह पर चल पड़ें, जिससे कि किसी भी तरह से–कुछ भी करने से गुरुजी की एक स्माइल हमें मिल जाए। ऐसे काम हम करते भी हैं, प्रोसेसिंग भी चल रही है। कोई जल्दी तैयार होता है, तो कोई दो साल में तैयार होता है और कोई पाँच साल में तैयार होता है।

...हमें दीदी और गुरुजी के स्वास्थ्य की बड़ी चिंता रहती है। हम सभी की महाराज से यही प्रार्थना है कि हमें गुरुजी का पूरा-पूरा लाभ मिलता रहे। गुरुजी-दीदी को किसी तरह की कोई बीमारी या ऐसा कुछ न घेरे और हमारा लगाव, हमारी प्रीति गुरुजी के साथ दिनों-दिन ऐसी बढ़ती रहे, बढ़ती रहे, बढ़ती रहे कि गुरुजी वाकई दिल से ये बात कह सकें कि जैसा प.पू. काकाजी चाहते थे, वैसे समाज का सर्जन हो गया।

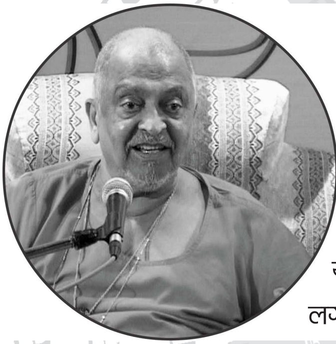

प.पू. गुरुजी

...फिफ्टी फोर में मैं काकाजी के कॉन्टेक्ट में आया। उन दिनों काकाजी सत्संग में ये कहा करते–

वृत्तियों के विलास और पंचविषय के रमणीय राग पोसने का यह 'सत्संग' नहीं है।

ये बात बहुत कुछ कह जाती है। लेकिन, कई बार ये स्टेटमेन्ट कॉन्ट्ररी भी लगता है।

उसकी वजह यह है कि अपने यहाँ कहा जाता है कि हमें साधना करनी नहीं है। हमारी साधना हमारे गुरु करते रहते हैं। पर, हमें एक कॉन्सियसनेस में रहना है कि हम इनके हैं। ये कैसा कि जैसे ही शादी हो जाती है, तो लड़की की कॉन्सियसनेस बिल्कुल बदल जाती है। 'मैं फलाने-फलाने की लड़की'–ऐसा नहीं रहता, बल्कि 'मैं इसकी मिसिस हूँ।' अरे! गरीब के घर की लड़की होगी और पैसे वाले के घर शादी होगी, तो दूसरे ही दिन से–गुजराती में जिसको बोलते हैं–उसका 'ठस्सा' बदल जाएगा; हिन्दी में कहते हैं रौब बदल जाएगा। गांव की होगी लम्बी चोटियां रखती होगी, एकदम बॉय कट पर आ जाएगी! पैसे वाले के घर नए जमाने की–बड़े परिवार की वो बहू जो बन गई। कॉन्सियसनेस पूरी बदल जाती है। वैसे ही हमें हमारी कॉन्सियसनेस ही बदलनी है। बाकी, हमारे हठ, मान, ईर्ष्या के भाव संत कब सब निकाल देंगे–पता भी नहीं लगेगा। वो सब सॅटिंग करते ही रहते हैं। उन्होंने जो कुछ सॅटिंग करा होगा, उसमें हम कोऑपरेट नहीं होंगे, तो हमारा टाइम बिगड़ेगा–पीरियड बिगड़ेगा। फ़ज़ूल में हम टेन्शन महसूस करते रहेंगे। गुणातीतानंदस्वामी ने इस बात को अलग ढंग से समझाया है–'सहु प्रकृतिने आधीन वर्ते छे,' हमें संत के आधीन वर्तना है। यहाँ स्वामी ने एक बात कही है कि आ छोकरा दोड़े छे। उन्हें एकदम रोक कर पूछोगे–क्यों दौड़े? कहेगा 'एम ज'। ख़ुद को भी देखना; कई बार हम उठ कर चलने लग पड़ते हैं–बिना किसी काम के! कोई काम भी नहीं-कुछ भी नहीं, यूं ही–पता भी नहीं होता कि मैं क्यूं उठा? प्रकृति का ऐसा कितना प्रभाव है कि हमें काबू कर लेती है– हमारे स्थूल तंत्र को ऐसे काबू कर लेती है। बस इस बात से हमें बदलना है कि भई **हमें प्रकृति के आधीन नहीं रहना है, संत के आधीन रहना है; ताकि हमारा प्रॉसेस**

स्मूधली चले-जब तक जीव का शिव न बनें; वर्ना डिस्टर्बन्सिस आया करेंगे। यह समझते-समझते मुझे खूब देर लग गई, पर ख्याल में आ गई कि कैसी बात स्वामी ने लिखी है और इसलिए आप लोगों के पीछे पड़ा रहता हूँ।

...तो हम अभी ये टर्न लें कि **हम अपने मन का संग न रखें। साधु के कहने में रहें, उसके कहने पर गौर करें।** बाकी, इन सब ने बात करी वो एकदम सही है। ओहो! इन बाउन्ड्रीज के अंदर क्या चीज है? और... बाहर क्या चल रहा है? मैंने एक इन्सीडन्स टी.वी. पर देखा। मैं विचार में पड़ गया कि क्या ऐसे भी आदमी होते हैं? एक आदमी के मकान में नीचे किरायेदार रहता था। उसका डेढ़ साल का लड़का नीचे मकान मालिक की बाईक को टच कर रहा था। इतनी-सी बात पर उस आदमी के दिमाग़ का पारा सातवें आसमान पर चढ़ गया। नीचे आकर उसने वो डेढ़ साल के लड़के को जमीन पर इतना पटका कि वो मर गया! ये कहानी नहीं है, टी.वी. पर दिखाई घटना है। देखो, बाहर कैसी पाशविक वृत्ति है–हैवानियत है! जबकि यहाँ बड़े से लेकर छोटे–सब एक अलग कॉन्सियसनेस में जीते हैं। ये बहुत बड़ी चीज है और ये सारा प्रभाव, मैं हमेशा कहता हूँ न, कि यहाँ जमीन पर काकाजी उस दिन ऐसा कुछ कर गए-उसका प्रभाव है। मेरी ऐसी बातों का आपको भरोसा नहीं आता होगा।

पर, महाराज का प्रसंग है–'दादाखाचरना बीड़नुं माहात्म्य'। दादा खाचर का 'बीड़' यानि– जहाँ खेत की तमाम फसल इकट्ठी करके रखी हो, वो जगह। दादाखाचर की वो जो जगह थी, उसकी महिमा महाराज समझाते हैं। महिमा की वो जो सारी बातें महाराज ने तब करी थीं, अब हर एक को भीतर में बैठ जाएँगी कि महाराज जो बोले थे, वो एकदम सही बात है। पर, उस समय जब महाराज ने ये बात करी, तब किसी ने मानी होगी क्या? तब तो ऐसा हुआ होगा कि महाराज तो हमें खुश कर रहे हैं–महाराज मूर्ति दे रहे हैं, बड़े संत ऐसी ही बातें करते हैं वगैरह। महाराज बीड़ में गए थे, वहाँ बैठे थे। एभलखाचर बोले कि यह जगह दादा के नाम करी है, यह इसकी है और इसी जगह पर आप आए हो। जैसे अपना फ्लॅट होता है, तो हम कहते हैं न मेरे तीन लड़के हैं, आज आप जिस फ्लॅट में आए हो, वो इस लड़के के नाम करा है। फिर एभलखाचर बोले कि आज यह जगह पावन हुई, बाकी यहाँ तो हम मजे मारते रहते हैं; चरस वगैरह–महाराज आपको क्या बताएं? आपको बताने जैसा नहीं। हमारे ऐसे सब कारोबार यहाँ चलते रहते हैं। दरबार में आपके सामने बड़े सयाने होकर बैठते हैं, यहाँ हमारा अलग ही धंधा है। पर आप यहाँ पर बैठे, तो अब यह जगह पावन हो गई। एभलखाचर ने यह भी बताया कि–आपके बारे मेरे कान यहीं भरे थे। महाराज ने वो सारी बातें सुनी-अनसुनी करी और बोले–छोड़ो इन बातों को, बोलो तुम्हारी कितनी हद है? कहाँ तक की जगह है?

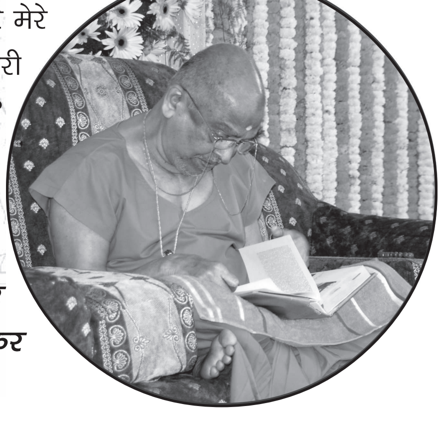

...फिर महाराज ने कहा–

'ये जगह कितनी पवित्र है, वो तुम्हें नहीं पता। धरती का सिर है–यह 'गढ़ड़ा'! वैराट कि जिसमें से सारे अवतार प्रगट हुए, उनके विश्राम करने की ये जगह है। यहाँ आकर लोग आस्था से बैठेंगे।'

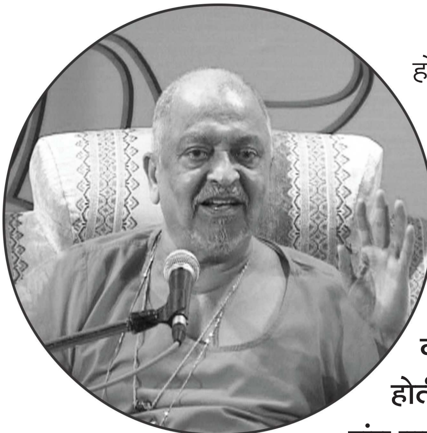

आज ये सारी बातें हर एक को एक्सेप्ट होंगी, पर उस समय मानी होंगी क्या? अब तो इस धरती की – गढड़ा की धूल को सब सिर पर चढ़ाते हैं। महाराज बोले भी थे – यहाँ तो हम आज आए हैं, आते भी रहने वाले हैं, काफी टाइम आएंगे और ऐसे संतों के चरणों की रज से इसकी महिमा और बढ़ती रहेगी।

ये बात भी हमें समझ नहीं आती है। **हम परिक्रमा करते हैं न? इससे अपने तो चक्कर कटते जाते हैं, अपना पुण्य का प्रभाव बढ़ता जाता है; साथ-साथ यह जगह भी चार्ज होती है।** ये बातें पूरी सायन्टिफीक हैं। **'मंत्रशक्ति' में लिखा है कि मंत्र का रटन करने से हमारे भीतर ऊर्जा तो आती ही है, पर मंत्र इट सेल्फ भी चार्ज होता रहता है।** इन जगहों का भी ऐसा है। और तो और, इसे चार्ज करने के लिए ऐसे संत भी विचरण करते हैं। **हम तीर्थ में जाते हैं, हमारे पाप धोने के लिए। संत तीर्थ में जाते हैं, उस तीर्थ को चार्ज करने के लिए।**

महाराज बोले कि यहाँ फंक्शन करने जैसा है। देखो ये सारी बात मैं इसलिए कहता हूँ, ऐसे संत जब ये सारी बातें करते हैं, तब हम इनके साथ के लगाव – प्रेम के कारण बोलते नहीं; खुश भी होते हैं, लेकिन उसकी सच्चाई जीव में बैठती नहीं। अगर बैठी हो, तो वो आशीर्वाद हम झेल पाएंगे।

काकाजी ने एक बात करी है – ***'ये दिल्ली का सॅन्टर आखा संप्रदायमां अनोखुं थवानुं छे।'*** गुणातीत समाज की बात नहीं करी, सारे स्वामिनारायण संप्रदाय के अंदर! काकाजी के कितने बड़े आशीर्वाद हैं? मैं क्या समझता हूँ कि ऐसे संत का संकल्प – सत्पुरुष का संकल्प 'महाकाल'! 'महाकाल' आए, वो भी उसको हटा नहीं पाएगा। सो, ये होगा तो सही, लेकिन हम इसको नहीं झेलेंगे, तो दूसरे झेल लेंगे। हम फिर वैसे के वैसे सड़ते रहेंगे। ये यज्ञप्रियस्वामी ने एक दिन बहुत अच्छी बात करी। शास्त्रीजी महाराज ने नंदाजी को आशीर्वाद दिए थे –

'दिल्ली जाओ, स्वामिनारायण का संदेशा फैलाना; दिल्ली की गद्दी पर बैठोगे... जैसा महाराज मेरा सुनते हैं, वैसे आपका सुनेंगे।'

अपने आदर्शों के अंदर – प्राइम मिनिस्टरशिप की खेवना में कह लो, टाइम नहीं मिला और नंदाजी को वो ध्यान नहीं रहा। लेकिन, वो काम फिर काकाजी ने पकड़ा और वो आशीर्वाद हम सबको दिलवाए। पर, आज ये काकाजी के जो आशीर्वाद हैं, उससे हम कोरे न रह जाएँ। उन्होंने जो चाहा है, वो काम तो होने वाला ही है और इसके लिए – जैसे मैंने बात करी – **हम अपने प्रकृति के भावों से अलग होकर संत के साथ जुड़ जाएँ, तो होगा।** कोई कहता है कि मुझे समझ नहीं आता है, इस बात में तो माल ही नहीं है। समझ में सब आता है, पर हमें करना नहीं है। आज छोटे-छोटे बच्चे भी समझने लगे हैं कि ये संत कहें, वो करना है। भले समझदारी भी नहीं होगी, लेकिन हमारे पूर्व के संस्कार हैं – जो इस चीज का हमें ख्याल दे देते हैं। एक बात भी समझ के रखना, हम ये जो गेट के अंदर आते हैं, वो एक-एक अवतार कोटि से तो खूब बड़े हैं। ये मेरी बातें भी गप्पे जैसी लगेंगी, पर इस बात की सच्चाई को मानें और... मौका हम चूके नहीं – ऐसी आज के दिन प्रार्थना।

7 मार्च 2009, ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज का स्वधामगमन दिन

प.भ. प्रभाकरजी (दिल्ली)

...गुणातीत समाज के लिए 7 मार्च–एक बहुत ही पवित्र दिन! मुझे याद है 1986 में काकाजी ने जब शरीर छोड़ा, तो उनसे जुड़े हरिभक्तों को उन्होंने कुछ न कुछ इन्डीकेशन दिया ही था कि कुछ हुआ है... जिस दिन काकाजी ने शरीर छोड़ा, तब सुबह आठ बजे ही मैं ऑफिस से अपने कुछ-किसी काम के लिए वापिस घर आया था। घर आकर छाया से मैं बात कर ही रहा था कि छाया के गले से काकाजी के पेन्डन्ट का प्लास्टिक कवर अपने आप गिर गया। बाद में जब यह घटना सुनी, तो ख्याल पड़ा कि वह समय यही था जब काकाजी ने शरीर छोड़ा। ऐसा कई जगह हुआ। साहिबाबाद में प.भ. संतोष मेहरोत्राजी के घर पर प.पू. काकाजी की मूर्ति का कांच टूट गया। बाद में सारी बात सामने आई कि जहां कहीं भी कुछ हुआ था, काकाजी ने एक इन्डीकेशन जैसा दिया था।

काकाजी की बात जब हम करते हैं, तो उनकी सारी बातें याद आती हैं। काकाजी को मैंने एक बार अपनी सिस्टर की ट्रांस्फर के प्रॉब्लम के बारे में ऐसे ही कहा था। मुझे ऐसा नहीं था कि ये काम होना ही चाहिए। दोबारा करीब दो महीने के बाद जैसे ही मैं काकाजी के सामने आया, तो काकाजी ने कहा–तेरी सिस्टर का काम हो गया क्या? मैं तो सोच में पड़ गया कि काकाजी के सामने इतनी बातें आती थीं और उसमें काकाजी का यह याद रखना कि मेरी सिस्टर का ट्रांस्फर हुआ या नहीं! यूँ, **काकाजी तो सामने वाला सोचे, उससे पहले उसका जवाब अपने आप ही दे देते थे।**

काकाजी के बड़प्पन की बातें हम दिल से करने जाएँगे, तो जो थोड़ा बहुत भी अनुभव हुआ होगा वह याद आ जाएगा। आख़िरी बार मैं काकाजी से 26 जनवरी '86 को ही मिला था... उस समय भी काकाजी ने ऐसी स्मृतियां दी थीं। सोखड़ा में काकाजी की मालिश कर रहे थे तब और जब विद्यानगर गए तब भी–काकाजी ने एक बात रिपीट करी–

'मैं अभी भी चार जनों को ऐसे मार दूँगा। फिर मुझे ले जाने के लिए चार जने चाहिएं। अब मैं नैपथ्य में से काम करूँगा।'

काकाजी जब भी सभा में बैठे होते, तो एकदम बोलते–

चलो, बोलो–हे महाराज, हे स्वामी, हे शास्त्रीजी महाराज, हे योगीजी महाराज, हे काकाजी, हे पप्पाजी, हे स्वामिजी, हे प्रत्यक्ष स्वरूपों, मेरे अंदर जहां धबक-धबक होता है, वहाँ आप अखंड साक्षात् विराजमान हो। मेरे सामने आए हुए मुक्त को ब्रह्म की मूर्ति मानें...

ये सारी बातें काकाजी के साथ एक लय में हम बोलते थे। लेकिन उस समय हम समझते नहीं थे कि काकाजी क्या कह रहे हैं? आज वो सोचते हैं, तो ख्याल आता है कि **सच में हमारे सामने आए हुए व्यक्ति या हरिभक्त को ब्रह्म की मूर्ति हम मानते हैं क्या?** जब कभी वो ख्याल आता है, तो लगता है कि **हम कहीं न कहीं इस बात को सैद्धांतिक रूप से मान नहीं पाए।** मुझे कई बार होता है, अरे! ये ऐसा है, पर उस समय क्यों नहीं माना जाता कि ब्रह्म की मूर्ति है या भगवान का स्वरूप है। **वो मान लें, तो किसी का अभाव या दोष तो आने वाला ही नहीं है।**

आज का आया हुआ हो या पहले का आया हुआ हो; पर गुरुजी कहते ही हैं न कि हम सब पूर्व के समय से साथ में आ रहे हैं। हम किस रूप में थे, वो भले ही हमें नहीं पता; लेकिन, कितने जन्मों से काकाजी के साथ में – ऐसे स्वरूपों के साथ में तो आ ही रहे हैं। कोई न कोई कसर, कुछ न कुछ हममें रह जाता है। हम फिर से लाइन में लगकर दोबारा आ जाते हैं। काकाजी कहते थे –

तुम फेल हुए हो, तब भी हमारे कॉलेज में एड्मिशन मिलता है; जीरो मिला हो, तब भी एड्मिशन मिलता है।

एड्मिशन तो हमारा कन्फर्म है। पर, तकलीफ ये है कि **गुरुजी बोलते हैं – हमारा स्टान्डर्ड बहुत ऊँचा है। हमें वे बनाना भी वैसा ही चाहते हैं। लेकिन कहीं न कहीं हम भी अड़ जाते हैं।** सोचते हैं –

ये फार्मूला हमें जँचता नहीं है। तुम भले कहते हो, पर हमारे दिमाग़ में फिट नहीं होता।

इसको हम 'इन टोटालीटी' एक्सेप्ट नहीं करते। कहीं न कहीं हम में एक मायिकभाव है, जो हमें इस बात को 'इन टोटालीटी' एक्सेप्ट नहीं करने देता।

काकाजी हमें कई बार कहते थे –

'आज तक का सब माफ, लेकिन फिर गलती नहीं करना।'

लेकिन हम वही गलती दोहरा देते हैं। आज – सात मार्च को काकाजी के चरणों में, गुरुजी के चरणों में यही प्रार्थना है जो कुछ भी हमने करा, हमने जानबूझ कर भी किया – क्योंकि मैं ये नहीं मानता कि अनजाने में ही – कई बार तो हम जानबूझ कर भी करते हैं। तो जो भी हमने करा, पर पता नहीं - अंदर से लगता है कि आज का दिन ऐसा है कि जो हम मांगेंगे – दिल में सोचेंगे, वो सब कुछ हो जाएगा। तो, आज के दिन **हम दिल से ठान लें** कि काकाजी ने इस रास्ते चलने के लिए हम सबको इकट्ठा किया है, तो जैसे एक राजा गद्दी पर जब बैठता है, तब सारे कैदियों को छोड़ देता है; वैसे ही, हम इस मन के, स्वभाव की कैद – बंधन से छूट कर – जैसे काकाजी कहते थे – *गुरु राज्य में अब प्रवेश कर जाओ* और... जैसे गुरुजी बात करते हैं, गींगे के जन्म में राजा को पता था कि मैं गींगा बना हूँ और गंदी नाली में पड़ा हूँ, पर उसको डर था कि बस बाहर निकलते ही मुझे मार देंगे और उसको गटर में ही मजा आने लगा था; पर, हम उसे (मन को) छोड़ दें – उसे हम छोड़ पाएं, जो कि हमारे बस की बात नहीं है, पर गुरु की कृपा होगी और ऐसा कुछ होगा हम में, तो हम छोड़ पाएंगे। तो, आज के दिन **अंतर मन से, सब छोड़ के, जो काकाजी एवं गुरुजी की इच्छा है – 'गुरु राज्य में प्रवेश करें' – वो कर पाएं** यही अंतर की प्रार्थना।

प.भ. महेन्द्र जयस्वालजी (जगरांव)

करोड़ों धन्यवाद प.पू. काकाजी महाराज को जिन्होंने हमें अपनी गोद में बिठाया, ऐसा सत्संग दिया, ऐसा समाज दिया, ऐसे गुरुजी दिए। 1982 की जून में जब मैं फर्स्ट टाइम काकाजी महाराज के दर्शन करने लुधियाना चोपड़ा साहब के घर गया, तो काकाजी नाश्ता कर रहे थे। बाहर बैठे सेवक ने कहा अभी नहीं, बाद में मिलना; पर, मैंने दरवाजा खोला ही था कि काकाजी बोले – आओ, आओ और... मैं अंदर गया; तो बोले – ये प्रसाद लो। परांठा दिया और फिर केले का प्रसाद दिया। फिर अंतर्यामी रूप से बोले – तुम जिस काम के लिए आए हो, वो काम मेरा बाप – योगी महाराज ठीक तीन महीने बाद करने वाला है। आपको बस इतना ही काम करना है कि – बस में जाओ, ट्रेन में जाओ, कहीं भी जाओ, आप पांच बम्बावाले को याद करना। **आपका टेलीफोन हॉटलाइन**

से अमेरिका में डायरॅक्ट मुझे लगेगा। मैं एकदम हिल-सा गया कि ऐसी बात हो सकती है क्या? फिर सत्संग सुना और... ऐसे चलता रहा। फिर मेरी सर्विस की प्रॉब्लम थी। सातवें दिन एम्प्लॉयमेन्ट एक्सचेंज से मेरा कार्ड निकला। वो टॅम्परिरी पोस्ट थी... फिर भी इन्टरव्यू वगैरह दिया! पन्द्रह दिन बाद मुझे जॉइन करना था, लेकिन मैं गया ही नहीं। मैंने सोचा कि मैं अपना बिजनेस करूँगा। लेकिन एक पड़ौसी डॉक्टर के कहने पर मैं गया और वहाँ सर्विस करनी शुरु कर दी। फिर तीन महीने बाद काकाजी अमेरिका से आए। बाई चान्स गुरुजी ने कहा कि काकाजी को लेने जाओ। मैं वहाँ गया और काकाजी मिले। उन्होंने पूछा – क्या हुआ? मैंने कहा – हो तो गया, मगर टॅम्परेरी है। बोले – कोई बात नहीं, महाराज तो अपने हैं। वहाँ से नंदाजी के घर होते हुए मंदिर आने के बाद सत्संग वगैरह हुआ। मुझे ऐसे फील हुआ कि मेरी कोई खोई हुई चीज मुझे मिल गई!

मैंने सुना था कि काकाजी धुन बहुत करते हैं। मुझे मुंबई जाने का मौका मिला, तब मैंने सोचा कि आज देखते हैं। रात के एक बज कर चालीस मिनट पर मैंने (ताड़देव में) काकाजी का रूम थोड़ा खोला, तो काकाजी की धुन वैसी ही चालू थी! तब मुझे हो गया कि वाकई जो सुना था, वो ही करते हैं...

फिर काकाजी जगरांव आते थे... तब कमल ने मेरे सामने मांगा था – काकाजी! मेरे पास नोट बहुत होने चाहिएँ।

काकाजी बोले – *जाडिया, तुमने हमारी सेवा बहुत की है, जाओ – तुम्हारे पास लोग पैसा फेंक कर जाएँगे।*

ऐसे ही एक टेईलर की मिसिस थी। उसको सत्रह साल हो गए थे, बच्चा नहीं हो रहा था। वो सोच कर ही आई थी कि काकाजी बोले – *बहनजी आपको बाबा चाहिए या बेबी चाहिए?*

वो बोली – *महाराज जो भी हो जाए।*

काकाजी बोले – *अच्छा! अगले साल आपके बाबा ही होगा।*

वो लड़का अभी भी मौजूद है, पटियाला में टेईलर का काम करता है।

ऐसे ही, एक बार जगरांव के आदर्श स्कूल में सभा हुई थी।

सभा के बाद (मुझे बुला कर) बोले – *इधर आओ, तुम्हें मुझ पर कितना भरोसा है?*

मैंने कहा – *काकाजी, दो सौ परसेन्ट।*

तब बोले – *ये मुकुंदस्वामी की सेवा करना, अगर न हो सके तो, इनको दो हाथ जोड़ना।*

मैंने कहा – *काकाजी, ऐसे कैसे आपने कहा।*

फिर बोले – *वो बात तो सही है,* ***दादु का तो देना बैंक है।*** *ये* (गुरुजी जो थोड़ी दूर ही खड़े थे।) *जितना नीचा दिखता है, उतना अदंर को है। इसको बड़े-बड़े संत पहचान नहीं पाएंगे।*

उस टाइम मैं थोड़ा नया भी था; कुछ कम समझ में आता था। आज जब मैं सोचता हूँ, तो पता चलता है कि उस टाइम पर काकाजी क्या कहते थे! उसका मतलब क्या था, वो अब पता चलता है।

7 मार्च 1986 की शाम को जब काकाजी के शरीर छोड़ने का मॅसेज मिला था, तब मुझे ऐसा गहरा शॉक लगा कि तीन-चार दिन तो मुझे सुध-बुध नहीं रही। ये हुआ क्या? उसके बाद मैंने सारी रात काकाजी की सभा में जो-जो बातें हुईं थीं, वो सब याद करना शुरू कर दिया। तब याद आया कि दिसंबर 1985 में **गुरुबख़्शजी के घर पर** काकाजी ने इंडीकेशन दिया था –

इसके बाद मैं पंजाब नहीं आऊँगा। जिसको मिलना हो, वो मुझे दिल्ली आकर मिले।

मगर हम लोग नहीं समझ पाए कि यह इन्होंने इंडीकेशन दिया था। **उनके कहने का मतलब यही था कि अब मैं गुरुजी द्वारा आपको मिलूँगा!**

प. भ. दालिया साहेब (दिल्ली)

7 मार्च 2009 से 7 मार्च 1986 – काकाजी को स्वधाम गए तेईस साल पूरे हो गए। अभी एक हफ्ते पहले ही गुरुजी से बात हो रही थी। मैंने कहा कि ये तेईस साल कहाँ चले गए, पता नहीं चला। लेकिन **7 मार्च, 1986** का दिन मुझे बराबर याद है। **वो फिल्म मेरे दिमाग़ में एकदम बैठी हुई है।** सुबह पौने नौ – नौ के बीच फोन आता है कि काकाजी को हॉस्पिटल में ले गए हैं और... नौ तीस या पैंतीस पर फोन आया कि काकाजी स्वधाम गए। वो पूरा दिन, वैसे तो गुरुजी ने इमीज्येट्‌ली कई भक्तों की प्लेन की टिकिट बुक करने के लिए आदमी भेज दिया था। फिर लिस्ट बढ़ गई, तकरीबन पैंतालीस लोग हम यहाँ से जाने के लिए तैयार हो गए थे। उस टाइम सकलानी साहेब रेलवे में बहुत अच्छी पोस्ट पर थे। तो, उन्होंने राजधानी में स्पेशियल कोच जॉईन्ट करवाया और हमारी पैंतालीस टिकिटें कन्फर्म करवा दीं। उस टाइम स्लीपर कोच नहीं था, चेयर कार थी। पूरी रात कोई सोया नहीं था। गुरुजी व दीदी–सब हमारे साथ थे। रात को ही हमें रतलाम स्टेशन पर मॅसेज मिला कि आपको वडोदरा उतरना है; हमारी टिकिट मुंबई की थी। रतलाम स्टेशन पर स्टेशन मॉस्टर खुद आकर बोल गए। तब तक हमें पता नहीं था कि काकाजी की अंत्येष्टि मुंबई में होनी है या गुजरात में होनी है। ये मैं आपको ब्रीफ में बता रहा हूँ; पर, तब की पूरी की पूरी फिल्म मेरे दिमाग़ में है। **सुबह साढ़े तीन बजे** के करीब हम **वडोदरा** स्टेशन पर पहुँचे। वहाँ **हरिप्रसादस्वामिजी खुद हमें स्टेशन पर लेने खड़े थे।** तब हमें पता नहीं था कि कहाँ जाना है? स्वामिजी के साथ हम हरिधाम गए। वहाँ पता चला कि काकाजी का अग्निसंस्कार आज शाम को विद्यानगर में होना है। हरिधाम में हम इकट्‌ठे हुए थे। करीब दोपहर को डेढ़ बजे जीप में बिठाए हुए काकाजी का पार्थिव शरीर हरिधाम आया। तब हमने दर्शन किए, चरण स्पर्श किए। हरिधाम में मंदिर की मूर्तियों के सामने बाहर काकाजी की जीप रिवर्स करके खड़ी करी थी; मानो काकाजी को महाराज का दर्शन हो रहा था।

उसके बाद वहाँ से जीप विद्यानगर के लिए चल पड़ी और **स्वामिजी ने** जीप जहाँ खड़ी थी, वहाँ खड़े रह कर उन्होंने स्वयं एक क्रॉस मार्क किया। **क्रॉस मार्क करके राउंड किया और बोला था–**

'यहाँ पर काकाजी की देरी बनेगी।'

फिर दोपहर को ही करीब साढ़े तीन बजे हम विद्यानगर पहुँच गए थे। काकाजी का शरीर प्रासादिक पेड़ के नीचे रखा हुआ, पैर लंबे करा पोज़ था। सब ने पूजन किया, हार चढ़ाए। वहाँ पर एक छोटी-सी सभा हुई थी। पप्पाजी, स्वामिजी, अक्षरविहारीस्वामिजी, साहेब और गुरुजी भी थे। सब ने एक ही बात करी कि काकाजी ने अपना कार्य पूरा किया और स्वधाम गए...

मैं एक फ्लॅशबेक लेता हूँ। 1984 में **हरिप्रसादस्वामिजी की गोल्डन ज्युबीली** 'आणंद' में मनाई गई थी। तब एक बड़े ग्राउंड में शाम को सभा करी थी; वहाँ काकाजी ने इंग्लिश में प्रवचन किया था। गुरुजी ने तो काकाजी को बाद में पूछा भी था कि आपने इंग्लिश में प्रवचन किया, तो ज्यादातर पब्लिक को तो समझ में आया ही नहीं होगा। प.पू. काकाजी तुरंत बोले– ***हम जो स्टेज पर बैठे थे, उनके लिए ये था।***

मेरा कहने का मतलब यह है कि **काकाजी को अंतिम समय तक एक ही ख्वाहिश थी कि पूरा गुणातीत समाज एक होकर जिए।** उनकी ख्वाहिश तो यहाँ तक थी कि प्रमुखस्वामिजी भी साथ हों...

पता नहीं, काकाजी ने शरीर कैसे छोड़ा? कुछ भी नहीं था, वे खुद तैयार होकर, कार में बैठकर हॉस्पिटल गए थे। वो भी इसलिए कि जिस हॉस्पिटल में उनको दाखिल करने के लिए कहा, वहाँ योगीजी महाराज ने शरीर छोड़ा था। उनके मिशन को अब गुरुजी लेकर चल रहे हैं। हम देखते हैं लास्ट तीन-चार वर्षों से गुरुजी का मिशन यही है कि हम सब एक होकर जिएं।

काकाजी के इन्डीकेशन की बात प्रभाकरभाई ने भी करी और जगरांव वाले भाई साहब ने भी करी। ऐसा एक इन्डीकेशन हमें भी मिल गया था। **1986** में गुणातीत द्विशताब्दी के लिए हम जब सोखड़ा गए थे, तब 3 फरवरी का फंक्शन हमने **26 जनवरी** की मॉर्निंग में **विद्यानगर** में मनाया था। दोपहर को फंक्शन पूरा होने के बाद जब हम दिल्ली आने के लिए निकले, तो पुरानी **'प्रभुकृपा'** में–जहां पप्पाजी रहते थे, वहाँ बाहर आकर काकाजी हमें हाथ हिला कर 'टाटा' कर रहे थे। जब तक हमने पूरी गली क्लीअर नहीं करी, मतलब–'गुणातीत ज्योत' वाले मोड़ से जब तक हम मुड़े नहीं, तब तक वे हाथ हिलाते रहे थे।

अंत्येष्टि के टाइम पर भी एक ऐसा प्रसंग हुआ। जब काकाजी का अग्नि संस्कार किया, भरतभाई और घनश्यामभाई ने जैसे ही अग्नि दी, तब गुरुजी के मुँह से एकदम बड़ी जोर से चीख निकल गई थी। इसे पप्पाजी ने कहा– *ये 'शक्तिपात' हुआ; शक्ति ट्रांस्फर हुई गुरुजी में।*

ऐसे तो चमत्कार कहो या आशीर्वाद कहो–मेरे कई प्रसंग हैं। इतने प्रसंग मेरे जीवन में हुए हैं कि आजकल आम जनता में जो माहौल है, उसे देख कर लगता है कि हम तो कितने भाग्यशाली हैं कि गुरुजी की गोद में बैठे हैं। हमें निश्चिंतता है। किसी चीज के बारे हमें ऐसा नहीं है कि कल क्या होगा? यहाँ बैठे सारे हरिभक्तों को भी यूं लगता होगा। **हमें ऐसे संतों का जोग मिला है कि हम तो निहाल हो गए।** बाकी आपके सर्कल में–उनकी पर्सनल लाइफ़ में ढूंढना, तो पता चलेगा कि हर आदमी अंदर से खोखला हो चुका है। हम हमारे घर में चार आदमी को संभाल नहीं पाते। गुरुजी यहाँ बैठे इतने बड़े समाज को संभाल रहे हैं और मैं कहता हूँ कि हर एक के दिल में ऐसा होगा, चाहे बहनें हों या भाई हों कि–गुरुजी मेरे हैं, गुरुजी मेरी बात सुनते हैं या गुरुजी मेरा काम करते हैं। ये क्यों होता है? **काकाजी हाजराहजूर दिल्ली में प्रकट हैं और गुरुजी में रहकर काम करते हैं।** ये शक्ति ऐसी है, ये प्रमाण है इस बात का। मैं काकाजी के साथ में छः साल रहा। काकाजी की गाड़ी भी मैंने ड्राइव करी थी, मेरा अहोभाग्य था। उसके बाद **हमें, हमारी फेमिली को गुरुजी ने इस तरह संभाला है कि हमें काकाजी का अनुभव कहो, काकाजी से हमारी जो बातें हुई थीं, वो गुरुजी ने पूरी करी।** मैं गुरुजी को एक ही प्रार्थना करता हूँ कि मैं इस सत्संग में इतने साल टिक गया हूँ, बस अपने चरणों में हमेशा रखना और मैं जो कई दफे जिस तरीके से बिहेव करता हूँ, वो मेरा स्वभाव निकाल देना–मैं आपका ऋणी रहूँगा।

प. भ. नरेन्द्रजी (जगरांव)

आज का दिन, 7 मार्च–हम सभी जानते हैं कि काकाजी इस दिन स्वधाम पधारे थे। और... इस मंदिर के इतिहास में आज का 7 मार्च शनिवार, 2009 एक विशिष्ट दिन हो गया है, क्योंकि हम सब हरिभक्त 48 घंटे के लिए काकाजी की 'पुष्प समाधि' की अटूट और अखंड परिक्रमा करने के लिए यहाँ एकत्रित हुए हैं। काकाजी ने कहा था–*'ये मंदिर अनोखा होगा।'* ये बात तो है ही और ये महसूस हो रहा है कि इस मंदिर की हर एक चीज

अनोखी है। **जैसे भगवान स्वामिनारायण के मंत्र को लीविंग, फोर्सफुल–जीवंत मंत्र कहा गया है, यहाँ जो काकाजी की समाधि है–ये भी अतुल्य है**–दूसरी समाधियों जैसी नहीं है। इसकी तुलना किसी से नहीं की जा सकती।

ये समाधि जीवंत है। आप कहेंगे कि ये कैसे? जहाँ तक मुझे पता है ये 48 घंटे की परिक्रमा की बात शायद इसलिए रखी गई कि पू. गुरुजी व पू. दीदीजी के स्वास्थ्य के लिए हम सब कामना करें-प्रभु से प्रार्थना करें, क्योंकि आज हमारे कर्णधार पू. गुरुजी, पू. दीदी हैं। मैं भी आप सभी की ओर से भगवान स्वामिनारायण, शास्त्रीजी महाराज, योगीजी महाराज और काकाजी महाराज से प्रार्थना करता हूँ कि गुरुजी एवं दीदी सदैव हमारे बीच विद्यमान रहें और हमारा पथप्रदर्शन करते रहें।

...मैं कब का यह सोच रहा हूँ कि क्या हमारी प्रदक्षिणा कुछ लाभ कर सकती है? लेकिन गुरु की बातें बड़ी रहस्यमयी होती हैं। हम सब प्रदक्षिणा यहाँ कर रहे हैं। कोई सौ कर लेगा, कोई दो सौ कर लेगा, कोई छः सौ कर लेगा, कोई आठ सौ कर लेगा। जब मैं प्रदक्षिणा कर रहा था तो मुझे ये लग रहा था कि जैसे काकाजी कहते–*तुम एक कदम बढ़ो, मैं दस कदम आगे आऊँगा।* हो भी तो ऐसा रहा है कि **हमने दो सौ, चार सौ, तीन सौ, सौ प्रदक्षिणा कर लीं, पर उसके साथ 84 लाख (योनियों) का जो चक्कर है, दरअसल तो वो कट रहा है।** बस, गुरुजी और दीदी तो ये बहाना बना कर हमारा कल्याण कर रहे हैं–ऐसा अनुभव हो रहा है। जब से मंदिर में प्रदक्षिणा करने का ये प्रोग्राम हुआ, तभी से मेरे मन में ये बात घर कर गई थी और उत्साह मिला, प्रेरणा मिली कि जरूर जाना है।

कल जैसे गुरुजी ने गुजरात एपार्टमेन्ट्स में कहा और नाम तो उन्होंने काकाजी, पप्पाजी, स्वामिजी का लिया कि साधु को समझना बड़ा मुश्किल है। **जो साधु भगवान को धारे बैठे हैं, वे अपने आप को प्रगट ही नहीं होने देते।** और... हम इतनी बुद्धि नहीं रखते कि इनकी पहचान कर सकें। आज ये बात हमें खल भी रही है। क्योंकि जब काकाजी के हमने दर्शन किए-उन्हें देखा, तो जैसे यहाँ एक बार फंक्शन में रामदेवजी बोले थे कि कई बार ऐसे ही दर्शन कर लेते हैं, जैसे कि–ऐसे बाल हैं, ऐसा उनका चेहरा है; लेकिन अंदर से किसी को देखेंगे, तभी हमें कुछ मिल सकता है। आज लगता है कि काकाजी के साथ तो रहे, बड़े प्रसंग खड़े हुए, लेकिन काकाजी को समझना कोई सरल बात नहीं थी। फिर भी आज हम बड़े अनुग्रही हैं कि वो कार्य गुरुजी अपनी बातों से सरल करके, प्रॅक्टिकल रूप में हमें बता रहे हैं। उस मार्ग पर हमें ले जा रहे हैं, जिस पर काकाजी हमें ले जाना चाहते थे। **काकाजी गुणातीत समाज के ओरिजीनेटर, पायोनियर, वाइटल फोर्स हैं। तो वही वाईटल फोर्स काम कर रही है; स्थूल रूप में न सही, सूक्ष्म रूप में। आज भी वो साकार ब्रह्म हम सबको रास्ता दिखा रहे हैं।**

जिन्होंने काकाजी के दर्शन किए, उन हरिभक्तों ने कई प्रसंग बताए। अनुभव की बातें तो बहुत हो गईं। लेकिन **आज हमें आवश्यकता है, काकाजी को अमर करने की।** गुरुजी ने पिछली बार आल्फाबेट दी थी–'ए से जेड' तक की। 'ए' का पहला अक्षर ये था–'अनुभव नहीं अनुभूति' और 'एफ' का अक्षर दिया था–'नॉट फ्रेन्डशीप, फ्रेन्डलीनेस'। तो, आज हमें अब ये ख्याल आना चाहिए कि काकाजी हमसे क्या चाहते थे और हम क्या कर रहे हैं? काकाजी के नाम का हमें डंका बजाना है। हमारी माईथॉलोजी में बात आती है कि समुद्र मंथन हुआ। कई पदार्थ निकले; विष और अमृत भी निकला। पर, बंटवारा किन में हुआ? असुरों और

देवताओं में। वही विष और अमृत का झगड़ा था। तो, मैं ये सोच रहा था कि मानव जाति को किसी ने अमृत दिया है क्या? हाँ, **आज के युग में हमारे काकाजी ने गुणातीत समाज को अमृत दिया,** जिसका पान हम आज भी कर रहे हैं और उन्होंने खुद ने विष का पान किया! विष का पान कैसे किया? उन्होंने तिरस्कार झेला; अपने ही समाज से अवहेलना झेली और उधर से चलकर पंजाब, हरियाणा, हिमाचल और दिल्ली को भी अमृत पान कराने आ गए और... **आज हम वो अमृतपान गुरुजी के द्वारा कर रहे हैं।** यूँ, काकाजी हमारे गुणातीत समाज को अमृत देने वाले शिव हैं। वो तो माईथॉलोजी की बात थी, पर आज वो एक शाश्वत् सत्य है। महाराज स्वामी और काकाजी से यही प्रार्थना है कि गुरुजी हमें सच्चा रास्ता दिखाते रहें। हम में कमियां तो होती हैं ही, पर हमें गुरुजी को ज्यादा टेन्शन नहीं देना चाहिए। सत्संग करते हुए भी हम अपने स्वभाव में परिवर्तन नहीं करते।

भगवान कृष्ण के वक्त में भी बंसरी तो बहुत थी, लेकिन एक बंसरी ऐसी थी कि जिसे वे कमर पर लगाते थे या अपने होठों से लगाते थे। यूँ, हरिभक्त तो बहुत हैं, लेकिन **हमें इतना प्रिय हो जाना चाहिए कि गुरुजी हमें अपने नज़दीक ले आएं।** तभी हमारी बात सार्थक होगी और... **वो तभी हो सकता है, जब हम गुरुजी के कहे पर मनन करेंगे और उनकी बातों पर चलेंगे।** हम में सामर्थ्य नहीं है, ये सामर्थ्य प्रभु कृपा से मिलता है। वर्ना हम कुछ बोल भी नहीं सकते – निमित्त भी नहीं बन सकते। आज गुरुजी की कृपा है, तो मैं आपके सामने बोल सकता हूँ। वर्ना एक शब्द मेरे मुँह से निकलने वाला नहीं। ये इन्हीं की कृपा है जो मैं आप सबके दर्शन कर रहा हूँ, आप सबके सम्मुख बोल रहा हूँ। मैं स्वामिनारायण भगवान, काकाजी महाराज को, उनकी दी हुई अनमोल भेंट को फिर प्रणाम करता हूँ और गुरुजी से फिर प्रार्थना करता हूँ कि वो हमें संभाले रखें और हमारी वृत्तियों को बदल दें।

अभी जब समाधि पर वृक्षों से पत्ते झड़ रहे थे और प्रदक्षिणा हो रही थी एवं साथ के साथ वृक्ष के पत्तों को झाडू से साफ किया जा रहा था, तो मुझे लग रहा था कि हमारी खोटी वृत्तियाँ, हमारी बुरी वृत्तियाँ इसी तरह पक-पक कर गिर रही हैं और गुरुजी उसकी सफाई कर रहे हैं और **हमारे बुरे विचारों का डायालिसिस हो रहा है... उनको बड़ी धीमी गति से और प्रेम से गुरुजी चेइन्ज कर रहे हैं।** तो, काकाजी की कृपा से हमें ऐसे महान संत-प्रभु को – काकाजी को धारण किए हुए संत की गोद मिली है।

हमने तो 48 घंटे की अभी प्रदक्षिणा शुरू करी है, लेकिन मुझे लगता है कि **गुरुजी तो 7 मार्च 1986 से काकाजी महाराज की बातें हम तक पहुँचाने के लिए अटूट प्रदक्षिणा कर रहे हैं...** सो, हमें गुरुजी की बातों का मनन करना चाहिए और उनके दिखाए हुए रास्ते पर हमेशा चलना चाहिए और मेरी प्रार्थना है गुरुजी हमें सामर्थ्य दें, अपना प्रेम देते रहें एवं हमारी गल्तियों को क्षमा करते रहें।

प.पू. गुरुजी

...मैंने अभी अक्षरस्वामी को जो हार पहनवाया, वो यूँ ही नहीं दे दिया है। आज परिक्रमा का जो सेटिंग हुआ है, उसके रूट में अक्षरस्वामी हैं। मुझे भी नहीं पता था, लेकिन आज ही पता लगा। हम सब ईटेड़ा (गाँव) गए थे। वहाँ सब बच्चे मिल कर अक्षरस्वामी के साथ बैठे थे। आपको ख्याल होगा, पिछली बार मेरे जन्मदिन पर बच्चे मिल कर एल.सी.डी. ले आए थे।

तब, मैंने मज़ाक में कहा था कि अगली बार भी कुछ करना। ईटेड़ा में ये लोग अक्षरस्वामी के साथ बैठ कर आपस में बात कर रहे थे कि इस बार गुरुजी को क्या देंगे। **अक्षरस्वामी ने तब बताया** कि देखो, हम 28-29 मार्च के दिनों में तो काफी बीज़ी जैसे हो जाएँगे, तो इन दिनों ऐसा कुछ करने की बजाय, **इस बार मार्च महीने की 7 तारीख या 13 तारीख जो सेलीब्रेट करते रहते हैं, तब ऐसी चीजों की बजाय हम परिक्रमा-दंडवत् करके महाराज को ऑफर करें, जिसकी बदौलत गुरुजी और दीदी की तबियत अच्छी रहे। ये भावना आनी और विश्वास होना बहुत ऊँची बात है।**

हम एक भजन गाते हैं कि 'प्रार्थना' उन तक-प्रभु तक पहुँचने का एक जरिया है; मतलब प्रार्थना से प्रभु के नज़दीक हम पहुँच सकते हैं। ये लाइन का आईडिया श्री दिनकर जोशी द्वारा लिखी 'कृष्ण' की एक किताब में से मिला था–'कृष्णने पहोंचवानुं सरनामुं, मतलब कृष्ण को पहुँचने का एड्रेस 'प्रार्थना' है। हम प्रार्थना करेंगे, तो कृष्ण के नज़दीक पहुँच जाएंगे। उसमें से ये पंक्ति कम्पोज हुई थी कि प्रार्थना ही उन तक पहुँचने का उपाय है; यही हम सबने आज करा। ऐसा विचार आना बहुत बड़ी चीज है। इसे **'अंतःकरण से पार का विचार'** कहा जाए। बाकी तो चलो गुरुजी के रूम में ये नहीं है, तो ये लगवा दें; गुरुजी को ये तकलीफ होती है, तो ये कर दें। ठीक है, वो भी भक्ति है; लेकिन ये इससे बढ़कर बड़ी बात है। **संतों का यही काम होता है कि अपनी संगत में आए हुए भक्तों को या ऐसे छोटे संतों से जुड़े हुए युवकों को वे समझदारी से ऐसे ट्रेईनअप करें।**

...काकाजी कितने कॉमन लेवल पर हमारे साथ बिहेव करते थे और उस बिहेव से ही वे हमें कुछ सिखा जाते थे। प्रभाकर ने बहुत अच्छी बात करी। थोड़े टाइम पहले मैं एक किताब पढ़ रहा था। उसमें से एक बात याद आ गई कि हम पर किसी ने कोई ऑब्लिगेशन करा हो और वो हम भूल जाएँ, तो हम 'कृतघ्नी' बोले जाते हैं। कहेंगे भी कि भई इसको किए काम की कदर नहीं है। महाराज ने एक विशिष्ट बात करी थी कि **हमसे कोई त्रुटि हो गई हो–गलतियाँ हो गई हों और उसको दिल की सच्चाई से अगर कबूल कर ली हो या एहसास कर लिया हो कि 'आई कमिटेड फॉली'; तब भी दूसरा कोई उसे वही पुराने नज़रिए से देखे, तो वो देखने वाला 'कृतघ्नी' है!**

एक बात खूब समझ कर रखना कि **काकाजी, पप्पाजी, स्वामिजी जैसे गुणातीत सत्पुरुषों की सेरे छाया में हम जो जीवन जीते हैं, वी आर वर्किंग ऑन हाईटॅक स्पीरिच्युआलीटी। ये आर्डीनरी बातें नहीं हैं।** और... ऐसे चैतन्य स्वरूप तो कभी जाते ही नहीं, यह हमारी एक **'कन्विक्शन'** है। बीलीफ नहीं, कन्विन्शन है। उसी प्रकार आज काकाजी का स्वधामगमन दिन–'वे अब भी इस सभा के अंदर बैठे हैं, सुन रहे हैं; भले हमें दिखाई नहीं देते' – यूँ दिल की सच्चाई से हम मानें – यह हमारी उनके प्रति की आस्था कही जाए! बापा के अंर्तध्यान होने के बाद काकाजी हमें कहते थे –

आप, बापा (गुरुहरि योगीजी महाराज) की हाजिरी मान कर वर्तते हो?

वे अखंड हाजिर ही हैं, गए ही नहीं हैं।

अभी भी हम जो यह बात कर रहे हैं, वह वे सुन रहे हैं।
तुम्हें नहीं दिखाई देता, मुझे दिखाई पड़ता है।

मैं इतने दावे से तो नहीं कह पाऊँगा कि काकाजी मुझे दिखाई पड़ते हैं। लेकिन ये कहूँगा कि इन्होंने जो कहा हुआ है, उसके मुताबिक आज भी वो वैसे के वैसे प्रगट हैं। कोई कसर, कोई कमी इन 23 सालों में उन्होंने हमें फील नहीं होने दी। दालिया साहेब ने कहा न कि 23 साल कहाँ गुजर गए, पता नहीं लगा। उनकी एब्सेन्स हमें फील ही नहीं हुई है, उन्होंने हमें उनकी प्रेझन्स हमेशा फील करवाई है।

स्वामिनारायण संप्रदाय की सबसे बड़ी देन ये है, जो अन्य किसी जगह पर नहीं है। स्वामिनारायण की ये 'सुप्रीमसी' है कि उन्होंने ऐसी विभूतियों की परंपरा अखंडित रखी।

आज किसी भी आश्रम में जाओ, तो कभी एक ज्योति झबुकी होगी; तब समाज में 'लीला-लहर', गुले–गुलजार हुआ होगा, पर उनके जाने के बाद ठप्प! अंधेरे जैसा! और फिर... वो समाज को या इन्स्टीट्यूशन को समाज सेवा के जरिए पब्लिक के साथ एक रॅपर्ट बनाए रखना पड़े, क्योंकि उसकी वो स्पिरिच्युअल पोटेन्शियालिटी तो रहती नहीं। यह एक स्वामिनारायण के यहाँ ही कन्टीन्युअस रहेगी... पहले काकाजी या कोई ऐसी बात करते थे, तो मुझे ऐसा लगता कि ये लोग अपनी डींगे मारते हैं– 'हमारा सुप्रीम'। पर, धीरे-धीरे मुझे इन बातों का रहस्य समझ में आया।

जैसे कि मैं कहता हूँ– भगवान भजने के रास्ते जो हम चल रहे हैं, वो खांडानी धार– तलवार की धार पर चलने जैसा है। इधर-उधर हुए, तो फट् से कट जाएँगे। फिर भी **इन स्वरूपों ने तो सुखपाल में बैठकर भगवान भजने की हमें सुविधा कर दी है।** किसी बात की कमी तो इन्होंने रखी नहीं; **हमें अगर कोई दुःख है भी, तो मन से खड़े करे हुए दुःख हैं, बाकी कोई दुःख ही नहीं है...**

...'ब्रह्मनिर्झर' में साहेब के आशीर्वचन आते हैं। पढ़ कर मुझे होता है कि मेरे मन की बातें वेरी ल्यूसिडली–इन ए वेरी सिम्पल वे – साहेब डिस्क्राईब कर देते हैं। यह भी एक कला है। आज ही मैंने किसी से बात करी कि साहेब ने कैसी बात करी कि गृहस्थों के स्वभाव कैसे भी होंगे, लेकिन धन, धाम, कुटुंब-परिवार सब – बिना कोई रिझर्वेशन्स हमारे लिए खोल कर वे रख देते हैं... इन्हें एक ही भावना– भई कुछ भी करो, लेकिन ये संत लोग हम पर खुश रहें और... इसी भावना से हमें भी इनके साथ मर्यादा की आड़ में कोई रिझर्वेशन – अलगाव नहीं रखना चाहिए।

यूँ दो दिन अब हम परिक्रमा कर रहे हैं... **दीदी ने जो यह सारा ऑर्गेनाइज़ किया, तो उनके वचन से हम जितनी ये परिक्रमा करते रहेंगे, उतने हमारे कई कितने प्रारब्ध कटते जाएँगे। हमें बाहर प्रकृति-पुरुष तक के जो चक्कर काटने होंगे, वो सारे अपने आप यहाँ ऐसे टलते जाएँगे –पता भी नहीं चलेगा।** पर, ये एक विश्वास और भक्ति का विषय है, दिमाग़ का विषय ही नहीं है। **ऐसे दीदी के वचन से-बड़े संत के वचन से करेंगे, तो आत्मसत्ता रूप रह कर किया बराबर होगा।** यूँ आत्मसत्ता रूप रहकर हम भजन-भक्ति, आनंद करते हो जाएँ जिससे हमारा आनंद अब कभी जाए नहीं, इतने काकाजी आशीर्वाद दें – ऐसी प्रार्थना।

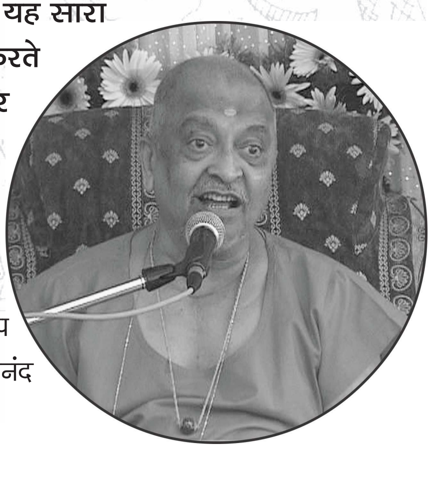

8 मार्च, 2009

प.भ. पुनीतजी (पानीपत)

25 फरवरी से तिथि के मुताबिक, गुरुजी के जन्म दिन का जो सेलीब्रेशन शुरु हुआ, वो 29 मार्च को – जब अपना बड़ा फंक्शन होगा, तब तक जारी रहेगा। यूँ, ऑलमोस्ट हर साल पूरे मार्च महीना ही ऐसा सेलीब्रेशन होता है। हमारे लिए यह बहुत अच्छा मौका है। इसे **'भक्ति उत्सव मास'** कह सकते हैं। वैसे तो गुरुजी की कृपा और परिश्रम से वे हमेशा ही हमें बहुत आनंद में रखते हैं, लेकिन ये एक महीना **हमारे लिए बहुत खास होता है।** हर एक हरिभक्त में एक अलग एक्साईटमेन्ट, एक अलग ही सेवाभाव और एक गरज नज़र आती है। गुरुजी तो अखंड काकाजी के कार्य में लगे रहते हैं। पर, हम लोग अपने-अपने तरीके से, अपनी-अपनी चाल से जो चलते रहते हैं, उन्हें ये एक महीना गोल्डन ऑपॉर्च्युनीटी मिलती है। बिज़नेसवाइज़ देखें, तो भी थर्टी फर्स्ट मार्च को फाइनेन्शियल इयर के हिसाब से क्लोज़िंग होती है।

...लेखाजोखा करेंगे तो उनका (प.पू. गुरुजी का) स्वरूप क्या है, वो तो कोई ही तत्त्व से पहचान सके होंगे। फिर भी, अपने-अपने ढंग से हमने जैसे-जैसे दर्शन किया, वैसे-वैसे गुण हम में आए और वैसी महिमा हमने गाई... आरती में लाइन आती है कि **'प्रगटित पुरुषोत्तम के दर्शन जो भी करे, काल-कर्म से छूटे, वंशसहित वो तरे'** – ऐसी हमें मिले स्वरूप की महिमा है।

पर, हम सत्संग में क्यों आते हैं? जब-जब भी किसी सेवक को दीक्षा दी जाती है, तब-तब गुरुजी से एक लाइन हमेशा सुनी है जिससे कि हम हमेशा जाग्रत रहें – *'मैं यहाँ क्या करने आया था और क्या कर रहा हूँ?'*

यह जागरुकता हम अपने अंदर जरूर रखें। गुरुजी ने एक बार कहा था– *सहजानंदस्वामी के रूप में भगवान प्रगट हुए, ये एस्टाब्लिश हो चुका; गुणातीतानंदस्वामी 'मूल अक्षरब्रह्म' और उनके तादात्म्य को पाई काकाजी, पप्पाजी, स्वामिजी जैसी विभूतियाँ सब गुणातीत स्वरूप हैं, ये भी एस्टेबलिश हो चुका। अब प्रत्यक्ष धाम, धामी, मुक्तों' की हमारी फिलोसॉफी कि मुक्तों में भी उनका दर्शन करें, वो एस्टाब्लिश हो रही है।* अभी यहाँ पीछे प्रदक्षिणा कर रहे थे; वहाँ एक भजन चल रहा था। उसमें एक लाइन आई थी – *प्रभु तमे छो प्राणाधार, बसो म्हारे नैनन में।* उसका अर्थ है कि आप हमारे प्राणाधार हो और मैं आपका अखंड दर्शन करुं। मैंने अपने लिए उसका एक अर्थ ये भी महसूस किया कि सब भक्तों में मैं आपका अखंड दर्शन करूँ। गुरुजी अपनी निगाह से सब में काकाजी का स्वरूप देखते हैं; सबको काकाजी के संबंध से देखते हैं। ऐसे ही मैं भी सबको गुरुजी के संबंध से देखूँगा – दर्शन करूँगा, तो जीवन में कोई झंझट ही नहीं होगी।

शुरु-शुरु में जब सत्संग में आया, तो 1 अप्रैल 1997 को नैनीताल से वापस आते हुए गुरुजी पानीपत होकर आए थे। तब मेरी भावना ऐसी थी कि फर्स्ट अप्रैल को नया एकाउन्ट शुरु करते हैं; उसमें गुरुजी से आशीर्वाद लिखवा लूं। जब गुरुजी उसमें आशीर्वाद लिख रहे थे, तब मुझे ऐसा था कि बिजनेस के लिए आशीर्वाद लिख देंगे। गुरुजी ने वो तो लिखा, लेकिन उससे पहले लिखा–

भगवान, संत और सत्संगी की–प्रगट की निष्ठा पक्की करना। किसी के झंझट में पड़े बिना सुबह और रात्रि को एकचित्त से अपना भजन नियमित कर लेना। तन, मन, आत्मा से सदैव सुखी रहो...

ऐसे आशीर्वाद दिए थे। मैंने जब पढ़ा, तभी मुझे लगा कि ये संत अलग हैं। गुरुजी ने ये कोई अलग बात कही है। दरअसल, शुरूआत में ही उन्होंने मुझे सत्संग की कुंजी - चाबी पकड़ा दी। अगर मैं वो यूज़ नहीं करूँगा, तो घाटा मुझे ही होगा।

गुरुजी हमें आनंद तो खूब कराते ही रहते हैं। लेकिन अब गुरुजी के मन में हमारी ओर से खुशी होनी चाहिए–एक प्रसन्नता मिलनी चाहिए। **दीदी** के शब्दों में कहूँ तो–

हम जब गुरुजी के सामने हों, तो हमें देख कर उनकी आँखें नाच उठनी चाहिएं, चेहरे पर चमक आ जानी चाहिए।

सो, अभी हम सबको मिल कर वो उठाव लेना है। काकाजी ने हमें गुरुजी के रूप में कैसे स्वरूप दिए? दीदी कैसी अभिप्राय की भक्ति कर रही हैं? हमारे संत - सेवक गुरुजी को कैसा साथ दे रहे हैं? बहनें गुरुजी और दीदी को कैसा साथ दे रही हैं? कई हरिभक्त भी हैं, जो हमारे लिये प्रेरणा का एक स्रोत है। ये अभिषेक की ही बात लो... आज सुबह ही दीदी किसी से बात कर रहे थे कि *ऐसा जरुरी नहीं कि कोई बीस साल से-तीस साल से आया हो, वही बड़ा है। कोई नया आया हो उसने भी काफी प्रोग्रेस कर ली हो।* मंदिर में पहले भी सेवक रहे होंगे, लेकिन गुरुजी की प्रसन्नता सिर्फ गुरुमुखी होकर – सिर्फ गुरुजी की तरफ निगाह रखने वाले '**अभिषेक**' ने पाई। गुरुजी क्या चाहते हैं, उसका ख्याल रखकर, गरज रखकर सेवा कर रहा है, उससे वो उनके अंतर की प्रसन्नता पा गया!

...आम समाज में ऐसा कहा जाता है कि सच कड़वा होता है। मुझे होता था कि सच हमेशा कड़वा ही क्यों होता है? हो सकता है कि हमारी प्रकृति की वजह से कहा हो। पर, महाराज ने तो गुरुजी जैसे संत धरती पर रख दिए, जो हमारे जीवन में मिठास डालते ही रहते हैं। हम सब कहते हैं न कि गुरुजी हमारे जीवन में आए, ये एक सरासर '**सच्चाई**' है, लेकिन यह तो एक '**मीठी सच्चाई**' है! तो आज के दिन भगवान स्वामिनारायण और सभी गुणातीत स्वरूपों के श्रीचरणों में ऐसी प्रार्थना कि हम जैसे गुरुजी के पल्ले तो पड़े, पर अब हम भी गुरुजी के लिए मीठा सच बन जाएँ। हमारा ऐसा व्यवहार, हमारी ऐसी गरज हो जाए। जैसे कल गुरुजी ने भी बात करी कि अक्षरस्वामी को खूब-खूब धन्यवाद! दिल से खूब धन्यवाद! और... जैसे गुरुजी ने बताया कि ऐसा विचार आना ऊँची बात है। गुरुजी ने यह भी बताया कि काकाजी, पप्पाजी और स्वामिजी को जो सेवा करवानी होगी, वो हम से करवा ही लेंगे। यहाँ मुझे गुरुजी की एक बात याद आती है। गुरुजी ऑपरेशन करवा के जब यहाँ आए थे, तो फ्रन्ट लॉन पर बैठते ही गुरुजी ने कहा था– *तुम चिंता न करो, मैं सौ साल तक जीने वाला हूँ।*

संत आशीर्वाद तो देते हैं, लेकिन साथ में कंडीशन लगा देते हैं। हम आशीर्वाद याद रख लेते हैं, वो कंडीशन भूल जाते हैं। गुरुजी ने कहा था – *हम सभी एक-दूसरे की झंझट में न पड़ें और मिलजुल कर रहें;* यह कंडीशन गुरुजी ने लगाई थी। सो, हम यहाँ बैठ कर सिर्फ बातें न करा करें; मैं यह नहीं कह रहा कि

सब ऐसा ही कर रहे हैं। सबके दिल में यह है, सब दिल से यह चाहते हैं। वो तो दो दिन जो प्रदक्षिणा हुई, उससे दर्शन हुआ। पर, अगर मुझे गुरुजी से सच में प्यार है, तो मैं क्या करूँगा? मैं गुरुजी की इन बातों को लेकर अब चलना शुरू कर दूँगा। सभी कहते हैं कि हमने बहुत टाइम गँवाया, लेकिन अब ये टाइम हमारे लिए बहुत कीमती है। चलो गँवाया, पर अब तो समझ आ गई। जब से जगे तब से सबेरा!

सुबह दीदी ने बताया कि योगीजी महाराज ने कहा था कि अगर तुम पाँच मिलकर रहो, तो मैं धरती पर पच्चीस साल और रहूँगा। इसका मतलब कि हम ये गल्तियाँ दोहराते आ रहे हैं। जब-जब कोई पुराने हरिभक्त काकाजी से जुड़ी हुई बात करते हैं, तो मुझे हमेशा लगता है कि उनके मन में एक मलाल ये रहता है कि काकाजी की बात हम पकड़ नहीं सके। कल भी यही बात हो रही थी। लेकिन मैं कहता हूँ कि गुरुजी, दीदी ने सब बातें खोल-खोल कर हमें बता दी हैं, समझा दी हैं और हमें समझ भी आ गई हैं। फिर हमारी ऐसी क्या कसर है, जो हम सब समझते हुए भी करना नहीं चाहते? दूसरी तरफ मुझे बड़ा कन्ट्रॉडिक्शन लगता है, जब एक तरफ हम कहते हैं कि हम आपको बहुत चाहते हैं और आपने हमें चाबी भी पकड़ाई है कि तुम ऐसा करो, उसमें तुम्हारा फायदा है और... आदमी की फितरत होती है कि अपने फायदे के लिए वह कुछ भी कर गुजरता है। फिर यहाँ पर क्या हिचक है? यहाँ क्या रोक है? तो आज हमने जो प्रदक्षिणा करी, उसके पीछे सबकी भावना यही थी कि प.पू. गुरुजी और प.पू. दीदी का स्वास्थ्य बहुत अच्छा रहे। सवा सौ साल तक इसी देह में धरती पर हम सबके बीच में रहें। काकाजी–पप्पाजी यहाँ विराजमान हैं, उन्होंने हमारी प्रार्थना सुनी ही होगी। हमारे सारे गुनाह माफ कर ही दिए होंगे, इसमें कोई शक नहीं है। लेकिन, **काकाजी** जैसा कहते थे– ***हम नए प्रारब्ध खड़े न करें।***

...अगर मैं गुरुजी की तरफ निगाह करके जीऊँगा, तो हो ही नहीं सकता कि मैं किसी भक्त की झंझट में पड़ूँ। यदि मैंने किसी भक्त के साथ मिसबिहेव किया, तो मतलब है कि मैंने गुरुजी के साथ मिसबिहेव किया। उनकी बात मुझे बुरी लगती है, तो मतलब है कि मुझे गुरुजी की ही क्रिया नहीं जँचती। पर, हम ये बाजी एक बार फिर हार न जाएँ। सारी बात का क्रक्स यही है कि बहुत अच्छी भावना-भक्तिभाव से सब ने प्रदक्षिणा करी। लेकिन, हम इस भुलावे में न रह जाएँ कि ये करके हमने अपनी भक्ति अदा कर दी; बल्कि **जब तक मेरे आचरण, व्यवहार, सोच, हर क्रिया में ये ख्याल न रहे कि क्या मेरी इस क्रिया से गुरुजी खुश होंगे या उनको कोई ठेस पहुँचेगी?– ये जागरुकता मैं जब तक नहीं रखूंगा, तब तक ये काम होने वाला नहीं है।**

तो आज और कोई कुछ नहीं, एक यही प्रार्थना करनी है कि हे महाराज, हे स्वामी, हे शास्त्रीजी महाराज, हे योगीजी महाराज, हे काकाजी, हे पप्पाजी, हे स्वामिजी, हे गुरुजी, हे सभी प्रगट गुणातीत स्वरूपों! **हम जो-जो, जहाँ-जहाँ जिस प्लेटफार्म पर भी रुके हैं, वो हम छोड़ दें और गुरुजी को राजी कर लें।** गुरुजी को राजी करने का मतलब काकाजी को राजी करना। तो गुरुजी और दीदी को ऐसा राजी कर लें कि वो हम सबको देख कर खुश-खुश हो जाएँ और न चाहते हुए भी सवा सौ साल तक इसी देह में, इस धरती पर रहें–ऐसी आपके श्रीचरणों में प्रार्थना।

प.भ. श्यामलालजी (ईटेड़ा)

सत्संग में आए लगभग छः या सात वर्ष हुए। जो अनुभव, ज्ञान कि मुझे कैसे जीवन जीना चाहिए, उसकी जो अपने पिछले चालीस या पचास सालों में पूरी प्राप्ति नहीं कर सका, वो छः - सात सालों में मैंने यहाँ पर पाया। गुरुजी दो-तीन बार से हमारे गाँव में पधरामनी करने आते हैं। गुरुजी के आने की मुझे अपार खुशी होती है और वे वापिस जाते हैं, तो दुःख होता है। जिस दिन गुरुजी मुझ से फोन पर बात करते हैं, उस दिन शाम तक मैं खुश रहता हूँ कि गुरुजी का फोन आया था। गुरुजी, संतों और हरिभक्तों को लेकर आते हैं और जब इन भक्तों से मिलता हूँ, तो मेरी आँखों में आंसू आ जाते हैं। असल में बचपन से मुझ में भावुकता है, किसी का दुःख मैं देख नहीं सकता।

एक बार **गुरुजी** ने गुजराती भाषा में कुछ बात करी थी, वो बातें पता तो नहीं चलीं। लेकिन, सब बातों में से एक बात मेरी समझ में आई थी–

जिस तरह से मनुष्य और पशु में अंतर होता है, उसी तरह संत और मनुष्य में अंतर होता है।

तो, हम तो गुरुजी के सामने पशु के समान हैं। इतना बोलना तो नहीं जानते, पर गुरुजी के सैकड़ों बार अनुभव किए हैं। **संत में भगवान हैं, वो आँखों से तो दिखाई नहीं देता।** सो, हम कैसे कह दें कि गुरुजी भगवान हैं, लेकिन **अनुभव किया जाता है कि भगवान इनके अंदर प्रगट हैं; ये अंतर्यामी हैं।**

एक बात बताता हूँ। जब ये पार्क लिया था और उसमें काम नहीं चला था, तब सुहृद्स्वामी ने मुझे फोन किया कि पार्क में कुछ काम कराने की योजना बनानी है, तो आप सुबह मंदिर आ जाओ। अगले दिन साथ आने के लिए मैंने देवदत्तजी को फोन किया। मैं दोपहर बारह-साढ़े बारह बजे खेतों से काम करके आया, नहा कर कपड़े बदले। जब तैयार हो रहा था, तब मुझे याद था कि खाना खाकर जाना है। पर, **मंदिर आने के लिए मेरे अंदर ऐसी उमंग रहती है–ऐसा उल्लास रहता है कि मैं भोजन करना भूल गया!** बस, तैयार होकर ढूंढाहेड़ा आया और देवदत्तजी के साथ स्टेशन पहुँच गया। टिकट लेकर प्लेटफार्म पर जब बैठे हुए थे, तब मैंने देवदत्त से कहा– *मैं तो आज खाना खाकर नहीं आया।*

देवदत्तजी ने कहा– *तूने गलती करी, मेरे घर पर खा लेता।*

मैंने कहा– *वहाँ भी मुझे याद नहीं रहा और अब याद आया है।*

हम शाम को करीब साढ़े चार बजे मंदिर पहुँचे। तब यहाँ पर गुजरात से कुछ भक्त लोग आए हुए थे। उन्हें हरिद्वार और ऋषिकेश जाना था। सो, गुरुजी ने सुहृद्स्वामी को कहा होगा कि इन भक्तों के लिए छः बजे खाना तैयार कर देना, उन्हें ट्रेन पकड़नी है। हम गुरुजी के पास गए; उन्होंने पूछा– *हाँ, कैसे आए?*

मैंने कहा– *जी, सुहृद्स्वामी ने पार्क के किसी काम के लिए बुलाया है।*

सुहृद्स्वामी को बुलवा कर गुरुजी ने गुजराती भाषा में कुछ कहा और वे रसोई के काम में चले गए! तब हम तो इतना ही समझ सके कि पार्क में कुछ काम नहीं कराना है... दिन छिप चुका था, मैंने सोचा कि गुरुजी से आज्ञा लेकर घर चलते हैं। सो, हम गुरुजी के पास आज्ञा लेने गए।

गुरुजी ने पूछा– *अब किस टाइम पहुँचोगे?*

मैंने कहा– *गुरुजी यदि ट्रेन मिल जाएगी, तो 11-12 बजे तक पहुँच जाएँगे।*

गुरुजी बोले– *नहीं-नहीं, अब मत जाओ; यहीं रुक जाओ।*

गुरुजी के आदेश का पालन तो करना ही था। हम पीछे एक कमरे में जाकर भजन गाने लगे। इसी दौरान जो गुजरात से आए थे, वे खाना खाकर चले गए। थोड़ी देर बाद पोपट काका हमारे पास आए और बोले– *अरे श्यामलालजी! तुम्हें गुरुजी कब से ढुँढवा रहे हैं, तुमने खाना नहीं खाया है। चलो, मैंने तुम्हारे लिए खाना लगा दिया है।*

मैंने कहा– *खाना तो रात को नौ बजे लगता है, अभी साढ़े छः - सात बजे हैं।*

वे बोले– *अरे नहीं, तुम भूखे हो। मुझे गुरुजी ने ऐसा आदेश किया है कि सबसे पहले उनको खाना खिलाओ।* मुझे हुआ कि कमाल है, गुरुजी को कैसे मालूम पड़ गया कि हम भूखे हैं! तो, अंतर्यामी तो ये हैं ही, इसमें दो राय नहीं है। सो, **संत का अनुभव किया जाता है और उसी से उसकी पहचान होती है।**

एक बार गुरुजी ने कुछ ऐसा भी कहा था कि जो बात मुझे सुननी होती है, वो मैं एक किलोमीटर की भी सुन लेता हूँ। पर, मैं तो ये कहूँगा कि गुरुजी एक किलोमीटर की नहीं, यहाँ से अमेरिका तक की बात सुन सकते हैं।

अब रही सेवा की बात, सेवा तो हम कुछ कर नहीं सकते, करवाने वाले बैठे हुए हैं। सेवा तो यहाँ पर जैसे कि आशीष के परिवार ने, मल्कानी अंकल ने, प्रभाकरजी और शोभना भाभी ने करी है और ऐसे कई परिवार हैं, जैसे वच्छराजजी का–कि जिन्होंने अपने बच्चों तक को गुरुजी को अर्पण कर दिया। वर्ना, हर माँ-बाप ये सोचते हैं कि मैं अपने बेटे की शादी करूँगा, इसके बच्चे होंगे, मेरा नाम चलेगा, ये होगा, वो होगा; न जाने क्या-क्या सोचता है? लेकिन गुरुजी के कहने से आप लोगों ने अपने परिवार... अरे! आप के घर पर सब्जी भी शायद गुरुजी से पूछ कर बनती होगी। तो, सेवा तो इन लोगों की है। हमें तो गुरुजी बुला लेते हैं, हम खुश हो जाते हैं और थोड़ा बहुत करके चले जाते हैं...

दिवाली से पहले चावल की फसल लगाई जा रही थी, तो उस समय गांव में लेबर नहीं मिल रही थी। धान लगाने के लिए मुझे कुल तीन आदमी मिले थे। तभी हमें पू. सुहृद्स्वामी ने यहाँ सेवा में बुलवाया कि तुम ट्रॅक्टर, फीलर और ट्रॉली लेकर मंदिर आ जाओ। मैंने कहा–मैं धान लगा रहा हूँ, लेबर मिल नहीं रही है। तो, इसे कैसे छोड़ कर आऊँ? दो-तीन रोज और रुक जाओ, तीन रोज बाद आ जाऊँगा। ऐसा मैंने सुहृद्स्वामी को कह दिया। पर, दस-बीस मिनट बाद गुरुजी का फोन आ गया कि श्यामलालजी, कल दस बजे तक आ जाना। मैंने तुरंत हाँ कर दी और अपने लड़कों से कहा–भई, **ये धान लगे या न लगे, मुझे तो गुरु आज्ञा में रहना है।** मैं सुबह ट्रॅक्टर ले जाऊँगा और तुम किसी से ट्रॅक्टर लेकर, उसमें अपना डीज़ल डलवा कर चला लेना; कोई तुमसे मना नहीं करेगा– ऐसा कहकर अगले दिन सुबह ट्रॅक्टर में देवदत्तजी को बिठा कर मंदिर आ गया। उधर पड़ोस में हमारे चाचा के लड़के और भतीजे के ट्रॅक्टर में डीज़ल डालकर लड़के धान लगवाते रहे। मुझको यहाँ एक हफ्ता हो गया और वहाँ धान लग गया। जब धान में पानी लगाने का टाइम आया, तभी फिर से यहाँ आने के लिए फोन आ गया। मैंने तो 'हाँ' कर दी। तभी बच्चे बोले कि वहाँ धान सूखी खड़ी है। मैंने कहा–दो दिन बाद पानी लगा लेंगे, भले सूख जाने दो; मुझे तो मंदिर जाना है। आप विश्वास नहीं करोगे कि धान में तो लेट-शेट पानी लगता रहा। पर, जब धान कटने का समय आया और धान के अंदर बाली बाहर हो गई, तब **गांव में धान की फसल में ऐसी बीमारी लगी कि काफी लोगों ने कई-कई हजार रुपयों की दवाई का छिड़काव करवाया था; तब भी किसी के मुश्किल से पांच मन चावल भी नहीं हुए, जबकि मेरे खेत में पिच्यासी मन धान हुआ**; हालाँकि उसमें समय पर पानी नहीं लगा! तो, **मैं ये कहूँगा अगर**

हम किसी सेवा में यहाँ आ जाते हैं, तो प्रभु हमारा काम वहाँ ऑटोमॅटिक करते हैं, ये मुझे दृढ़ विश्वास हो गया। हमें तो गुरुजी की खूब सेवा करनी है, उन्हें राजी करना है।

एक और प्रसंग – भगवान का भक्त था, वो भगवान का बहुत भजन करता था। हर वक्त भगवान का ही भजन करता था। एक बार नारद मुनिजी घूमते हुए जा रहे थे और एक कॉपी व पेन्सिल हाथ में लिए हुए थे। भक्त ने नारद मुनि से पूछा – आप हाथ में कॉपी-पेन्सिल लिए क्यों घूम रहे हो? क्या लिख रहे हो? नारद मुनि ने कहा कि मैं उन भक्तों के नाम टिक करके ले जाता हूँ, जो भगवान का नाम लेते हैं। लेकिन लिस्ट में तुम्हारा नाम तो है ही नहीं। भक्त ने कहा – कोई बात नहीं, मेरे भजन में कुछ कमी होगी। पर, वो रेग्युलर भजन करता रहा। चार-छः महीने बाद नारद मुनिजी फिर कॉपी-पेन्सिल हाथ में लिये हुए आते हैं। भक्त ने पूछा – नारद मुनि आज क्या टिक कर ले जाओगे? वे बोले – आज मैं उन भक्तों के नाम टिक कर रहा हूँ, जिन्हें भगवान याद करते हैं और इस लिस्ट में तुम्हारा नाम है! तो, **हमें तो ऐसी सेवा करनी है, गुरुजी को ऐसे राजी करना है कि गुरुजी हमें याद करें।**

पू. यज्ञप्रियस्वामी (दिल्ली)

कल सभा में पू. दालिया साहब, पू. नरेन्द्रजी, पू. प्रभाकरजी ने काकाजी के अंतिम संस्कार की स्मृति कराई। वो स्मृति में काकाजी महाराज की एक भावना कि योगीजी महाराज के दीक्षित संतों को इकट्ठा करके माथेरान में शिविर करने ले जाना है। उस भावना से काकाजी ने सबको इकट्ठा किया था। योगीजी महाराज के दीक्षित संत पहुँच भी गए थे। पर, मुंबई में काकाजी की तबियत खराब हुई। सेवकों ने काकाजी से रिक्वेस्ट भी करी थी कि काकाजी ये प्रोग्राम कॅन्सल कर दें, पोस्टपोन कर दें और आप रेस्ट ले लीजिए। पर, काकाजी ने सामने से यही रिप्लाई दिया कि संतों को बातें करनी हैं। जीवन के अंत समय में भी काकाजी को केवल एक यही विचार था कि योगीजी महाराज की भक्ति अदा करनी है, संतों को ले जाना है। स्वरूपों को कितनी गरज है? गुरुजी ने भी कई बार स्वामी की बातों में से बताया है – 'मोरे तो मुमुक्षु भगवान ने खोळता'ता, हवे भगवान मुमुक्षुने खोळे छे।' भगवान हमारे पीछे पड़े हैं, भगवान हमें देना चाहते हैं और ये बात श्रीजी महाराज के समय से चली आ रही है।

अभी पीछे गुरुजी द्वारा दिए आशीर्वाद की टेप सुन रहे थे, उसमें बात आई कि बाईबिल में से समझ में आता है कि **बुद्धि को शापित क्यों कहा जाता है?** उस पर गुरुजी ने बात करी थी, *'एडम और ईव ने एपल खाया, उसके फलस्वरूप ये अच्छा है और ये बुरा है, ऐसी भेद बुद्धि इनमें आ गई। सो, प्रभु ने कहा कि अब आप धरती पर जाओ; वहाँ ऐसे संतों की संगत मिलेगी और उनके पास बुद्धि छोड़ोगे, तब यू विल बी अगॅईन इन धी हॅवन।'*

अभी 26 जनवरी को प.पू. गुरुजी के साथ जब ईटेड़ा गाँव गए थे, तब पू. अक्षरस्वामी ने वहाँ पर सब लड़कों के पास परिक्रमा और दंडवत् करने की बात रखी थी। गुरुजी को बर्थ-डे गिफ्ट तो कई तरीके से दे सकते हैं, लेकिन ये भक्ति अदा करने वाली बात है। थर्टी-फॉर्टी यंगस्टर्स ने उसी टाइम खड़े-खड़े अपने नाम लिखवाए... और इतना सुंदर प्रोग्राम हुआ। प्रदक्षिणा का जो माहौल है, जो भजन चलते हैं – इस हेतु वी ऑल शुड थँक्स पू. अक्षरस्वामी, पू. जयप्रकाशजी एण्ड ऑल दोज़ पार्टीसिपॅन्ट्स जिन्होंने यह सब एरॅन्ज किया है। महापूजा में भी प्रार्थना होती है कि प.पू. गुरुजी व पू. दीदी का स्वास्थ्य हमेशा अच्छा रहे, निरोगी रहें।

...गुरुजी भी (दो दिन से) सुबह, दोपहर, शाम और रात को - यूँ तीन टाइम समाधि पर जाकर बैठते हैं, जब भक्त परिक्रमा लगा रहे होते हैं। और... खुद नक्षु का हाथ पकड़ कर परिक्रमा लगाते हैं। आज इस एईज में भी उन्हें यूं वर्तने का इतना आग्रह है। चौदह प्रकरण की 206वीं स्वामी की बात में लिखा है –

महाराज को एक ही आग्रह रहता है कि जीव को ब्रह्मरूप - गुणातीत करना है ...

और स्वामी ने एक बात यह भी लिखी है –

इस बात का मनन-चिंतन रोज एक बार जरूर करना कि भगवान स्वामिनारायण के संबंधयोग से अपने संपर्क में आने वाले सभी भक्त अक्षरधाम के ही मुक्त हैं...

तो, जैसे अब के कार्ड में भी मॅग्नॅटिक नीडल बताई है, वैसी हम सब भी **गुरुजी के संपर्क से मॅग्नॅटिक नीडल बनें, जो हमेशा गुरुमुखी रहे।** पू. पुनीतजी ने अभी बात करी कि **पू. अभिषेकभाई का हमेशा गुरुमुखी रहना, हम सबके लिए आदर्श है।**

स्वरूपानंदस्वामी की भी बात है कि जब उनके शरीर में बीमारी आई और बीमारी में व्यक्ति हिल जाता है; पर उनको पूछा कि स्वामी आपकी क्या स्थिति है, तो बोले– *'टट्टू दुबला है, पर अस्वार तो ताज़ा है।'* इसी प्रकार हमें हमारी बुद्धि भले कितना ही पीछे करती हो, हमारा शरीर चाहे कितना भी पीछे करता हो, हमारा मन चाहे कितना भी पीछे करता हो, पर काकाजी की बात है कि भगवान को एक चित्त से प्रार्थना करें और गुरुजी को यही प्रार्थना है कि आप जो ज्ञान देना चाहते हैं, वो ज्ञान हम ले सकें, उसके लिए पात्र बन सकें – ऐसी कृपा करना।

प.पू. गुरुजी

महाराज सारंगपुर में जीवाखाचर के घर गए थे। जीवाखाचर उस समय घर पर नहीं थे। सो, उनकी घरवाली ने महाराज को बिठाए - करे, आवभगत करी और साथ में सेवक को बोला कि जीवाखाचर को यानि 'बापू' को बोटाद में खबर दे दो कि जल्दी आ जाएँ। सेवक दौड़ता हुआ गया और बोटाद खबर भी देकर लौटा। तब तक खाना भी बन गया था और महाराज भोजन करने बैठ गए। बातों-बातों में जीवाखाचर ने बात करी कि महाराज इस साल बारिश के दो महीने तो चले गए हैं, पानी की एक बूंद तक बरसी नहीं है, अनाज भी नहीं है। ये जो जानवर हैं, वो भी पानी के बिना मरते रहते हैं। महाराज भोजन करते हुए सुन रहे थे। फिर महाराज ने कहा – बारिश इस साल बरसे ऐसा तो लगता नहीं। इन्द्र रूठा हुआ है, लेकिन तुम भगत लोगों की इतनी प्रार्थना है, सो उसे बरसना तो पड़ेगा ही। पर, रोष में बरसेगा, सो हमें दुःखदायी होगा। महाराज ने यह कहा ही था कि आकाश में एकदम काले बादल आ गए। सब आश्चर्यचकित हो गए कि अभी तो गर्मी थी, आकाश भी साफ-सुथरा था; ये बादल कहाँ से आ गए ? जीवाखाचर बोले – महाराज आपने कहा है, तो लगता है कि इन्द्र बरसेगा। महाराज ने कहा – रोष से आ रहा है, रूठा हुआ है इसलिए खूब जोश से बरसेगा।

कभी हमें कुछ नहीं करना होता और साधु पीछे पड़ा हो, तो रोष में कहेंगे – अच्छा, करते हैं। लेडीज़ को भी कई बार खाना नहीं बनाना होता है और जबरदस्ती बनाना पड़ता है, तो पतीले को सन्डासी में पकड़ कर कैसे ठोकती है...

धीरे-धीरे बरसात मूसलाधार पड़ने लगी। उस समय तो मिट्टी के घर थे, सो एकदम गिरने लगे और तबाही मच गई। महाराज जहाँ ठहरे थे, वो मकान भी मिट्टी का था। सो, जीवाखाचर ने कहा– मैंने ईंट-चूने का मकान बनाया है, आप वहाँ चले जाओ। शाम ढली; और... बरसात ने तो बस जल बंबाकार कर दिया। रात को महाराज ने जैसे ही घर बदला कि पुराना घर गिर गया और... नए घर में पहुँचते ही महाराज ने कहा–मुझे भूख लगी है, खाना बना दो। जीवाखाचर को एक बार तो हुआ भी कि अभी इतनी बारिश में लकड़ी कहाँ से लाएंगे? उसकी पत्नी सीतबा ने भी कहा चूल्हे में तो पानी भरा हुआ है, उपले–लकड़ी सब पानी से गीले हो गए हैं, रसोई कैसे बनाएंगे? फिर भी जीवाखाचर ने कहा–तू चिंता मत कर, मैं किसी तरह बंदोबस्त करता हूँ। ड्रम जैसा होगा, उसको आधा काट कर उसका चूल्हा बनाया और नया संखेड़ा का पलंग था, उसे तोड़ कर ईंधन बना दिया! यूँ महाराज को दही और बाजरे का रोटला बना कर दिया और महाराज ने भी डटकर खाया। इतने में तो इस नए मकान का ऊपरी हिस्सा भी टूटने लगा था, सो महाराज को पड़ोसी के मकान में ले गए। जीवाखाचर गांव का मुखी था, सो उसने महाराज को कहा कि गांव में क्या हालात हैं– गांव में किसको क्या जरूरत है, वो सब देख कर आता हूँ। इससे महाराज खुश हुए कि **जो बड़ा है, उसे अपने बड़प्पन का ख्याल है कि मुश्किल में जरूरतमंदों की सहाय करनी है।** जीवाखाचर ने जितना हो सकता था, वो सारी एरेन्जमेन्ट करी–जिसका घर गिर गया था उन्हें शिफ्ट कराया और ढोरों (जानवरों) को अलग जगह पर बँधवाया। महाराज बोले भी–**एक राजा को शोभे, ऐसा आपने काम किया।**

फिर महाराज तो सो गए, लेकिन आधी रात को किसी की आवाज सुन कर तख्त पर एकदम बैठे हो गए। मूलजी ब्रह्मचारी जग जाएगा, तो जाने नहीं देगा; इसलिए किसी को कुछ बुलाया-करा नहीं और चुपचाप बाहर निकल गए। महाराज बारिश में गीले होते हुए एक ऐसे घर में पहुँचे, जहाँ घर का बीम एकदम टूटने के कगार पर था। महाराज ने अपने कंधे का सहारा दिया। जिसका घर था, वो तो देखता ही रह गया कि कौन आया है? अंधेरे में उसे साफ-साफ नज़र नहीं आया और बारिश के कारण लालटेन भी नहीं जलती थी। दस पन्द्रह आदमी भी न उठा पाएं ऐसा भारी, पर महाराज ने बीम को अकेले उठा रखा था। अंधेरे में घर वाले कोई पहचान तो नहीं सके, पर आवाज़ सुनाई दी–तुम सब निकलो, ये बीम थोड़ी देर में टूटेगा। जो मिठास जीवाखाचर के दरबार में महाराज के शब्द में थी, ऐसी मीठी आवाज़ वहाँ सबको लगी! जब तक सब निकल नहीं गए, तब तक महाराज ने अपने कंधे पर बीम को थमा रखा था।

और... महाराज के हटते ही सारा घर टूट गया। महाराज वहाँ से चुपचाप निकल गए और अपने ठहरने के स्थान पर आकर सो गए। ब्रह्मचारी तो सेवा से सारा दिन का थका हुआ था। उसको तो पता ही नहीं चला कि रात को क्या हुआ? लेकिन सुबह जब स्नान कराते हुए देखा कि कंधे पर काला-काला निशान पड़ा हुआ है। तो उसने पूछा–महाराज! रात-रात में ये क्या हुआ? महाराज ने सारी बात करी। मूलजी ब्रह्मचारी बिगड़ा कि क्या हम लोग मर गए थे? मुझे उठाना चाहिए था न। महाराज बोले–रात को तू गहरी नींद में था और ऐसी आवाज़ आई, सो मैं चल पड़ा। तुम्हें

जगाऊँ करूँ, इतने में तो वहाँ सब गिर जाता। फिर भी ब्रह्मचारी बोला – वो हमारे थोड़े हैं, वो तो मार्गी पंथी हैं। आपको वहाँ जाने की क्या जरूरत थी? महाराज बोले – अरे! पर उसने पुकारा कि हे भगवान! बचाओ। उसको नहीं पता, सो वो भले मुझे आवाज़ न दे; पर मुझे तो पता है कि भगवान तो मैं ही हूँ। इसलिए मुझे जाना ही पड़े न? तब ब्रह्मचारी को ख्याल आया कि **भगवान भक्तों के योग और क्षेम की रक्षा खुद करते हैं, दूसरों को सौंपते नहीं** – इसलिए खुद गए। इतने में जीवाखाचर आए और सारी बात सुनी कि महाराज रात को देवा भगत के परिवार की रक्षा करने गए थे।

देखो, **हमारे भगवान अगर ऐसे हैं, तो फिर हम फर्क क्यों रखते हैं? और वो भी आपस में!**

फिर महाराज ने कहा कि हम गाँव में भिक्षा मांगने जाएँगे। जीवाखाचर ने कहा – महाराज! सारी तबाही हुई है और आप कहते हैं कि भिक्षा मांगनी है! कोई देने वाला नहीं है। गांव में कीचड़ भी इतना हो गया है कि चला भी नहीं जाएगा। महाराज बोले – आप नहीं आओ, पर मुझे तो जाना ही है। एक-एक घर में झोली मांगनी है। ब्रह्मचारी समझा हुआ था कि भिक्षा का तो ये बहाना है। इनको तो गांव के हर एक घर पर जाना है; क्या-क्या नुकसान हुआ है, वह देखना है और ऐसे दुःखी हुए भक्त भी तो महाराज को देख कर ही खुश हो जाएँगे, इसीलिए जा रहे हैं।

साधु की जिम्मेदारी बड़ी अलग-सी होती है। इसलिए मैं कई बार सेवकों को कहता हूँ–

सुबह जो फोन आते हैं, तो भले मैं नहीं हूँ, पर मुझे खबर दे दो। अगर कोई कह भी दे कि गुरुजी को 'जय स्वामिनारायण' कहना; पर मैं बैठा हूँ, तो मुझे रिसीवर देना। किसी को एवॉईड नहीं करना।

सेवकों के मन में कई बार ऐसा होता है कि सुबह लाइन से इतने फोन आते हैं, गुरुजी कितनों को जवाब देंगे? लेकिन कइयों के मन में ऐसा भी होता होगा कि आज गुरुजी मेरे से बात करेंगे, तो समझूंगा कि मेरा काम हो जाएगा। अगर आलस में या गलती से मैंने बात नहीं करी, तो बेचारा सारा दिन मायूस रहेगा न? उसके मन में कई कितने विचार आ जाएँगे। उससे अच्छा है न कि महाराज की वो सेवा कर लूँ। मुझे बुहारी (झाड़ू) तो लगानी नहीं, रसोई तो करनी नहीं और तो कोई काम मुझे करना नहीं है, इतनी सेवा तो हो जाए न! 'जय स्वामिनारायण' बोलना है और क्या है? लेकिन **ये सारी क्रियाएँ एक सेवा की भावना से होनी चाहिएँ।**

महाराज की ये सेवा की भावना थी कि चलो दुःखी हुए हैं, मैं जाऊंगा तो दर्शन से सब खुश तो हो जाएँगे। महाराज को कोई भिक्षा नहीं लेनी थी। पर, जीवाखाचर के मन में ऐसा था कि ऐसे कीचड़ में महाराज को कितना चलना पड़ेगा? उसके ढंग से वो भी सही था। महाराज हर एक के घर पर गए, उस समय गाँव भी छोटा यानि – ज्यादा से ज्यादा पचास घर होंगे। यूँ, भगत लोग भी अपने सब दुःख भूल गए कि चलो, महाराज आए हैं न? जो हो गया-हो गया, लेकिन अभी महाराज को खुश कर लें। यूँ बचा-कुचा भी सब महाराज की झोली में डाला। जो तबाही हुई थी, वो सब दुःख हट गया। तब, महाराज ने भी अपने भक्तों को कहा था –

इन्होंने इतनी दिलेरी से हमें दिया है; सो तुम संकल्प करना कि इनके अंतर और इनके घर खाली न रहें, इनके भंडार भरे रहें। मुझे देने के लिए इन्होंने अपना सब कुछ दे दिया है, तो ये सब सुखी हो जाएँ...

...महाराज रुढ़ि - रिवाज को बहुत ज्यादा नहीं मानते थे। जिसको स्पीरीच्युआलीटी का ख्याल होगा न, वो समझते हैं कि देह के धर्म और आत्मा के धर्म अलग हैं। रामकृष्ण परमहंस का प्रसंग मैंने अभी-अभी शारदा मणि के पुस्तक में पढ़ा और...नोट भी करा हुआ है। आज से दौ सौ साल पहले परमहंस देव ने शारदा मणि को जो एक बात करी थी कि तुम्हें ये परहेज रखने की कोई जरूरत नहीं है; मैं तो वो पढ़ कर ताज्जुब हो गया। पर, इनको ख्याल था कि देह का धर्म अलग है, आत्मा का धर्म अलग है...

11 मार्च 2009 (धुलेन्डी)

प.भ. योगेशभाई (दिल्ली)

...मुझे सत्संग में आए 35 साल हो गए। वैसे 35 साल में मुझे हुए स्पीरीच्युअल एक्सपीरियन्सीस अगर सारे लिखने बैठूं, तो एक किताब छप सकती है।

...हम बहुत ही खुशकिस्मत हैं कि हमें **'सर्वोपरि स्वामिनारायण धर्म'** का जोग मिला और उसमें भी ऐसे संत– **गुणातीत संत, कन्टीन्यूअस हैरारकी** वालों का जोग, दिल्ली में बैठे-बैठे मिल गया और उनकी गोद में बैठ गए। गुरुजी का आशीर्वाद इतना मिला हुआ है कि हर बार-हर साल कुछ न कुछ एक्सपीरियन्स होता ही रहता है। दो इन्सीडेन्स मेरी लाइफ के ऐसे हैं, जिन्हें टर्निंग पॉईन्ट कह सकते हैं और जो बहुत इफेक्टिव थे।

काकाजी मुंबई से दिल्ली आया-जाया करते थे। एक बार ए-103 के मंदिर से रात को गुरुजी का फोन आया कि जानी साहब, काकाजी आए हैं। तो, पापा ने एकदम कहा– योगेश चल, गाड़ी लेकर चलते हैं और उनके दर्शन करके फिर हम वापिस घर आ जाएँगे। एम्बेसडर गाड़ी हमारे पास थी, तो मैं वह चला कर पापा के साथ मंदिर गया। काकाजी साथ वाले रूम में बैठे हुए थे। कोई खास सभा नहीं थी, बस ऐसे ही सब हंसी-मज़ाक की बातें कर रहे थे।

इतने में काकाजी अचानक बोले– *ए छोकरा! तू गाड़ी चलावे छे?*

मैंने कहा– *हाँ।*

लाईसन्स तारी पासे छे? कच्चा लाइसन्स है या पक्का? पक्का लाइसन्स साथ में रख कर गाड़ी चलाता है न?

मैंने कहा– *हां, काकाजी।*

तो एकदम मेरी छाती पर हाथ फेरकर बोले– *हमारी रक्षा तो महाराज करेंगे, लेकिन हमें किसी को धाम में नहीं पहुँचाना है।*

ऐसे कह कर एक बर्फी का टुकड़ा मेरे हाथ में दिया। फिर तो बात जैसे आई गई हो गई। हम लोग भी दर्शन करके लौट गए। ऐसा कुछ याद भी नहीं रहा कि काकाजी ने ऐसा बोला था।

मैं शुरु से ही बड़ा फास्ट ड्राइवर हूँ। प.पू. काकाजी से हुई बात से करीब एक महीने के अंदर-अंदर एक दिन मैं कंपनी के सात-आठ लोगों को बिठा कर गाड़ी चला रहा था। तो, ताज पॅलेस होटल के सामने चौराहे पर एक बस से मेरा अचानक एक्सीडन्ट हो गया और... इतना फॅटल एक्सीडेन्ट था कि इन्डिया गेट के साथ में पुराने लोहे के जो चैन लगे हुए थे, वहाँ तीन बार टम्बल होकर गाड़ी खंभे में जाकर रुकी और उल्टी हो गई। पीछे डॅडी के संग उनके फ्रॅन्ड्स अलग गाड़ी में आ रहे थे, उन्होंने एकदम बोला– *जानी! तेरा लड़का तो गया। तू अभी यहीं रुक, मैं सब देखता हूँ कि क्या हुआ है?* लेकिन हम लोगों पर काकाजी के आशीर्वाद थे, सो किसी को भी खरोंच तक नहीं आई। गाड़ी का पिछला काँच तोड़ कर मैं सबसे पहले बाहर निकला। फिर मेरे साथ दो-तीन जने भी गेट खोल कर बाहर आए और गाड़ी सीधी करी। फिर दूसरों को बाहर निकाला। कंपनी का एक व्यक्ति तो कंपकंपाते हुए बोला– *बहुत नैरो एस्केप हो गया और मौत को मैंने बड़े पास से देखा।* दरअसल वो उस तरफ बैठा हुआ था, जहां से बस ने हिट किया था। तो, मैं समझता हूँ कि काकाजी ने महीने पहले जो मुझे बता दिया था, वो उनका कहा एक-एक शब्द बिल्कुल परफॅक्ट था; क्योंकि, पुलिस जब एक्सीडन्ट की एफ.आई.आर नोट कर रही थी, तो सबसे पहले इन्सपेक्टर ने मुझ से पूछा– तुम्हारा ड्राईविंग लाइसन्स है? मैं १९ साल का था, सो उन्होंने सोचा होगा कि हो सकता है कि गलती इसकी होगी। **आज मैं यहाँ बैठा हुआ हूँ, तो काकाजी के आशीर्वाद से।**

ऐसा ही दूसरा प्रसंग **गुरुजी** का है। अन्नकूट का फंक्शन था और हमारी मधर सुबह अन्नकूट के लिए दूधपाक, लड्डू और दाल बना रही थीं। सुबह सात बजे तो वह मंदिर पहुँचाना था। वो दूधपाक बना रही थीं कि एकदम उन्हें पॅरेलिसिस का अटैक पड़ा और पूरी बॉडी में एकदम खिंचाव आ गया। हम लोग सब घबरा गए क्योंकि उनकी नाक में से भी ब्लीडिंग होना शुरु हो गया था। हमने तुरंत पास के डॉक्टर को बुलाया और साथ-साथ एक फोन गुरुजी को कर दिया कि मम्मी को ऐसे एकदम अटैक आया है और बहुत सीरियस हैं।

गुरुजी ने छूटते ही कहा–

तुम्हारी मम्मी को कुछ नहीं होगा, उसकी पाँच साल की गारंटी मैं लेता हूँ और डॉक्टर जैसा कहे, वो आप करते रहना। मगर वो जो प्रसाद बना रही थीं, वो मंदिर में जरूर पहुँचा देना।

हमने ऐसा ही किया और हम आधे जने मम्मी को हॉस्पिटल में एडमिट कराने गए। शोभनाभाभी व कीर्तिभाई अन्नकूट का सारा सामान मंदिर देने के लिए आ गए। सात-आठ दिन के अंदर ही मम्मी तो फिर से चलती-फिरती हो गईं। ऐसा अटैक होने के बाद भी दस दिन में वो नॉर्मल हो गईं... पाँच साल बाद **गुरुजी ने हमें रिमाइन्ड** भी **कराया** कि देखो! पाँच साल पूरे हो गए हैं अब। अगर एक्सटेन्शन चाहिए, तो मंदिर में रसोई की सेवा करना। कैसे संतों की गोद में हम बैठे हुए हैं!

गुणातीत परंपरा और उनकी हैरारकी ये बहुत ही बड़ी चीज है; जो काल, कर्म, माया को भी हम पर आने से रोक देते हैं। मतलब, ऐसे संतों के आगे वो भी बेबस हैं।

तो, अभी जब हम ऐसा कहते हैं कि गुरुजी का स्वास्थ्य ठीक रहे; मैं कहता हूँ कि जिनके इशारे पर काल, कर्म, माया भी रुक जाते हैं, वो तो जितना चाहे उतना इस धरती पर रह सकते हैं। हमें ऐसी कोई चिंता

करने की जरूरत नहीं है। खुद काल, कर्म उनके आधीन चलते हैं–ऐसे गुणातीत संत हैं। मेरे दिमाग़ में यह बात बड़ी परफॅक्टली बैठी हुई है–**वी आर वेरी मच लकी। हमने नहीं, बल्कि ऐसे संत ने हमारे साथ संबंध–रिलेशन बनाया है।** तो, उनसे संबंध रखना ही लाइफ में बहुत इम्पॉर्टन्ट है। संतों के साथ संबंध बना रहे, यही जरूरी है।

दूसरी बात–संत हैं, तो धर्म भी है। धार्मिक तो सब हैं, पर सच्चा रिलीजियस बनना और उस धर्म को सच्चाई से निभाना एक बहुत बड़ी बात है–मुश्किल भी है। सच्चा धर्म तो हमें मिल जाता है, पर उस रिलेशन को निभाना, वो एक बहुत इम्पॉर्टन्ट बात है। उसे निभाने के लिए भी हमें कुछ नहीं करना, संत ही वो सब करते हैं; जैसे मैंने दोनों प्रसंग बताए कि जिम्मेदारी संत ने ही ले ली कि आपका सब अच्छा ही हो जाएगा।

कोई भी केस मैंने ऐसा नहीं देखा कि सत्संग में जुड़ने के बाद किसी को नुकसान हो गया हो या किसी का ऐसा-वैसा हो गया हो। तन, मन, धन की प्रोग्रेस ही होती है। पर, संबंध की बात खूब इम्पॉर्टन्ट है।

प्रोसेसिंग तभी से चालू हो जाता है, जब हम शरण में आते हैं–गुरुजी जैसे संत कंठी पहनाते हैं। सारी जिम्मेदारी तब से ऑटोमेटीकली संत की हो जाती है। तभी से ये पूरा प्रोसेस शुरु हो जाता है। हमें कोई चिंता करने की जरूरत नहीं है। बहुत जबरदस्त है यह धर्म और इन संत की महिमा! **इस धर्म में बहुत ही डेप्थ है।** स्वामिनारायण धर्म सर्वोपरि तो है ही, पर हम बहुत खुशकिस्मत हैं कि उसके संग-संग हमें गुणातीत संतों का जोग मिला है और हम उनकी गोद में हैं। तो, आज ये **होली का–रंगों का त्यौहार है! संत हमेशा हमारी जिंदगी में रंग ही भरते हैं–धे एड कलर्स इनटु अवर लाईफ।** तो, आज गुरुजी के चरणों में यही प्रार्थना कि दिन पर दिन ये संबंध शाश्वत् और सुदृढ़ बनता रहे..

प. भ. राहुल (सनी) भास्कर (दिल्ली)

...सबसे पहले तो अक्षरस्वामी को बहुत बहुत थॅंक्स कि उन्होंने हम सब यंगस्टर्स को एक रास्ता दिखाया कि गुरुजी और दीदी को राजी करने के लिए हम प्रदक्षिणा करें। साथ ही जयप्रकाश अंकल को भी थॅंक्स कि उन्होंने पूरा प्रोग्राम इतने अच्छे से मॅनेज करा।

दो दिन जो यहाँ पर प्रदक्षिणा चली, वो मेरे लिए बिल्कुल 'आउट ऑफ धी वर्ल्ड' टाईप एक्सपीरियन्स था। मतलब, हम प्रदक्षिणा न भी करें, **भले ही वहाँ खाली बैठे रहें, तो भी अंदर से ऐसा होता था कि कुछ है जो अंदर से हमें चेईन्ज कर रहा है।**

यहाँ सबकी लाइफ में ऐसा कुछ न कुछ एक्सपीरियन्स होता ही है, जो लाइफ में कुछ न कुछ इम्पेक्ट छोड़ जाता है, चेइन्जिस ले आता है। मेरे साथ भी ऐसा कुछ हुआ था। 31 दिसंबर 2006 को घर पर कुछ गेस्ट आए हुए थे। उन्होंने मुझ से जिद्द करी कि मैं मंदिर न जाकर उनके साथ जाऊं। मेरे न चाहने पर भी मुझे उनके साथ होटल जाना पड़ा। वहाँ पर जाने के बाद मुझे कुछ ऐसी बेचैनी-सी, घबराहट-सी हुई कि अब

आने वाला साल कैसा होगा? क्योंकि हर साल तो गुरुजी व दीदी के साथ होते हैं, तो ऐसा रहता था कि अच्छा ही होगा। सो, जैसे-जैसे नया साल पास आ रहा था, मेरी बेचैनी बढ़ती जा रही थी। फिर, मुझे ऐसा कुछ सूझा और मैंने हॉटल के एक कोने में जाकर धून करनी शुरू कर दी। बस! प्रभु के भरोसे जो होगा, अच्छा ही होगा। फिर रात को बारह बजे नए साल में एन्टर हुआ और घर लौट कर मैंने ऐसे ही ये बात मम्मी से करी। मम्मी ने ये बात दीदी को करी और दीदी ने ये बात पत्रिका में लिखी! गुरुजी ने भी कई बार ये बात सभा में करी। तब मेरे मन में ऐसा विचार आता था कि मंदिर में कई बार सेवा करी, भजन करा–उसका तो कोई जिक्र नहीं और यह गलती खा गया, तो पत्रिका और सभा में नाम आ गया! मुझे कुछ अजीब-सा लगता था। लेकिन धीरे-धीरे समझ आया कि शायद इससे गुरुजी ये सिखाना चाहते हैं कि आगे से ये गलती न दोहराऊं और हिम्मत रखूँ।

मैंने काकाजी के स्थूल रूप से दर्शन तो कभी नहीं किए, लेकिन गुरुजी और दीदी ने जो उनका परिचय कराया, वो अनकम्पॅरेबल है। टी.वी. पर 'रामायण' सीरियल आता है। उसमें एक सीन देखा था कि हनुमानजी रामजी को राजी करने के लिए अपने पूरे शरीर पर सिन्दूर लगा लेते हैं। वो सीन देखते ही मुझे ऐसा लगा कि गुरुजी ने काकाजी के लिए अपना शरीर तो ये भगवे से रंगा ही, उसके साथ-साथ उनकी राह पर भी ऐसे चले हैं कि हम सबको उनका परिचय मिल जाता है... **तो, गुरुजी! हम सब जितने भी यंगस्टर्स यहाँ हैं, वे सब आपको राजी करने के लिए चल पड़ें, सब एक होकर रहें**–ऐसा आप हमें बना दो। कई बार मन के बहकावे में आकर कुछ गलत काम भी हो जाते हैं, कहीं निकल जाते हैं; पर हमें ऐसी बुद्धि दो कि हम सब की क्रियाएँ ऐसी हों, जिससे कि आप और दीदी राजी हों। गुरुजी, मैं हमेशा ऐसा सोचता था कि मेरे अंदर कुछ ऐसे चेइन्जिस हों कि मैं अभिषेक भइया जैसा बन जाऊँ। मैंने कई बार नोट करा है कि आप उनको डांट भी देते हो या कई बार सभा में उनकी तारीफ करते हो, पर उनकी आपके प्रति जो सेवा-भावना है, वो बिल्कुल वैसी की वैसी ही रहती है... गुरुजी, ऐसा कुछ हमारे अंदर भी हो जाए कि हमें कभी ऐसा न लगे कि गुरुजी आज हमसे ठीक से बात नहीं कर रहे थे या गुरुजी ने आज हमारी तरफ देखा नहीं। ये चीज मन में कभी न आए। जैसे दीदी कहती हैं कि हमारी 'करन्सी' सेवा और भक्ति की है। तो, हम सब यंगस्टर्स उसी सेवा और भक्ति से आपको व दीदी को पा लें–बस आज के दिन यही आपसे प्रार्थना।

पू. पुरी अंकल (दिल्ली)

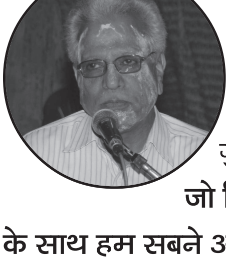

अगर होली के बारे में सोचा जाए, तो यही एक बात सामने आएगी कि गुलाल, रंग, पानी और अब तो होली रंगों की नहीं, कीचड़ का त्यौहार बनता जा रहा है। पर, गुरुजी ने होली की एक नई व साफ सुथरी-डीसन्ट रीत अपने मंदिर में चलाई। **चंदन जो कि खुद में शांति व ठंडक का रूप और गुरुजी के हाथ का स्पर्श लिए हुए चंदन के साथ हम सबने आज होली का त्यौहार मनाया।** जब ये होली का त्यौहार शुरू हुआ होगा, तब शायद होलिका दहन के बाद खुशी मनाने के लिए सिम्बॉलिक रूप में ये त्यौहार शुरु हुआ होगा। लेकिन, **गुरुजी की निश्रा में मनाने के बाद इसका ये भी रूप हो सकता है कि ये होली के रंग हम सब लोगों के**

जीवन में बिखरे रहें और... एक-दूसरे के लिए कोई ऐसा मलाल या मन का ऐसा कोई उद्वेग न रह कर, चंदन की तरह मन शांत हो जाए।

...मार्च की शुरुआत से गुरुजी जब भी बात करते हैं, तो उसका यही सार होता है कि **हम अपने मन के उद्वेग छोड़कर, शांत मन से प्रभु के कार्य में जुड़ें।** संसारिक चीजों के लिए काकाजी और गुरुजी ने हम सबको निश्चिंत कर ही दिया है। अब बचता क्या है? अपने मन की-अपने दिमाग़ की ठंडक। अब उसकी ग्रेविटी कितनी है, कितनी परसेन्टेज में है, ये अपने आप पर डिपेन्ड करता है और उसको दूर करने के लिए गुरुजी की तरफ से भी कोई कमी नहीं है। बस, हमारी ग्रास्पिंग कितनी है–किस लेवल की है? मन के बवंडर तो आते हैं और आते रहेंगे। अगर मन के सारे बवंडर शांत हो जाएँ, तो मैं तो ये समझता हूँ कि गुरुजी के पास पहुँचने वालों की कमी हो जाएगी। डॉक्टर के पास तभी तो लोग जाते हैं, जब उनको कोई न कोई बीमारी होती है। मैं नहीं समझता हूँ कि अच्छा-भला कोई आदमी डॉक्टर के पास गया हो कि मैं आपको सिर्फ नमस्ते करने आया हूँ, वर्ना मैं ठीक-ठाक हूँ। और... **गुरुजी तो हमारे मन और बुद्धि के डॉक्टर हैं।** पहले हम अपनी तरफ से खूब बुद्धि लगाकर उस प्रॉब्लम को सॉल्व करने की कोशिश करते हैं, लेकिन जब हम अपनी उस प्रॉब्लम-समस्या से हार जाते हैं या वह समझ से परे हो जाती है, तब हम अपने गुरु के पास, अपने एड्वाइज़र के पास, अपने वेलविशर के पास जाते हैं।

हम कितने भाग्यशाली हैं कि **हमें ऐसे गुरु मिले हैं जो ट्वेन्टी फोर अवर्स–इर्‌रिस्पॅक्टिव ऑफ डॅ ऑर नाईट, ही इज़ एवॅलेबल। छोटा हो या बड़ा, किसी को कोई मना है ही नहीं।** गुरुजी ने सेवकों को भी ये बात कई बार कही है कि किसी का फोन आए और मैं अगर आराम में भी हूँ, तो मुझे जगाकर पूरी बात बताई जाए; क्योंकि, अगर किसी ने फोन किया है, तो मतलब–किसी को मेरी जरूरत है, तभी तो उसने फोन किया। वर्ना तो क्या जरूरत है? तो, कितने भाग्यशाली हैं हम लोग कि एक भरोसे का केन्द्रबिन्दु हमारे सामने है।

मैं एक दु:खद प्रसंग में किसी जगह गया था। शायद कश्मीरीज़ में कोई ऐसा सिस्टम होगा कि परिवार के जो सदस्य हैं, वो डेडबॉडी को हाथ नहीं लगाते। जब उनके वहाँ गए तो–
मैंने उनसे कहा– *भई, सब चीजें तैयार हैं, तो कोई आने वाला है?*
बोले– *नहीं, कोई आने वाला नहीं है।*
मैंने कहा– *तो फिर आप वेईट किस बात का करते हैं?*
वहाँ खड़े किसी ने बताया– *इनके यहाँ शायद ऐसा नियम है कि परिवार के जो लोग हैं, वो ये कहते हैं कि ये चला गया, तो बस–अब हमारा रिश्ता खत्म! ये डेडबॉडी को हाथ भी नहीं लगाएंगे।*

कल तक तो इन्हीं के परिवार का सदस्य था। पर, अब इनके लिए इसकी कोई मान्यता नहीं; तो ॲज़ ए ह्यूमन बिईंग हमने वह सब कर दिया!

जब से मैं गुरुजी की निश्रा में आया, इस प्रसंग को मैं बहुत पॉज़िटिव-वे में सोचता हूँ कि महाराज न करें ऐसा समय आए; पर **हम लोगों को संभालने वाले कितने हाथ गुरुजी ने मौजूद किए हैं?** अच्छा प्रसंग हो या बुरा प्रसंग हो। मन में एक सॅटिस्फेक्शन, तसल्ली और निश्चिंतता है कि हमें संभालने वाले हैं।

जिसको कोई संभालने वाला न हो, उसके दिल से कोई पूछ कर देखे। हमारे एक चाचा को कोई इश्यु नहीं था। वो मुझे यही कहा करते थे कि बेटा हमारी मिट्टी को अच्छे से संभालना, हमारी मिट्टी को हरिद्वार पहुँचा के आना... ये भी मन में एक भय... एक आशंका बनी हुई है। हम उस आशंका से तो बहुत दूर... वो आशंका तो किसी को पॉईन्ट वन परसेन्ट भी नहीं। तो, गुरुजी का बहुत-बहुत आभार और आज के दिन गुरुजी से ऐसी प्रार्थना कि **आपने ये चंदन का लेप करवा के हमारे मन को शांत करने का एक प्रयास किया है, पर ये तो हमें अपने अंतर से सोचना है कि हम कितने शांत हैं?** आपने तो अपनी तरफ से भरपूर कोशिश की है। आज से नहीं, सालों से करते हैं। अगर किसी जगह पर हम आपके प्रयास के मुताबिक चलने में चूकते हैं, तो उसको हमारी खता समझ कर माफ करना।

कल गुरुजी ने बताया था कि प्रेमानंदस्वामी मुसलमान थे। उन्होंने एक भजन बनाया था, उसमें एक शब्द 'गरीबनवाज़' आया था... **'गरीबनवाज़' का मीनिंग है– गरीब को संभालने वाला, उसे नवाज़ने वाला, उसका मान-सम्मान करने वाला। तो, वैसे तो हमारे 'गरीबनवाज़' ये गुरुजी ही हैं।** हर वक्ता को जो खुद इक्सपीरियन्स होते हैं, वह वो बोलता है। हर आदमी के जीवन में जो गुरुजी का स्थान है, वो उसके एक्शन से किसी न किसी रूप में रिफ्लॅक्ट होता है। **मुझे यहाँ किसी की बातों में आज तक गुरुजी के लिए कोई नेगेटिव बात सुनाई नहीं दी कि गुरुजी ने मेरे लिए ऐसा कहा या मेरे लिए ऐसा नहीं किया था।**

...नट शैल में मेरा यही कहना है कि **गुरुजी हम लोगों को अपनी लिमिट से बाहर निकल कर भी संभालते हैं।** लेकिन बात तो वही है कि **सॅटिसफॅक्शन का लेवल जो है, वो तो हमें ही क्रियेट करना है।** जब **हम मन में ये सोच लें कि मुझे सॅटिसफाईड होना ही नहीं है, धेन धॅयर इज़ नो पॉईन्ट–नो लिमिट।** तो आज रंगों के इस त्यौहार पर, देने वाले ने हमें हक़ दे दिया है कि मेरे पास जो है, वो ले लो। **अगर हम लेने के लिए तैयार नहीं हैं, तो देने वाले का क्या कसूर?** वो क्या करें, हमें कैसे दें? लेने वाले के पास अपने हाथ–अपनी झोली तो फैलानी ही पड़ेगी न? मतलब कि हमारे मन की जो स्लेट है, वो साफ तो हो। तभी तो उस पर कुछ लिखेंगे... मुझे भी अपनी स्लेट साफ करनी पड़ेगी, अपनी झोली फैलानी पड़ेगी, तभी इसमें कुछ आएगा। **देने वाला तो खूब राजी भी है और तैयार भी है।** अगर **नाराजगी भी है, फिर भी देने को राजी है। और... नाराजगी भी हमारे किसी न किसी एक्शन से हो सकती है न? अगर हम गुरुजी के मुताबिक नहीं चलते, तो गुरुजी के मन में नाराजगी नहीं, दर्द होगा कि इस आदमी के पीछे मैंने इतना समय बिगाड़ा और ये क्या करता है? इसने क्या किया?**

तो, गुरुजी आपने तो काकाजी की रीत पकड़ी है। इसके अलावा आपकी और कोई रीत है ही नहीं। **काकाजी** का जो भी प्रवचन सुनते हैं, उसमें यही आता है कि **'आज तक का सब माफ!'** उन्होंने हज़ारों बार ये बात कही होगी। वर्ना, कभी तो मन में ये बात आती होगी कि मैं कितनी बार माफ करूँ? कोई लिमिट होती है। एक मजिस्ट्रेट के पास भी जाएँ, तो वह पूछता है कि पिछली बार इसके कितने जुर्माने हुए? फिर अकसर वकील कहता है कि साहब, मेरे क्लायन्ट का कोई क्रीमीनल बॅकग्राउंड नहीं है। मतलब इसने पहली बार गलती की है, इस पर लीनियन्सी बरती जाए। लेकिन हमारे प्रभु तो ऐसे हैं कि वो जो पुराने क्राइम हैं, उसको गिनते नहीं। हर बार यही कि आज तक का सब माफ!

और... गुरुजी की सामर्थ्य के बारे में दो दिन पहले श्यामलालजी की बात सुनी, प्रभाकरभाई की बात सुनी, पुनीतजी ने भी खूब मन की बातें करी। हमारे हिन्दू माइथोलॉजी में ये बात निश्चित है कि अपने गुरु का यशोगान करने से अपने पुण्य बढ़ते हैं। हाँ, हमारे गुरु तो ऐसी बात को कोई तवज्जो नहीं देते, कोई प्रेफरन्स नहीं देते। बड़े ही निर्लेपभाव से वे इन बातों को लेते हैं। गुरुजी के ऊपर ऐसे यशोगान का कोई असर नहीं होता। मैंने पिछले पन्द्रह-सोलह साल में देखा कि गुरुजी को इन चीजों का असर होता नहीं और अगर कहीं कोई लिमिट क्रॉस होती है, तो उसको चेक भी करते हैं। नो, धीस इज़ नॉट करॅक्ट।

तो, हम लोग बहुत भाग्यशाली हैं कि हम लोगों को ऐसे **'गरीबनवाज़'** मिले। मैंने जब ये शब्द कल सुना, तो मेरी स्लेट के ऊपर ये फिट हो गया कि हाँ, एप्रोप्रीएट 'वर्ड' अब मिला है। अमीरों को संभालने वाले तो बहुत होते हैं – उनका पैसा ही इस हेतु बहुत होता है; लेकिन फिर भी उनको किसी न किसी चीज की कमी रहती है। पैसे से सुख नहीं मिलता, क्योंकि भूख तो रोटी खाने से मिटेगी; सोना खाने से तो मिटने वाली नहीं है। लेकिन, गरीब को कोई मान-सम्मान देने वाला हो, उसको संभालने वाला हो, तो उसका स्थान बहुत ऊपर है।

...दो दिन पहले फॉर्टी एइट आवर्स का एक अनुष्ठान किया। उसमें सारा माहौल ऐसे चार्ज था कि ऐसा कहीं नज़र नहीं आया कि ये एक फॉर्मालिटी हो रही है। अपने लिए जब हम प्रार्थना करने जाते हैं, तो मन के कोने में कहीं न कहीं एक बात जरूर आती है कि मेरा इसमें स्वार्थ है। हाँ, **इसमें भी हमारा एक स्वार्थ था कि हमारे गुरुजी – हमारी दीदी सालों-साल हमारे साथ रहें और निरामय रहें।** लेकिन ये स्वार्थ महाराज और काकाजी को मंजूर होगा। गुरुजी ने भी समाधि स्थान पर चंदोवा लगवाया कि हरिभक्त जब प्रदक्षिणा करेंगे, तो उनको गर्मी न लगे। लेकिन, उन दो दिनों में शाम के पाँच बजते ही एकदम शांत और ठंडी हवा आती। **स्वामिजी कहा करते हैं कि गुरुजी बहुत भजनिक हैं।** गुरुजी ने भी कहा कि मेरा भी मन करा करता कि थोड़ी-थोड़ी देर के बाद मैं समाधि स्थान पर जाकर हरिभक्तों के बीच बैठूं। दरअसल, अपने बच्चों के साथ जाकर बैठना और फिर भजन करवाना, वो हमारे मन की बात थी। क्योंकि **जब भी वहाँ गुरुजी या दीदी आते, तो वातावरण एकदम चार्ज हो जाता।** प्रदक्षिणा करने वालों की स्पीड कई गुनी हो जाती। जो आदमी ग्यारह प्रदक्षिणा करने के बाद घड़ी देखे या ये कहे कि हमारे घुटने चलते नहीं हैं, वो भी घंटों-घंटों प्रदक्षिणा करते! तो ये आशीर्वाद और इस स्थान का प्रताप है। मैं तो ये कहूँगा कि एक ऐसा इनवर्टर – जो बॅटरी को चार्ज करता है, वो हमारे पास है। **जब भी हमारी बॅटरी डाउन होने लगे, तब हमें वो चंदोवा, वो दरियाँ, वो लाईटें, वो ऊपर से गिरते पत्ते – मानो फूलों की बरसात जो हो रही थी; वो 48 घंटे की स्मृतियाँ याद कर लें।**

गुरुजी ने भी इन दो दिनों की भावना देखने के बाद हर साल ऐसा आयोजन करने की बात करी। गुरुजी कहा करते हैं कि मई में धुन-भजन होता है, वो हम लोगों के लिए **'रिफ्रेशर्स कोर्स'** है। मैं तो मानता हूँ कि 48 घंटे का ये आयोजन भी किसी 'रिफ्रेशर्स कोर्स' से कम नहीं होने वाला। आज भी नींद में कई दफा ये महसूस होता है कि हम गुरुजी के पीछे – दीदी के पीछे चलते हुए प्रदक्षिणा कर रहे हैं। तो ये एर्पोच्युनिटी गुरुजी ने हम लोगों को दी है। गुरुजी आपका बहुत-बहुत धन्यवाद! हमारी तो आपसे एक्सपेटेशन्स बहुत हैं,

लेकिन आपकी भी शायद हमसे कुछ न कुछ तो जरूर होगीं। तो, हम आपकी एक्सपेटेशन्स के मुताबिक चलें-चल पाएं, ऐसी आपसे आशीर्वाद की याचना।

प.पू. गुरुजी

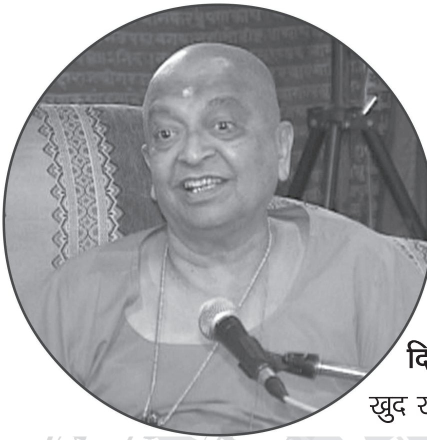

...आज के दिन प्रह्लाद को जलाने के लिए होलिका को भेजा गया था और उसकी गोद में प्रहलाद को बिठा दिया था, पर प्रहलाद की रक्षा हुई। अगर **हम प्रहलाद जैसे भगत होंगे, तो कोई ताकत ऐसी नहीं है, जो हमें खा जाए।** बाकी आग के अंदर कोई बैठ जाए, तो क्या वो बचेगा या जिंदा निकलेगा? सोचें तो, **भगवान ने होलिका का 'स्वभाव' ही चलने नहीं दिया!** आग का स्वभाव है जला देना-खाक कर देना। 'होलिका' खुद खाक हो गई, लेकिन प्रहलाद वैसा का वैसा ही रहा!

ये बातें हम सुनते हैं, लेकिन क्या हमें ऐसा भरोसा है कि हम अगर प्रहलाद की तरह सच्चे दिल से भक्ति करते रहेंगे, तो प्रभु किसी का चलने नहीं देंगे। इसलिए मैं हमेशा कहता हूँ कि **कोई भी बात की चिंता आए, हमें उसमें डूब कर खिंचे नहीं चले जाना है; हमें चिंतन में चले जाना है।** जगत में किसी को कोई प्रॉब्लम आएगी, तो चिंता में पड़ जाएँगे। हाय राम! क्या होगा? कैसे होगा? होगा कि नहीं होगा? '**चिंता**', भगत को भी आएगी, लेकिन वो उसे छोड़कर प्रभु का 'चिंतन' करने लग जाएगा। मैंने कई, कितने प्रसंगों में देखा है कि कहीं न कहीं से प्रभु उपायभूत होकर रक्षा कर लेते हैं; क्योंकि **प्रभु का 'स्वभाव'** है–भक्त की रक्षा करना। इन शब्दों पर विचार करना–**भगवान का 'स्वभाव' है–भक्त की रक्षा करना।** क्या हम अपने स्वभाव छोड़ सकते हैं? हम कभी कहते हैं न कि स्वभाव बहुत परेशान कर जाता है। स्वभाव नहीं छूटते। इसलिए यहाँ ये '**स्वभाव**' शब्द यूज़ करा भी।

कुछ भी होगा, भगत कैसी भी गड़बड़ कर देगा, मानेगा नहीं, लॉयल्टी भी खो देगा; लेकिन वो सब नज़रअंदाज करके–जिसको कहते हैं न कि कन्नाईव करके, गुजराती में कहते हैं न कि 'आँख आड़ा कान करीने'–भगवान भगत की रक्षा करेंगे ही करेंगे।

होली का त्यौहार मनाने के पीछे हमेशा यही भावना रहनी चाहिए कि कुछ भी होगा, हमारी रक्षा होगी। इसका मतलब ये नहीं कि रक्षा होगी ही, सो हमेशा आउट ऑफ धी वे जाकर ही जिया करो। समझ रखना, यदि जानबूझ कर ऐसे करते रहेंगे; तो मार भी ऐसी पड़ती रहेगी। और तब... न मरेंगे, न जी पाएंगे–यदि इन्टेन्शनली ऐसे करते रहेंगे। आज होलिका के दिन ये एक बात को लेकर जाएँ और जैसे ये राकेशभाई ने बताया कि हमारी हठ, मान, ईर्ष्या का स्वाहा करना है–इन दोनों बातों को पकड़े रखें, उसे सच्ची होली मनाई बोली जाए...

(ध्वनिमुद्रण पर आधारित)

शेष अगले अंक में...

आओ! बृहद् गुणातीत समाज के शिरछत्र को प्रार्थना करें...

जैसे कि आगे बताया ही है कि हार्ट की तकलीफ होने के कारण **प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी** अबकी बार 'योगी परिवार आनंदोत्सव'–प.पू. गुरुजी के 72वें प्राकट्योत्सव पर दर्शन, सेवा, आशीर्वाद का लाभ देने स्थूलरूप से नहीं आ पाए थे।

एन्ज्योग्राफी के पश्चात् 12 अप्रैल'09 को मुंबई के 'लीलावती अस्पताल' में प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी की बायपास सर्जरी करने का निर्णय लिया गया। जैसे ही खबर मिली कि तुरंत ही प.पू. गुरुजी ने बैसाखी निमित्त पंजाब जाने का अपना प्रोग्राम रद्द करके मुंबई जाने की एयर टिकिट्स मंगा लीं। यूँ, प.पू. गुरुजी एवं प.पू. दीदी कुछ मुक्तों के साथ 10 अप्रैल की रात तक मुंबई पहुँच गए। अगले दिन 11 अप्रैल की सुबह ही प.पू. गुरुजी पवई मंदिर के दर्शन करने चले गए थे और... इस ओर प.पू. ज्योति बहन, प.पू. प्रेम बहन, प.पू. सुमन बहन, प.पू. आनंदी दीदी, पू. डॉ. नीलम बहन एवं अन्य बहनें प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी के दर्शन करने 'लीलावती अस्पताल' गईं। दर्शन करने के बाद प.पू. दीदी पवई मंदिर आ गईं, जहाँ प.पू. हरिभाई साहेब, प.पू. गुरुजी एवं प.पू. भरतभाई की निश्रा में एक घरेलू सभा का आयोजन किया गया था। सभी ने प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी के अच्छे स्वास्थ्य के लिए भजन-प्रार्थना करी।

12 अप्रैल'09 की सुबह करीब दस बजे प.पू. गुरुजी 'लीलावती अस्पताल' में प.पू. स्वामिजी के दर्शन करने गए। वहाँ पर प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी, पू. निर्मलस्वामिजी, पू. कोठारीस्वामिजी एवं अन्य कई संत उपस्थित थे। मानो गुणातीत परिवार आत्मीयता के रिश्ते से 'मुंबई' में एकत्रित हो गया था।

दर्शन करने के बाद प.पू. गुरुजी एवं प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी प.भ. ओ.पी. अग्रवालजी के घर आए और वहाँ दोपहर को ठाकुरजी का थाल किया। दोपहर करीब 1:30 बजे से लेकर सायं करीब 7:30 बजे तक प.पू. स्वामिजी का ऑप्रेशन चला। इसी दौरान दिल्ली में भी, प.पू. गुरुजी की आज्ञा से मुक्तों ने भजन–प्रार्थना जारी रखी थी। प.पू. स्वामिजी का ऑप्रेशन बिल्कुल ठीक हो गया, यह खबर सुनने के बाद प.पू. गुरुजी रात की लेट फ्लाईट से दिल्ली वापिस आ गए।

26 अप्रैल को अस्पताल से डिस्चार्ज मिलने के बाद अब प.पू. स्वामिजी 'लोनावाला' आराम करने के लिए गए हुए हैं। सो, हम सब निरंतर भजन ही किया करें, ताकि हमें जाग्रत करने के लिए इन गुणातीत पुरुषों को ऐसे शस्त्र कभी न उठाने पड़ें और जल्द से जल्द प.पू. स्वामिजी स्वास्थ्यलाभ प्राप्त करें; जिससे पहले की भाँति हम उनके दर्शन, सेवा और समागम का लाभ ले सकें।

'योगी परिवार का अद्‌भुत सर्जन..... प.पू. काकाजी की सौरभ!'

2012 की मंगलमयी साल यानि – **'योगी परिवार अमृत आनंदोत्सव'** मनाने का वर्ष! 15 दिसंबर 1953 को 17 वर्ष की युवा आयु में, **प.पू. गुरुजी** का गुरुहरि योगीजी महाराज व प.पू. काकाजी से प्रथम मिलन हुआ... सत्संग की गोद में अर्थात् **ताड़देव-मुंबई** से सर्जित **'योगी परिवार'** में उनका पालन-पोषण हुआ। तब से उनका जीवन मानो 'योगी परिवार' को समर्पित हो गया और वे अब, जीवन के **75 वर्ष** पूर्ण करेंगे! धन्य भाग्य! धन्य घड़ी! प्रभु को सांगोपांग अखंड धारी हुई विभूति प.पू. काकाजी द्वारा अपनाए और आग्रहपूर्वक प्रवर्तित **'एकता ही एकांतिकभाव'** के सिद्धांत से ब्रह्मकिलोल करने का एक अनमोल मौका हमारे जीवन में आ रहा है। हर मुक्त के अंतर की एक ही आवाज है –

हे भजनिक सुहृद् गुणातीत, गुरुजी जियो सौ-सौ शरद्...

चाहे छोटा हो या बड़ा, नया हो या पुराना – सभी को यह एहसास व अनुभव तो है ही कि प.पू. गुरुजी ने किसी बात की - *'अरे! लोग मेरे बारे में क्या कहेंगे-क्या सोचेंगे'*, यूँ लोक की परवाह किए बिना संपर्क में आए हर एक को प्रगट प्रभु की पहचान कराने का-संबंध देने का- कठोर परिश्रम अविरत किया है। तभी तो, **प.पू. पप्पाजी** के मुँह से भी आशीर्वाद फिसले – ***'मुकुंदजीवन बहु शूरवीर'!***

गुणातीत परिवार के संतों, युवकों, बहनों और गृहस्थों – सभी के साथ उनकी कक्षा पर आकर वे एक स्वजन बन कर रसबस हुए हैं और हम सभी को इसी कौटुंबिक भावना से आपस में जोड़ने के लिए सतत प्रयत्नशील हैं। आधी रात को भी सभी के सुख-दुःख में-शुभ अवसर या मुश्किल में साथ खड़े रह कर हिम्मत दी है। आध्यात्मिक व व्यावहारिक समस्याओं का समाधान तो दिया ही है, साथ ही कइयों के मन के बवंडरों को अपने मोहक दर्शन, प्रसाद, कथावार्ता और भजन द्वारा शांत किया है। और तो और, उनके जीवन की दिशा ही बदल दी! स्वयं भजन कर-करके एवं हम से भी करवा कर कई समस्याओं का हल निकालते हुए तो हम सब ने उन्हें देखा भी है। तभी तो **प्रगट ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामिजी** दोहराते रहते हैं– ***'गुरुजी खूब भजनिक हैं।'***

और... अब तो प.पू. काकाजी व प.पू. पप्पाजी की जीवंत स्मृतिरूप **'गुणातीत समाज'** को चिरंजीव करने, उसकी अखंडता एवं एकता बनाए रखने के लिए ही इसी तरीके से लगे हुए वे दिखाई पड़ते हैं! यूँ, प.पू. गुरुजी ने जो किया है या कर रहे हैं, उसका ऋण तो हम कभी नहीं चुका पाएँगे। पर अपनी 'गुरुभक्ति' अदा करने का मौका हम न चूकें... अब समय आया है कि उनके साथ के अपने **ऐसे अनुभवों को जो हमें भीतर तक छू गए हों**, उन्हें सिर्फ निजी स्मृतियों में ही बंद न रखें; बल्कि लेखनी द्वारा अन्यों के साथ बाँटें। फलस्वरूप प.पू. काकाजी एवं प.पू. गुरुजी की महिमा हमारे भीतर तो दृढ़ होगी ही, साथ ही हमारे किसी अनुभव से अन्य मुक्त व अन्य मुक्तों के अनुभवों से प्रेरणा लेते हुए हम सभी प्रगति कर पाएंगे।

दूसरी ओर – हम सभी जानते हैं कि प.पू. गुरुजी अपने आपको प.पू. काकाजी का अदना सेवक ही समझते हैं। सो, पुराने जोगी प.पू. काकाजी से भी जुड़ी हुई स्मृतियाँ-प्रसंग लिख कर यदि भेजेंगे, तो हमें और अधिक आनंद होगा।

अतः **सभी मुक्तों से प्रार्थना है कि प.पू. गुरुजी के 75 वें प्राकट्योत्सव निमित्त अपने अनुभव हिन्दी/अंग्रेजी में लिख कर पृष्ठ 49 पर* दिए पते पर भेजते रहें**, जिससे कि 'भगवत् कृपा' द्वारा **'योगी परिवार का अद्‌भुत सर्जन..... प.पू. काकाजी की सौरभ!'** शीर्षक के अंतर्गत प.पू. काकाजी व प.पू. गुरुजी का सम्यक् परिचय देने की भक्ति हम से अदा हो सके। आप सभी के सहयोग से ही यह संभव हो पाएगा... इसी प्रार्थना के साथ –

सेवक **प्रभाकर** के हार्दिक जय स्वामिनारायण!

'યોગી પરિવારનું અદ્ભુત સર્જન... પરમ પૂજ્ય કાકાશ્રીની સૌરભ!'

2012 નું મંગળકારી વર્ષ એટલે – **'યોગી પરિવાર અમૃત આનંદોત્સવ'**ની ઊજવણીનું વર્ષ; જ્યારે સત્સંગમાં અર્થાત્ **તાડદેવ – મુંબઈના 'યોગી પરિવાર'**માં ઊછરેલા, પ.પૂ. ગુરુજી જીવનના ૭૫ વર્ષ પૂરા કરશે! ધન્ય ભાગ્ય! ધન્ય ઘડી! પ્રભુને સાંગોપાંગ અખંડ રાખેલી વિભૂતિ પ.પૂ. કાકાશ્રીએ અપનાવેલ અને આગ્રહપૂર્વક પ્રવર્તાવેલ **'એકતા એ જ એકાંતિકપણું'**ના સિદ્ધાંતે બ્રહ્મકિલ્લોલ કરવાનો એક લ્હાવો અમ સહુના જીવનમાં આવી રહ્યો છે. દરેક મુક્તના અંતરે એક જ અવાજ છે –

હે ભજનિક સુહદ્ ગુણાતીત, ગુરૂજી જીવો સો-સો શરદ્.

નાનાં હોય કે મોટાં, નવાં હોય કે જૂનાં – દરેકને એ અનુભવ તો છે જ કે પ.પૂ. ગુરૂજીએ કોઈ વાતની – અરે! પોતાની ય કે લોક મારે માટે શું ધારશે – શું કહેશે એની પરવાહ કર્યા વગર, સંપર્કમાં આવનાર દરેકને પ્રગટ પ્રભુની ઓળખાણ કરાવવા – એમનો સંબંધ આપવા ખૂબ જ ભીડો વેઠ્યો છે. એટલે જ તો **પ.પૂ. પપ્પાજી**ના મુખથી આશીર્વાદ સરી પડયા – ***'મુકુંદજીવન બહુ શૂરવીર!'***

ગુણાતીત પરિવારના સંતો, યુવકો, બ્હેનો અને ગૃહસ્થો – બધાં સાથે એમની કક્ષાએ આવી સહુના સ્વજન થઈ એઓ રસબસ થયા છે અને આપણને સૌને ય આ જ કુટુંબભાવથી અરસપરસ જોડવા સતત્ પ્રયત્નશીલ છે. અડધી રાત્રે પણ બધાંના સુખ-દુ:ખમાં – શુભ અવસરે કે મુશ્કેલીમાં સાથે ઊભા રહી હિંમત આપી છે. આધ્યાત્મિક અને વ્યાવહારિક સમસ્યાઓનો ઉકેલ તો આપ્યો જ છે, સાથોસાથ ઘણાંના મનના વંટોળને પોતાના મોહક દર્શન, પ્રસાદ, કથાવાર્તા અને ભજનથી શાંત કર્યા છે... એટલું જ નહીં, એમના જીવનની દિશા જ બદલી નાખી! પોતે ભજન કરી-કરીને અને આપણી પાસે ય કરાવીને ઘણી મુશ્કેલીઓનું સમાધાન કાઢતા આપણે સહુએ એમને જોયા પણ છે. એટલે જ **પ્રગટ બ્રહ્મસ્વરૂપ હરિપ્રસાદસ્વામિજી** ઘણી વાર કહેતા હોય છે – ***'ગુરૂજી ખૂબ ભજનિક છે.'***

અને... હવે તો પ.પૂ. કાકાશ્રી અને પ.પૂ. પપ્પાજીની જીવંત સ્મૃતિરૂપ **'ગુણાતીત સમાજ'**ને ચિરંજીવ કરવા, એની અખંડતા અને એકતા જાળવી રખાવવા એ રીતે જ એઓ મંડયા દેખાય છે. આમ, પ.પૂ. ગુરૂજીએ જે કર્યું છે – કરી રહ્યા છે, એનું ઋણ તો આપણે કદીય ચુકવી શકીશું નહીં. પણ, આપણે 'ગુરૂભક્તિ' અદા કરવાનો આ લ્હાવો ચૂકીએ નહીં...

તો હવે – એમની સાથેના આપના **એવા અનુભવો - પ્રસંગો કે જે અંતરતમ સુધી સ્પર્શી ગયા હોય**, એને કેવળ પોતાની સ્મૃતિઓમાં અકબંધ ન રાખતાં, લેખીની દ્વારા અન્યો સાથે વ્હેંચીએ. ફળસ્વરૂપે પ.પૂ. કાકાજી અને પ.પૂ. ગુરુજીનો મહિમા આપણાં અંતરમાં તો દૃઢ થશે જ, સાથોસાથ આપણાં એવા કોક અનુભવથી અન્ય મુક્તો અને અન્યના અનુભવે પ્રેરણા લઈ આપણે- એમ સહુ પ્રગતિ કરીશું.

આપણે સહુ જાણીએ છીએ કે પ.પૂ. ગુરૂજી પોતાને પ.પૂ. કાકાશ્રીના એક અદના સેવકમાત્ર માને છે. તો, જૂના જોગીઓ જો પ.પૂ. કાકાશ્રી સાથેની પણ સ્મૃતિઓ – પ્રસંગો લખીને મોકલશો, એનો અમને ઘણો આનંદ થશે.

તો, **સહુ મુક્તોને પ્રાર્થના છે કે પ.પૂ. ગુરૂજીના ૭૫મા પ્રાકટ્યોત્સવ નિમિત્તે આવા અનુભવ - પ્રસંગો ભલે ગુજરાતીમાં લખીને નીચેના સરનામે* મોકલતા રહેશો**, જેથી 'ભગવત્ કૃપા' દ્વારા **'યોગી પરિવારનું અદ્ભુત સર્જન..... પ.પૂ. કાકાશ્રીની સૌરભ!'** સ્તંભ હેઠળ પ.પૂ. કાકાશ્રી અને પ.પૂ. ગુરૂજીનો સમ્યક્ પરિચય આપવાની અમે ભક્તિ અદા કરી શકીએ. આપ સહુના સહકારથી આ શક્ય થઈ શકશે... એ જ પ્રાર્થના સાથે –

સેવક **પ્રભાકર**ના હાર્દિક જય સ્વામિનારાયણ!

---

*प.भ. प्रभाकर राव / प.पू. आनंदी दीदी C/o 'भगवत् कृपा'
श्री अक्षरपुरुषोत्तम स्वामिनारायण मंदिर, 'ताड़देव', काकाजी लेन, स्वामिनारायण मार्ग, अशोकविहार - III, दिल्ली – 110 052
❋ फोन – 4709 1281, 2730 1327 ❋ फॅक्स: 4709 1280 ❋ ई मेईल – taaddev@ydsd.org, aksharjyoti@ydsd.org

'चातुर्मास के विशिष्ट नियम'

(3 जुलाई 2009, शुक्रवार से 29 अक्तूबर 2009, गुरुवार तक)

[भगवान और संत की प्रसन्नता हेतु इस चातुर्मास दौरान सभी सत्संगी प.पू. गुरुजी की आज्ञा के मुताबिक निम्नलिखित नियमों का पालन करें।]

1. सावन के महीने यानि – 22 जुलाई से 20 अगस्त तक एक बारी भोजन लें।
2. 3 जुलाई — नियम की एकादशी
   14 अगस्त — जन्माष्टमी
   31 अगस्त — जलझीलनी एकादशी
   29 अक्तूबर — कार्तिक शुक्ला एकादशी
   इन चारों दिन व्रत रखें।
3. चातुर्मास दौरान मंदिर में यथाशक्ति महापूजा करवाएं।
4. रोज सुबह या सायं **'स्वामिनारायण महामंत्र'** का अजपाजप करते हुए चालीस मिनिट तेज़ वॉकिंग करें।
5. सप्ताह में समय निकाल कर एक बार गुणातीत कुनबे के किसी भी मुक्त के घर उन्हें मिलने-करने, धुन-भजन करने, खबर देखने, कोई कार्य में हाथ बटाँने जाएँ।

व्रतोत्सवसूची

(1)	दि.	20.5.2009,	बुधवार	—	एकादशी, व्रत
(2)	दि.	21.5.2009,	गुरुवार	—	ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज की प्राकट्य तिथि, प.पू. गुरुजी की भागवती दीक्षा तिथि
(3)	दि.	28.5.2009,	गुरुवार	—	ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी महाराज का स्वधामगमन दिन
(4)	दि.	1.6.2009,	सोमवार	—	ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी महाराज का दृष्टा दिन गुणातीत ज्योत स्थापना दिन
(5)	दि.	2.6.2009,	मंगलवार	—	भगवान स्वामिनारायण की स्वधामगमन तिथि
(6)	दि.	3.6.2009,	बुधवार	—	भीम एकादशी, व्रत
(7)	दि.	7.6.2009,	रविवार	—	वटसावित्री
(8)	दि.	12.6.2009,	शुक्रवार	—	**अनुष्ठान शिविर की पूर्णाहुति एवं ब्रह्मस्वरूप प.पू. काकाजी महाराज का प्राकट्य दिन** *(सायं 6:30 से 9:15 मनाएंगे।)*
(9)	दि.	19.6.2009,	शुक्रवार	—	एकादशी, व्रत
(10)	दि.	24.6.2009,	बुधवार	—	रथयात्रा
(11)	दि.	3.7.2009,	सोमवार	—	देवशयनी एकादशी, व्रत – चातुर्मास प्रारंभ
(12)	दि.	7.7.2009,	मंगलवार	—	**गुरुपूर्णिमा**

(सुबह 8:00 से 9:30 ताड़देव मंदिर में मनाएँगे। जो इस समय न आ पाएँ, वे दिन में किसी भी समय आ करके 'गुरुपूजन' कर सकेंगे।)

का स्नेहमिलन!

R.N.I. 28971/ 77
Air Mail
'**Bhagwatkripa**' Bimonthly Magazine – Despatched Bimonthly
If undelivered please return to :— *Printer, Publisher, Editor :-*
SHRI PRABHAKER RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY- DELHI
'Taad-dev', Kãkãji Lane, Swãminãrãyan Mãrg, Ashok Vihãr-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 2730 1327
Printed at : **D.K. FINE ART PRESS (P) LTD.,** A 6, Community Centre, Nimri Colony, DELHI-110 052